



# नौ रस में रस हास्य

( राजस्थानी हास्य व्यंग्य कवितावा को मोटो सग्रे )



## रस-महिमा

खटरस भोजन में जिर्यौ है अमरस रस खास  
वैर्यौ ही नी-रसौ में सिरै मौर है हास  
सिरै मौर है हास हँसौ सब रस में आवै  
शात बीर अर करुण रोद्र सै हसणू चावै  
दूजो कोई भी रस नी ब्यापै नी रस में  
सदा सुहाणू भोजन अमरस ज्यू खटरस में

## मेरी दो बात—

दोस्तो और दोस्तियो !

आज आपकी सेवा मे मेरी इबताणी की चुणीदा हास्य-व्यग्य' की कवितावा को मोटो सग्रे आपकें स्यामन रख'र मन घणूँ घणूँ आणद आरयो है। कई दिना स इच्छ या थी क इबताणी की 'मन पसद' अर जग-पसद' सभी कवितावा को सम्मेलन होज्या तो पाठका न कुछ सुभिस्तो हो। 'नौ रस मे रस हास्य' ई इच्छ या को ही लाडलो बेटो है।

हास्य व्यग्य क बारे मे मेरी जो कुछ ध्यारणावा सुरू स ही रही है, व सब आपन बिना फीस बतारयो हू साधारण सी बात सै जीण को मरम समझारयो हू। आप समझो में आपन कठे स हँसारयो हूँ और क्यूँ हँसारयो हूँ ?

साहित्य-शास्त्रकार हासी का छ भेद बताया। पण मने मोटा मोटा दो ही भेद दीखें— एक मन सै हासणू और एक मू स हासणू ! आंमे भी मन और मू दो या स साग हासी आव वा घणी चोखी, खाली मन स आवे वा चोखी और खाली मू स आवे वा भूडी। इयाही हासी का अग भी दो होव। एक हासणियू और एक जीपर हासी आवे हास्य कवि आ दो या क बीच की कडी है वो हासी की साँमगरी दूढ दूढ के हासणिया न गुदगुदाने को काम

करे । वो जी सामगरी से आपक मन मे हासी को सचै करे—वा सब सुणणिया अर पढणिया मे बखेर देवे वस वी को इतणू ही रोल है ।

जीपर हासी आवै वा कोई भी सामगरी (कारण, काज और स्थिति) हो सकै । पण काज और स्थिति स्यामने रहवै और कारण राख स मू ल्हकोयोडो, ल्हुकयो छिप्यो बट्यो रहवै क कोई वीन देग नी ले । पण व्यग्य कवि की तीखी— नुकीली आँख ज्युं ही बीपै पड़े वो खुद सरमाज्या डरज्या या धवराज्या— क्यू क कवि सारै रोला करकै वीको भुकयोडो-ल्हुकयोडो मूडो उलट कै सबकै स्योमन करदे ऐया कारण को उलटणू ही विसगति बाजै और ई विसगति मे ही हास्य है । जी हास्य व्यग्य—कवि की आख इयाँ एक्स रे को सो काम नी करक बुरारिया क गूमडा को हँसा-हँसा क ऑपरेशन नी कर सकै, वीन आपकै चसमे का नवर बदलवा लेणा चाये ।

हाँसी एक सगीर को ब्यायाम ही नहीं 'योग है' जीसँ भगवान का दरसन हुव जो हाँसे सो अमर पद पावै जो रोवै सो जमारो विरथा खोवै । क्यू क हाँसी बस मिनखा जूणी मे ही है और कोई भी जूण मे नहीं है । रो-रो कर जमारो काटणिया नै भी एक बात समझ लेणी चाये क दुख और सुख सभी परमात्मा का दियोडा है और ब सबनै कर्मा क अनुसार भोगणा ही पडैगा चाहे रो-रोकर भोगी चाहे हास-हास कर—भोगणा जरूर पड़े— तो पीछे हास-हाँस कर ही क्यू नी भोग्या जा' रोकर क्यू ?

एक बात और— बंधा तो आज की कवितावा में 'हास्य-व्यंग्य' की जितनी चर्चा हुई, उतनी स्याद ही कोई दूसर किस की हुई हो क्यूँ और और रसा में कुछ उखड़-योडा कवियों की— कुछ आलोचकों की आख में हास्य एक खटकते काटो है— यो सस्तो जस दिराणवालो है और मञ्च-उखाड है या बात दूसरी है क हाँसी बनाने भी आवे । हाँमणू तैं भी चाव पण बँ मन मारकँ हाँसँ । पण सारो दोस वा कविया और आलोचना को भी नी है ईको एक दूसरो पक्ष भी है । कुछ लोग हाँसी को अरथ खाली मू फाडणू और बिना बात ही 'हा हा ही-ही करणू बतायो । मच पँ भदा भूडा चूटकला मुणांकर ही साहित्य के इतिहास में आपको नाम जबरजस्ती धरपण की इच्छा या लेकर—साहित्य की परिभासा तक भी नी जाणणिया घुस पैठिया भी हास्य और व्यंग्य न बदनाम करण की कम कासीस नी करी बल्कि सही बात या है क ये घुस पैठिया भाँड मदारी और हास्य-व्यंग्य कवि को फरक ही मिटा दियो । मेरो निस्च मतो है क मन में ईरस्या की आग, छत्र-कपट, फरेव, धाखाधडी अर तिकडमबाजी जिया की भावना राखणिया न मन स हास सक है और न हँसा सक है । बँ तो आपके ही भीतर की आग म धधक बो कर चाहे लोग-दिखाऊ कितणू ही चौडो मूडो फाडता हा ।

एक बात ई सग्रे के बारे में भी—

साहित्य-शास्त्री काव्य में नौ रस बतावँ पण मन तो सभी रसा में हास्य-रस ही दीखँ मैं सबी नीवू रसा में कवितावा लिखी पण रस तिसपत्ती हास्य में ही हुई जीसमेरी या ध्यारणा और भी

पक्की हुई क रस चाहे जितना होवो सबमे सिरै मौर हास्य रस ही है मेरी भीतनी कवितावा दूसरा रसा मे है मगर बामे भी अग्री रस हास्य ही है- जियाँ—

सयोग सिणगार—

वीनणी बोट देण चाली,  
परदेसा स बालम आया,  
धौर प्रमालाप इत्यादि

बिछोह सिणगार—

विरहा की आग, धारी याद  
सतावै, इब तो आज्या परदेसी  
पावणा इत्यादि

करुण रस—

इवकाल ती वो मरगो रे

वीर रस—

गोवापाछो भारत आयो,  
भारत-पाक जुद्ध इत्यादि

रोद्र रस—

खाद्य इस्पक्टर चुनावभासण  
इत्यादि

भयानक रस—

वीनणी नै माकड खागो अस्टग्रह  
स्मगलिंग की दो घडियाँ,  
में भी जार चाद पै आयो इत्यादि

अद्भुत रस—

वीनणीं ऊघाडै मूडै आई रे,  
वीनणी मे आज भूतणी आई रे  
राणी आई, राणी आई, चाद सै  
चिट्टी इत्यादि



धीभत्स रस—

जदें को पान, (उत्तराध)

तकदीरा का भटका (पूर्वाद्ध)

इत्यादि

शात रस—

चाय समोसा, हितोपदेस इत्यादि

आ सबी कवितावा के आधार पर आप ई बात नै स्वीकार करोगा क वास्तव मे रस तो हास्य ही है ।

ई सग्र की घणी घणी पोथियाँ छपण सँ पल्या ही भौत पँल्या ही जो साथी सगलिया अर महानुभाव म्हेरवान अगाऊ ही खरीद कर ई के छपण मे सहयोग कर्यो बनाका एहसान कदे भी नी भूल सकू । जदपि ई क छपण मे भौत भौत देरी होगी पण ब सभी धीरज राग्यो, में देरी के खातर छमा भागतो हुयो बाको भौत भौत आभार मानू अर धयवाद छू ।

जीवो और हाँसो

हाँसो और जीवो

जीवो और जीवो

हासो और हासो

बसत पचमी

२०२६

—विमलेश

शाति कुटीर,

भुक्तु



## के-कठे ?

१ उदघाटन मिनिस्टर	१
२ बीनणी वोट देण चाली	७
३ मारवाड सोक्या मे आग	१२
४ त्रिरमाजी को वाद	१५
५ गरमी की दोपारी	२२
६ बीनणी ऊघाडै मूडै आई र	२६
७ नया वाट	२६
८ इटरव्यू	३२
९ चाय समोसा	४१
१० देखो जी क्यामे बड ज्याऊ	४३
११ सवाद (फेमिली प्लानिंग)	४६
१२ नई साल को नया कनडर	४७
१३ बीनणी न माकड खागो	५१
१४ फल्डाफाड	५५
१५ नयो पीमो	६०
१६ सक् नाई	६३
१७ सूका वादल	६४
१८ बिरखा आगी बिरग्या आगी	६६
१९ जर्दे को पान	७१
२० बीनणी मे आज भूतणी आई रे	७८
२१ वान पूछो क्यू है ?	८१
२२ घणी खारी होई—	८३
२३ सैकिड को सूयो	८१
२४ प्राथना	८३
२५ उत्तर पडू तर (ह्यू मिनिटीज)	८४
२६ राणी आई राणी आई	८५
२७ प्यार की दात (घेटा तू कुणी देखो घारा दात)	१०२

२८ टिपेट की कामण्ड्री	१०३
२९ आमरण आसा	१०५
३० वाइमिहान की गोरी	११६
३१ आनी कामण	११८
३२ अस्टग्रह	१२०
३३ गुवाल जगाम (एव गणिन अघ्यापर)	१२६
३४ पाग पारा मजा	१२७
३५ राटली पीटली	१२८
३६ म्हाग भी द्वारा याणू है	१३१
३७ आज की रादा	१३८
३८ चीनी फौगा अर तिलचट्टा	१४१
३९ गागा पाछा नारत आया	१४२
४० पाडीसी	१४७
४१ कटी विगाड	१४८
४२ पगु मेल म कवि सम्मलन	१५०
४३ वनड का गीत	१५८
४४ चाद स निट्टी	१५९
४५ डली राता, बीती वाता	१६६
४६ स्याणी ले अरदार वाच ने	१६८
४७ स्पगलिंग की दो घडिया	१७५
४८ लिछमी चाची-मुपन मे आई	१८४
४९ लिछमी म अरदास	१९०
५० ल्यूना ६	१९३
५१ तलकर्त वाइफ क साग	१९७
५२ भारत-पाट जुद्ध	२०४
५३ टिकट क चक्कर मे	२०६
५४ ही या भी ?	२१०
५५ वा सागो वो खागो	२११
५६ वगण देव नमो नम	२१५
५७ डीयर मम्मो इगलश	२१९
५८ शिकायती पत्र	२२१

५६ इम्पेक्टर	२२२
६० साद्य इम्पेक्टर	२२३
६१ लयू की याचिका	२२४
६२ कलजुग अर सतजुग	२२५
६३ चुनाव भासण	२३५
६४ सेफनी	२४०
६५ रेजगी का कवि मम्मेलन	२४१
६६ पाती होम मिनिस्टर नै	२५१
६७ तन्दीरा का भटका	२५५
६८ पांच तुक री कवितावा	२६१
६९ प्रमालाप	२६२
७० घूघटा तू	२६३
७१ वाता मुक्तरु	२६४
७२ गणित काव्य	२६७
७३ काला मुक्तरु	२६८
७४ विरहा की आग	२७१
७५ बागडू अर हलवाई	२७२
७६ हुस्न ही हुस्न	२७३
७७ बिना दात की दात	२७४
७८ विल्ली और कागलो	२७७
७९ पाती बगई स	२७८
८० नई बीमारिया	२८०
८१ रामायण मे म्हाभारत	२८५
८२ होली को रग मा की तरग	२८६
८३ मैं भी जा र चाद प आयो	२८२
८४ नामण	२८७
८५ छारो देगण गयो साथ मे	२८८
८६ अभिनटन याहिया खाँ नै	३०३
८७ या के हागी	३०८
८८ कविता को मोल	३११
८९ समझौना	३१२

६०	चीत्रेजी	३१४
६१	बेनजीर	३१५
६२	विरोध पत्र	३१६
६३	चेतावणी	३१७
६४	लिछमी चाची	३१८
६५	उल्लूखो सावधान	३१९
६६	जिन्दगी की किताय	३२०
६७	गरीब और गरीबी	३२१
६८	एक गिलाठी	३२२
६९	अफगरी	३२३
१००	गरजन-तरजन	३२४
१०१	तटकाऊ की कविता	३२५
१०२	बोर-बोर	३२६
१०३	मेंगाई और बेईमानी	३२७
१०४	हाकी सघ	३२८
१०५	मैं नागपुर तो	३२९
१०६	परदेसा से बालम आया	३३०
१०७	इसाफ	३३१
१०८	जाच	३३२
१०९	सी आई ए	३३३
११०	साहित्यकार	३३४
१११	रमान लाठी पकडावो	३३५
११२	इबकाल तो वो मरगो रे	३३६
११३	पियाजी, धारी याद सताके	३३७
११४	इब तो आज्या परदेसी	३३८
११५	हितोपदेस	३३९
११६	राजगारी या रेजगारी	३४०
११७	चुनाव मुक्तक	३४१
११८	दो खबरदार कवितावाँ	३४२

## उद्घाटन मिनिस्टर

माई लोगो !

मैं ज़द से हू वण्यो मिनिस्टर

प्राफत होगी !

मोचें तो थो, ई चुनाव में जीत मज से दिन काद गा

पड्यो पड्यो चटणी चादूंगा

पण सगळिया कोन्या मान्या

बोल्या "भूँ तो थाने ही मतरि वणास्य।

मैं नटणें में कस्तर राखी कोनी थोढी

पण वैं भी जिद नैं नहि छोढी

मनै मिनिस्टर करके ही वैं धाँटा मान्या !

प्राफत होगी !

क्यूँक दूसरें ही दिन से के भौंभट होगो (क)

सौ सौ के दो दो मौ चिठ्याँ—

नित-हमेस धावण नैं लागी

जाँका व्योरा सिक्केटरी में सुणतो सुणतो—

मैं उखताग्यो !

'फलाँ जगाँ यालेज वणी है'

'चोसो भाया बही बात है, टाबर टोकर पणाँ पढंगा

नही नहीं थे मेरो मतबल मनज्या काती  
 गीको उद्घाटन पैल्या थारं ही कर-रमतौ मे होमो  
 'हु' होमो जस्तो ।  
 तो आगें की चिठ्या भी मे ऐया ती ही ?  
 भोजासर मे म्होवमरी में, इ उपाळी, वूमाम, भडूद  
 किसने की टागी'र ह गीरी, वास, पचेरी  
 गुढे गौडजी मे माँ ही चुत्या दवाई खाना सारं  
 य भी थान उद्घाटन करवाने ही तो बुलवाया है  
 मावस न, कुछ चीय ओर नौमी, चोदस न ।  
 आने तो ऐया ही क्या ही कहैया ही नट ज्यावागा  
 पण वे भू गरवात बसावणिया नेताजी  
 गल पड रह्या है पिछले नो दस म्हीना से  
 गारा कोई सवा दोयनो पोसकाट'र लिफाफा आगा  
 घर पिछने ग्यारा दिन मे ही  
 चौदा पन्द्रा तार खुडकगा है अरजटी ।  
 वे कोई यू सत विनोवा भावैजी की जलम तिथी पं  
 छोरा से स्रमदान करावू होर्या है  
 आप के गाँव मे ।  
 वे भी चावे है  
 धरती पे पैली कस्सो थे ही मारो  
 बाको ठीचो बिगड न ज्यावे  
 इस्यो मुधारो ।  
 मैं नटतो नटतो बी खातर हामळ भरली

बस, हामळ भरणों की देरी थी  
 भटपट टैलीफून कर्या दस बीस जगाँ तो  
 और तार खुडकाया कोई—  
 चौसठ-पैंसठ-छयासठ गावाँ मे स्हैरा में  
 जो जो रस्तै मे आवै था ।  
 और संकडी टाइम टेविल—  
 दूर-कायक्रम का बण बण कर टाइप होग्या ।  
 और तीसरै ही दिन—  
 इसपेसल सलून सजघज कर चाली  
 फूला की माळा'र तिरगो लगा स्यामने  
 छक् छक् छक् छक् फक् फक् फक् फक् करती हाली ।  
 मेरै सागै एक सिकटरी, च्यार रसोया-चौदा चाकर  
 एक वैद अर तीन डाकदर, बारा ठाकर  
 छै स्टेनोग्राफर अर दस फोटोग्राफर ।  
 तार फून सै पेल्या सै ही खुडक्योडा था  
 बांच बांच वै तार बठीने  
 ए सी सी का और पुलिस का  
 दो सौ सै ज्यादा जुवान आगै पुगा'र  
 जकी जैया भी विद वैठी—  
 ले जीप—टरक लोरी'र कार  
 मगळा हाकिम अर ऐलकार  
 पूंच्या मौके पै ठेठ जार ।



और जा'र व आस पास क- गावाँ में फँलादी खरचा  
 राज्या भोपू बटग्या परचा  
 हज्जाराँ ही नर नारी देखण उलट्याया  
 सगा लगा कर घर का खरचा ।

छापा छपग्या-

ठेसन पै ही मन्त्री जी का नताजा सम्मान करेगा ।  
 दो छोरा वाने फूलाँ का हार पहराके  
 खड्या खड्या गुणगान करेगा ।  
 पाछे डेरें में आकरके मन्त्री जी जलपान करगा ।  
 थोडोसो, बस तीन-च्यार घटा को ही आराम करेगा ।  
 दोन्यू बखत मिलेगा जद वै-  
 सज्या सो स्रमदान करेगा ।

म्हारें भी तावळ हेरी थी  
 पूची ठेसन पर जद वोगी  
 भीड हजारों की ही होगी  
 धीरे धीरे थी सलून सै-  
 तासाँ के वावन पत्ताँ सी-  
 वावन-मुरती नीचे उतरी ।  
 और तुरप को इक्को सो में आगें आग  
 पान चवातो, थोडो थोडो सो सरमातो  
 थोडो थोडो सो मुसकातो

कानी कानी आख़ फिरातो  
 जगै जगै सै हाथ मिलातो  
 हाँस-हाँस कै भात भात का पोज बरणातो  
 बीसाँ ही फोद्द उतरातो मैं पूँच्यो डेरै में जाके ।

मज्या होगी जणा फिल्ड में माची कच्ची  
 कोई को टीगर गुमगो तो—  
 कोई की यू फिसगी बच्ची  
 हाथ पर्गाँ सै लात फडाका घामा मुक्की, चिडी पापडो  
 अर मू डै सै ले भडभच्ची—  
 उचक उचक कर उछळ उछळ वर—  
 मनै देखर्या था नर नारी ।

इतरौ में ही नेताजी मेरै हाथाँ में—  
 चाँदी को कसियो देकर कै ऐ याँ वोल्या—  
 भैणो और भाइयो इव ये मनीजी श्रमदान करै है ।  
 सुणताही मैं सावदान हो  
 कसियँ सै घरती की थोडी माटी कुचरी  
 मैं कोई सुन्दर सो तिरछो पोज बणाऊ  
 अर बनावटी हासी नै होठाँ पै ल्यावू—  
 जी पैल्याँ ही फोद्दग्राफर  
 ले ले कर वो पोज, रील नै फिरा चुक्या था ।

में ओज्यू से फोहूग्राफर वानी एक इमार्गे रग्कं  
 और इमार्गे पोज वणायो,  
 और तिसर्गे पोज वायो—

रसियै ने धरती पै पटव'र जोर लगायो  
 नो माटी को डगळो सीदो मिर मे आयो ।

पोज विगडग्यो, पोज विगडग्यो  
 ऐ या मैं मीनत करकं भी

दो इन्चो माटी भी तो मैं खोद न पाओ  
 पण थ्रम पर ढाई घटा को भातरण देकं—  
 मैं डेरें में पाछो आयो ।

और इमरें ही दिन सगळें अखवारां मे  
 भापण छपग्यो, फोहू छपगी ।

पण वो पोज विगडग्यो थो सगळें छाप मे  
 सिर मे पड्यो छळ को धोवो ऐ या को ऐ या चिलकं थो  
 पोज विगडग्यो—पोज विगडग्यो ।

भाई लोगो मैं जद से हू वण्यो मिनिस्ट्र  
 आफत होगी, ( क्यू क )

उद्घाटन करण नै नही जाव तो गाव धूलिया देवं  
 प्रर जावू तो छळ पडै मेरें सिर मे मेरें ही हाथा  
 आफत होगी ।

## वीनणी बोट देण चाली

भाग कमनिस्टा का जाग्या  
वीनणी बोट देण चाली

जमानू आयो बोटो को  
फिर्यो तिर नाने मोटा को  
घुलावा घर घर में आया  
बोट देवा चालो भाया  
खाट में बूडा नै घालो  
लुगाया नै हद्दर ठाट्यो  
वाथ बीमारा की भरल्यो  
पवेडी मुरदाँ नै करल्यो  
सामुवा पायेपा जासी  
मोटरा में भूवा आसी

नवेली वीनणिया खातर-  
लोरियाँ आज्यासी खाली

कठै तो कागरेस ह्यारै  
कठै जनसघी पूच्चारै

कठे मोट्यार पटार्या है  
 मोट चुपचाप चुकार्या है  
 कठे ल्हुक-द्विप कर आर्या है  
 बोनण्या नै वहकार्या है  
 म्हेरवानी म्हापर कीज्यो  
 बोट धारो म्हांनै दीज्यो  
 कठे कमनिस्ट पुकारै है  
 मार भीतरली मारै है

इया वै कानी कानी से  
 घरा में आ अगरी घाली

बीनणी नटगी थी पैल्या  
 न जाऊगी मै बा गैल्या  
 बटण चेपूगी कोटा कै  
 बास्ते लागी बोटो कै  
 छुटै जद पिण्ड न रोटा से  
 मनै के मतबल बोटो से  
 बात यू कहकर अटगी थी  
 धरणी नै बलीयर नटगी थी  
 इवाई सुसरो जद आकै  
 बोट देणू पडसी जाकै

जरा चू भी कोनी बोली  
बठे से दबी-दबी हाली

त्यार न्हा-धोकर के होई  
टाग कर अतर की फोई  
बाधकर टीसू की धोती  
माग में पूर लिया मोनी  
पैर पीळा-पीळा गैरा  
लगायो काजळ रतनैरा  
क पोडर मूडै पै लेप्यो  
लाल टीको माथे चेष्यो  
इया बा सतरगी होई  
क जाणै इ दर-नस कोई

भूलगी थी पाछी आई  
लगाणी होठा पै लाली

देखकर दरपण में काया  
चाद की सी लागी छाया  
बिखर कर जो मू पर आया  
बाळ बा ओज्यू से बाया  
खोलकर टीसू की धोती  
बाधली मुखमल की धोती

पडोमण सै लेकर माग्यो  
 भूम्यो ताळ्या को टाग्यो  
 घडी में चावी देवर वै  
 कळाई उपर वगकर वै

भूमती कमरै सै निवळी  
 हाथ मे लेकर रूमाली

रामजी के सुभाव होगो  
 ३ लण्ण ही वाळ जोगो  
 भिरोखे मे चप्पल रंगी  
 साथणा मन्नै के कैगी  
 जगा जैपुर सै आया था  
 चाव करकै वै ल्याया था  
 न पैरुगी तो सिडज्यासी  
 इया को मोको कद आसी

वात यू सोच मुडी पाछी  
 मोतिया की चप्पल ठाली

दडी कमनिस्टा की लारी  
 'होन' देती देती हारी  
 खड्यो एजेन्ट वार घालै  
 बीनणी जे कहैयाँ चालै

मसुरजी कर धाप्या रोळा  
 ओळमा दिया जेठ वोळा  
 खचाखच भरगी लोरी है  
 देर आ क्यांमे होरी है  
 कई एजेन्ट फिरै-डोलै  
 बीनणी आख नही खोलै

बोट की टेम निकळ ज्यासी  
 जणा होसी सँ सँ काली

जणा सँ लाम मचाई यू  
 उटळ सासू कहुवाई यू  
 टाटिया कै कै लडरचा है  
 क कुणसा ओळा पडरचा है  
 बीनणी पैर ओड जासी  
 इया वा आती सी आमी  
 लाम जीकै है बै जावो  
 न म्हानै आकर उखतावो  
 बीनणी ऊपर सँ बोली  
 न में बाकी बादी-गोली

कुहादयो में कोनी आऊ  
 पसीने में होगी आली ●



## मारवाड सोक्यां मे श्रागे ।

मारवाड सगळी वातां मे रूस घमेरीया से प्रागे

मारवाड बोळा देग्या है रूस घोर घमरिया सरीया  
साली वीरवातियां मे ही देसां भिटतो ल्यो घमरीया  
वे सगळी बोशोकें रावे, ये सगळी राता के बोवे  
य रातू जागे तो ये दिा मे भी रूटी ताण'र सोवे  
घांती जाटो के प्रागे वांवा भेंगरेजी गाणा हारे  
नणद-भुजाया राट करे तो वांवा से भगटा भरा मारे  
रूस घोर घमरिया विच्यारा के के होड करे घां सागे  
मारवाड सगळी वाता मे ०-

माथे पे टिकडो'र चूप दांतां में अर कार्ना में बाळी कांटे के ऊपर भी धैरै, ये नार्का में नथ नखराळी आंको निरख बोरलो, बांको सरमाज्या पूर्ला को जूडो डडा-मडा हाथ बनाका आका पे लाखा को चूडो घूमण नै तो वं भी जावै, घूमण नै तो ये भी जावै पण वं हाथ मिलायां चालै, आंनै सागो नही सुहावै कोई दिखज्या, काड घूघटो, मार फल्डको आगै भागै मारवाड सगळी वाता मे-०

वै जद पेट पैरके निकळै, आंकी निकळै छापल धोती बांकी सादी, तो आकी पे भिरभिरिया तारा अर मोती ऊपर से कागगी, बांकडो, जरी-कसीदो पोळो गोठो वै नळ के नीचे न्हावै ये लोटै से ले ले खळखोटो वै खोलै कम्मर पट्टा तो ये खोलै विसपत का तागा वै वैर्या पे तोप चलादे, ये चुस्या पे फीके पागा वै उजड्डु रगरुट लखावै आकी कोमलता के आगै मारवाड सगळी वाता में०-

वै के जाणै कैयां सगै सोयां नै सीठणा दिया जा और मिलाई का रिपिया छोटी सगी सं किया लियाजा व के जाणै के होवै है उजण-उदापण तीसू तेरी के जाणै आसा भागोती, के जाणै तुब्सा की केरी

बैके जाणें रिपिया देकें, रुसी सासू क्रियां मनावें  
 देवर नें घेवर क्यू देवें सूत्यो-सुमरो क्रियां जगावें  
 ये आंकें ही वसवा, वांपा चिरत करणिया कोन्या जागें  
 मारवाड सगळी बाता मे-०

वै के जाणें भात-चूनडी, जळवा छूछक गोर-बिंधोरो  
 के जाणें खासी को टूडर, के जाणें पितरा को डोरो  
 के जाणें खाणी पलोथणी, वें होटल मे जाणें चरणू  
 के जाणें व वरत चोध वा, के जाणें वास्योडो करणू  
 बै राली व्हाईइयाजा मे वठ वेंठ उड ऊंची-ऊंची  
 घणी फिर्याई, तोभी इबतक चादसुरज तक कोन्या पूची  
 आंकें धरती पै वेंठ्या ही तारा और रेवती लागें  
 मारवाड सगळी बाता मे-०



## विरमाजी को बाद

ई दुनिया की  
 बढती आवादी के वारें मे विचार करवा के ताई  
 बिरमा, विसणु, महेस एक दिन सभा बुलाई  
 मकरजी बी दिन के बेरो के पी आया क  
 वाता ही वातां में सिवजी, बिरमा नै गाळी ले ऊठ्या  
 और गाळ भी एक नही सौ गडा काढी  
 भिडता ही बोल्या—'तन्ने' जुलमी नै जाणू घणै दिना से  
 ये तेरा ही वोयोडा फाळा है म्हाने के कह्यो है ।  
 इव ये तेरा पूत न तेरै वस में आवं  
 गीगा जण-जण गोठ कगवे  
 अद त् म्हारी मदद लेण नै सभा बुलावै  
 लाग्यो तेरो डोळ देख ल्यूगा तन्ने भी  
 मैं जाणू क्यू घर मे गोदिम करा मानज्यासी बिरमाजी  
 पण बिरमाजी क्याका माने ।  
 आज्या इव तू मार पावचा रच दुनिया नै कर मनमानी  
 मेरो भी खारो सुभाव है, एक नही छोडूगा जीतो  
 आज देख लेमी आ दुनिया क  
 बिरमाजी अर सकरजी दोन्या में कैको जोर घणू है

दूतणी गटार सट्या होयगा  
 भाग्या भाग्या गया टियाळी नी चोटी पं  
 भेंदो सभा, प्रिसणू भी भाग्या  
 प्रिरमाजी हासता हागता मूटो केर्यो  
 पण सिवजी वलास प्लाट सं ई दुनियाँ पं बज्जर गेर्यो  
 बावं वानी मुज्या जणा घरती घराई  
 देगं ताी मुज्या, वाळ नदिया में भाई  
 मुडकर देख्यो जणा प्लेग अर हैजो पंत्या  
 माम देख्यो, काळ पड्यो अर लोग मचादी भाई भाई  
 ऊपर देख्यो विरसा भाई  
 भुरककर देख्यो आग लगाई  
 एवर तो अचरज में पडगा विरमाजी वा लोग लुगाई

पण सवरजी के देख्यो क  
 ऐ या कं विकराळ काळ में भी दुनियाँ कोन्या डरती है  
 उतणी ही बढती जारी है  
 जितणी दिन पर दिन मरती है  
 ग्यारं वारं कं सागं ही-  
 गाजं वाजं सं होर्या है  
 न्हाण पावची, जळवा-छूयक घर घर भाई  
 दूर खड्या कूरणं में विरमाजी हासं है  
 सिवजी ज्यूही देख्या वानं, मुरछित होग्या

सिवजी मुरछित होग्या (तो इव ल्यो)  
 सिर पे धर्याँ छावडी, मैदी मँडा, घूघटो काढ्या  
 गमगमाट करती कुरडी पँ जच्चा आई  
 पड्यो सुणाई-  
 जच्चा नै पीळो रँगवाद्यो, नागपरी सतरा मँगाद्यो  
 और जचा नै लाडू भावै  
 बेर सकरगदी भी भावै, दाडू भावै  
 बेरो कोनी के के भावै ।

जद आ गीता का रोळा अ वर में गूज्या (तो)  
 राम नाम सत्त है सत्त बोल्या ही गत है  
 हरक्कहो जी हरक्कहो जी का रोळा भी फीका पडग्या  
 गूंद सूठ अजवाँण क जाका-  
 देख ढेर का ढेर लाडुवा का अणगिणती  
 मुरदा का रास का पिड बट्टै मे बैगा  
 इण्यो गिण्यो एकाव नेवगी लिया उस्तरो  
 कोई नै भट्टर वरणे कै खातर चाल्यो (तो)  
 ओढ ओढ ओडणा सिरा पँ, दाया का अणगिणत दूलरा  
 चाल पड्या गीगा जणाँण नै  
 बूडे नै बाळकै घरा भी पूग्या कोनी  
 जी पैली ल्होडियै डावडै की स्याणी भू  
 माचै पँ दो जुडुवा टावर लिया पडी थी  
 पाणीवाडै गया जिकानै ही दिखाणनै-

एक नेवगण दूब लिया घर की देळी पै त्यार खडी थी  
 एक कुहावत सुणने मे आई थी पैल्या  
 बाबो मरचो टीमली जाई  
 रह्या तीन का तीन विसाई  
 पण इव आ भी भूठी होगी  
 क्यूक वूडळो मरचो एकलो और टीमला दो जाया है  
 बिरमाजी की ऐया की करतूत देखकै  
 मूत्योडै सिवजी ने ओज्यू सुरता आई  
 आस मसळकै खडया होयगा  
 भाळ मारकै एक हाथ मे डमरू ठायो  
 और दूसरै मे लो की तिरसूळ सभ्हाळी  
 तुरत घूघरा बाध पघाकै नाचण लाग्या  
 और तीसरी आख खोल कै आग बत्तेरी

डमरू की डमडम मे, घुंघरू की धमधम से  
 बिजळी को चमचम से, मिलगट की छमछम से  
 गूज उठ्यो आकास क हरहर बम बम बम से  
 टूट टूट कर प्हाड पड्या धड धड धड धम से  
 सिवजी के नाच्या सिवजी की माया नाची  
 नाच नाच आदी दुनिया मे परळ करदी  
 और तीसरी आख सितम ढाया ऐया का क  
 उगळ उगळ कै आग घणखरी दुनिया भरदी

आदी से ज्यादा दुनिया में छाई गरदी  
 जणा घणू घोरारम मच्यो  
 लोग वही सिवजी नाच्यो जद परलें माच्यो  
 ऐ या क त्रिकराळ काळ मे जीववचाणा मुमकिल होग्या  
 जागें वचावणिया सारा ही देवता पूजकें सोग्या  
 दीव्हे थो जागें इव सोक्यू भसम हुवंगो

पण दखो के पासो पलट्यो  
 चाणचकें ही ओज्यू वेलण से बाजी कासी की थाळी  
 ऐ यां को मारचो टण्णाट उळ्यो अबर मे क  
 सिवजी के हाथ से छूटकें डमरू पडग्यो  
 डमरू लेवण भुवया जरासा तो के देख्यो क  
 घर घर मे हीजडा ओर भँगणा नाचै है  
 सिवजी वाको नाच देखकें नाच भूलग्या  
 कुबडै की ढोलक सुणकरकें ताल भूलग्या  
 जळवा के पाणी का ज्यू ही छीटा उछळ्या (तो)  
 रही सही तीसरी आंख भी ठडी पडगी  
 इव तो सिवजी सुन्ना होग्या, नरवस होग्या  
 भाग्या भाग्या विरमाजी के कर्न आया  
 पर्घा पडचा अर वोल्या—  
 मेरा वाप मनै माफी दे इव तो  
 मैं तो तेरे से लडकर हूँ हार मानग्यो



में मारण में कस्सर राखी कोनी थोड़ी  
पण इब नै तो हाण रिया वै  
न इब मेरी तेरै आगै दाळ गळ है ।

इतणै मे विसणू आ बिरमाजी नै बोल्या—  
बिरमाजी म्हाराज, समेटो थारो माया  
थारै दोन्या क भगडँ में, मैं गरीब भूळ्याणी फँसगा  
मैं इतणै लोगा के खातर कपडो नाज कठे सै ल्याऊ  
राई राई जघा भौम पै रुकी पडी है  
मैं इब वानै कठे वठाऊ ?

मेरो कोप हुयो जावै है दिन दिन खाली  
और बठीनै, दुनिया में दिन दिन बढती जारी कगाली  
लाख मिनख अदभूखा सोवै, कोडा ही कपडँ नै रोवै  
रो-रोकर आसू पीरधा है, नकटा हो होकर जीरधा है  
ऐया को ही साग रियो जे थोडँ बरसा ( तो )  
मेरै सँ तो ओ रासो दोरो ही निम्भै

ऐया की कितणी ही बातें  
सिवजी, विसणू जी बिरमाजी नै कह घाप्या  
पण चीकणै घडँ बिरमा के एक न लागी  
बिरमाजी सो वादी ठठ न देख्यो कोई  
बीकी सो करडूठ नही देखी जा जग में ।

अब्र मे देखो सिवजी विसणू जी दोन्गू-  
हाथ जोडकर विनती म्हारै सै कररचा है  
विरमाजी मै ज्यादा म्हारै सै डररचा है  
बै कहरचा है-

म्हारै मै तो विरमाजी कोनी समझै, थे ही समझावो  
म्हा दोन्या की लाज बचावो, विरमाजी को वाद छुटावो  
वार वार मे कासी की थाळी सै बेलण मना भिडावो ।  
विरमाजी को वाद छुटावो  
विरमाजी को वाद छुटावो



## गरमी की दोपारी

कोई कहरघो रामारी ह, कोई कहरघो जेमारी है  
कोई कहरघो महामारी है, या गरमी की दापारी है

दो महीना बिरखा, और चार महीना जाड की पोटी है  
पग एक बरस के छै महीना म गरमी आज्या ओटी है  
फागण की होळी पै आके, सावण की तीज्या जावै है  
बीच मे जेठ की लुवा, आपका न्यारा चैन दिखावै है  
वाँका फटकारा डटै नही, दोपारी काटी कटै नही  
तावडी तौवडी तो दुकान पै धेलो पीसो बँटै नही  
जद चार-पाच छै सात मिल'र दुग्गी पै इक्को मेलै है  
कोई 'ट्वटीनाइ' कोई वेगम वा वारा खेलै है  
ऐ या दोपारी दोपारी, बेकारी ही रुजगारी है  
या गरमी की दोपारी है

घी हाळो घी के पीपलिय नै लगा म्हारारणें ऊंगें है  
 आगळिया को चिकणाम, घुचरिया दो चाट, दो भूगें है

भठी के स्हारें चिकणू सो काळो सो पूर विछाकर के  
 गीडुवो लगाकर यू सूत्यो ह हलवार तपणाकर के  
 मूडें पै ब्रैठी माग्या है, माग्या का चोर पकड भारें  
 माचाऊँ दो तो पड्यो पड्यो दिन घाडें खराटा स्हारें  
 ठोडी सै लेकर सूँडी तक चालें काळा काळा पसेव  
 जागें बिरसा मे फाट्यो है लीप्यो पोत्यो मेल को लेव  
 धोती की हीली लाग, लाग की कूट कडाई मे मोदी  
 हो पडी चासनी चाटै है, पण बीनै तो कोन्या मोदी  
 बितली दुकान मे बडके म्हांटी दिल कुसाल गटकारी है  
 या गरमी की दोपारी है

पाटें पै मोदो मेल भोड, म्हाटो पनवाडी सूत्यो है  
 देखो सोणें सोणें मे ही कैया हो जापो उत्यो है  
 हार्था मे चूने की डाडी पग टोकगिया पै पडगा है  
 छाती पै एक सरोतो है, मगर दरपण के अडगा है  
 पसवाडो लेता ही कत्ये चूने का लोटा गुडगा है  
 के पनवाडी के मूडें पै ही आडा-टेडा पडगा है  
 बावळियो कनपट कत्ये मे, देणू चूने में लिपगो है  
 यो नाक सुपारी खार्यो है माथे के जदों चिपगो है  
 गगा-जमना सी चालें कत्ये चूने की दो धारी है  
 या गरमी की दोपारी है

## वीनणी ऊघाडै मूडै ग्राई रे

व्याग चढया या वी दिन मै ही प्राता मुगनं मै आगे थी  
वीन पटयोडो थो' र वीनणी फैमन मै दिन्ती जागे थी  
'खुल्लै मू टै फेग होमो', यू दो छोर्या प्रनळारी थी  
मुण मुगकै राजी होरी थी, पडौमिणा या ही चारी थी  
मोचै गी कहैया-जयाँ जे बग्ले राम मुणाई रे  
तो होज्यावै ई घर की भी हळकाई रे  
वीनणी ऊघाडै मू टै ग्राई रे

एकक् धकक् काळजो वीनकी मा को नाच चुक्यो दो राता  
और तीसरै दिन सज्या ही सुण वरात आणै की वाता  
इती जुगाया भेळी होगी, दूटण लागी घर की छाता  
मोटर को धर्राट सुणाई पड्यो, भदावा गाता गाता  
देग्यो मोटर थमता ही बस भाज्यो आयो नाई रे  
मै मै पैली या ही दयी वधाई रे  
वीनणी ऊघाडै मूडै ग्राई रे

वीनणीती न देख उघाडै मूडै, सैकी अक्कल खोगी  
खिजकै होगी हूँट, वीन की मा चौवारै मै जा सोगी  
घर की जोमण पटक आरतै की थाळी नै, सुन्नी होगी

न्यूतै कै मिस भाज नेवगण, घर घर मे आ पतिघा पोगी  
 'साची कू हू, भूठ कहू तो मन्ने राम-दुहाई रे  
 जाकर देखो, मै ना वात वणाई रे  
 वीनणी ऊघाडै मू डै आई रे

चळनी रोटी छोट तुवै पै, देखराने लुगाया भाजी  
 भटपट गुदडो छोड, कामडी ठाकै चाली वूडी माजी  
 घडा-मू णिया छोड कुवै पै, पटक वरी पणहार्या भाजी  
 मदर में सै म्हत भाज्यो, मैजत मे मै भाज्यो काजी  
 छोड वडाई - कू चा भाज्यो आयो हलवाई रे  
 आकर घर मे रामारोळ मचाई रे  
 वीनणी ऊघाडै मू डै आई रे

खबर सुणावा थूक मुठ्याँ मे, कालिज को हलकारो आयो  
 मुणता ही प्रिंसीपल उछळ्यो कालिज मे लोटिसनिकळायो  
 'मुणा गाव को एक आदमी खुल्लै मू डै व्याकर ल्यायो  
 आदै दिन की छुटटी है, सै 'कपथ्रीली' देखण जायो  
 घटी की टन् कै सागै छोरा घुडदोड मचाई रे  
 सा भीड भाजकै घरा वीनकै आई रे  
 वीनणी ऊघाडै मू डै आई रे

वूडी दादी ई घर मे ऐया का ग्वटका देख विचरगी  
 नई वीनणी वीका ताना मुण सुण डरगी मरमाँ मरगी  
 बोली, म्हे तो घणी वीनण्या देखी पण तू तो हद करगी

आता आता ही तेरी तो सरम लह्याज सारी निस्सरगी  
 नेरी ही मावड तन बुगमी फंमन म जाई रे  
 ऐया वीने मो मो बात मुण्णई रे  
 जीनणी ऊघाड मू डै आई रे

वनड की मा मूदै माथे वाळ वसेर्या खिजी पडी ह  
 कोप-भुवन की वणी केनई नणा म लागरी भडी है  
 ठाकुरजी का दरसग करवा, धारूयें पै भीड खडी है  
 पग मदर-म्हताणी रूमी आगळ-वाकळ हुयां पडी है  
 रो-रोकर कहरी, 'जी घर की वदे गाजती गाई रे  
 करदी रामारी वी घर की हळमाई रे  
 वीनणी ऊघाडै मू डै आई रे

## नया वाट

ल्होडियो नयोडो पीसो तो गोकडिया को माथो खागो  
इव करो नयोडै वाटां सै वळ्या वंठ्या सै सिर फोडी

यो इस्यो तोल अब चाल्यो रे

यो नयो तोल अब चाल्यो रे

कोई का वाट घस्योडा हो, कोई का वाट पुराणा हो  
कोई की डाडी वाकी हो, कोई का चडरया कारणा हो  
कोई तोळा में तुलर्या हो, कोई अंगरेजी सेरां मे  
कोई रतला मे, पौडां में तो कोई पां-पा सेरा मे

कोई का कच्चा पक्का हो

कोई का ढीगा टक्का हो

सरकार कर्या इकसार सवीनै देकर यो अनमोल चास  
मव छोड पुराणा आप आपका वाट नयोडा ठाल्यो रे  
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

टणने भूलो मण नै भूलो, ब्रम, टण मण भाडा वाजंगा  
के छाट पडैगी टैणा पै टणमण, जद वादळ गाजंगा  
रत्ती मासा तोळा छटांक नै छोड रतल की कतल करो  
अर मिलीग्राम सै ले किंवटल तक नयो तोल वापरो खगो



यू छोड़ पुराणों बाटाँ नै  
अर पटक घस्योडी साटाँ नै

वस वरस दो वरस कै भीतर ही नया बाट बदलाव्यो रे  
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

यो ग्राम बण्यो सग्राम जीव को तोल याद कैयाँ रहसी  
कीलो, हैक्टो, डैका, डैसी, डैका देसी बैका देसी  
जो डेड सेर पक्को खावै वो कितणा ग्राम चणा त्यावै  
जद एक छटकी कै सागै ही माठ ग्राम भाज्या आवै

कैया के लोग तुलावैगा  
कैया के भाव जचावैगा

कितणू ही भोको मारैगी, टाडी न भुकी दिखा देगी  
जद भीत गौर में देखागा, कूजडी बाट ने घाल्यो रे  
यो नयो तोल अब चाल्यो रे

पण माची कैम्या ग्राम तोल को एन फायदो यो होसी  
भूदान भला ही मना करे, पण ग्राम-दान घर घर होसी  
मूठी में नैरु बीम ग्राम रोजीना मँगना नै देम्या  
भूदान करै टुच्चा-पुच्चा म्हा ग्रामदान को फल नैम्या

कोलीधज नाम बढ़ावागा  
अम्बराग में अम्बरावागा  
रळजुग वा करग कहुवावागा

याने भी मत त्रिनोवा भावे नै चकमू देणू ह तो  
 ने भी यू ग्राम दाउ करके थारै मन नै समझाल्यो रे  
 यो नयो तोल अब चाल्यो रे

या नाप जाख की रीत नयोटी मीटर की अचरज जोगी  
 जी मै दर्ज्या की गजा चाणचक पडी पडी लम्बी होगी  
 इव भूलो इ च गिरै गज नै अर याद करो मीटर लीटर  
 रुमती वैभी नप ज्यावै तो सागै राखो थर्मामीटर  
 के तो लेवाळो खोवैगो  
 के देवाहाळी रोवैगो

पण ताण ताण कै नापैगा वहैषा भी जा'र नपाल्यो रे  
 यो नयो तोल अब चाल्यो रे

तोलण हाळो सब सावदान । इव इसी ताखडी चालैगी  
 जाका पलडा ऊपर होगा नीचै नै डाडी हालैगी  
 नापण हाळो थे भी मुणायो इव जो भी गायक आवैगो  
 तो के तो खुद गज ल्यावैगो, के हाथा नाप फटावैगो  
 यो नाप जोख को फदो है  
 मै खातर गोरख धदो हे

या प्हाळो आपाने सबने जद तक मुळजाणी नही पडै-  
 करत्यो वजागिया जद ताणी कोई तोलो, तुलवालयो रे  
 यो नयो तोल अब चाल्यो रे

## इन्टरव्यू

एक दफा मैं ठालो भूलो—  
ई दुनिया से पिट्यो लुट्योडो  
ठालफ में नोकरी छुट्योडो  
मन ही मन मे घणू घुट्योडो  
गोरमिण्ट ने अरजी भेजी मैं ठालो हू  
जीने कोई नई नेवगण गाडी मे भूलके छोडगी—  
सज्यो सजायो वो डालो हू  
थारं कोई डिपाटमेंट मे—  
मन्ने खाली जघा देख जे कठे फसाद्यो  
तो मै मोगेंद खाकर कू हू—  
ऐ या का करतब कर ज्याऊँ, माफ करोगा  
जो थारं से भी मौ जुग मे कोनी होया कोनी हावें

कर मेरो बिसवास एक्बर विना जघा ही जे अलजाद्यो  
चोखी न्याऊ मिले जिसी नोकरी दिवाद्यो  
तो थारो ऐसाण जलम भर भूलू कोनी  
क्यू ? मैं ठालो हू  
ऊनी भाडी स भडकायोडो पालो हू

एक वार चिपगू चावू हू  
 पीछे तो मैं अपणें आप जघा कर ल्यूगा  
 पीछे तो थे भी मने कोनी काडोगा  
 क्यू ? और जणा जे छै छै घटा काम करै हें  
 तो मैं मेरी गरज पड्यो दिन भर रगडूगा  
 अर थाने राजी राखूगा  
 थाने रोज आदमी चाये,  
 एक वार मन्ने भी राखो, मे ठालो हू  
 मेरें में जो जो गुण है बै सै लिख मार्या  
 बस ई से ज्यादा थाने लिखगू नहिं चावू  
 थारी मग्जी होवै तो हीरें नै राखो  
 नही कोयला गळी गळी मे घग्गा पड्या है'  
 इतणी वाता अरजी में लिख अरजी भेजी  
 भोचू हू, सै बात वाचकै गोरमिण्ट कैं—  
 फाना का कीडा तो सगळा भडगा होमी  
 और बिना ही जघा चिप्योडा हाकिमडा कैं  
 चाच म्हारली फडद साप सा लडगा होमी  
 और नोकरी देबा हाळा अफसरिया मैं  
 मूदें माथें पन्गा होसी  
 बेरो कोनी आपसमें ब किया किया बनलाया होमी  
 पण चमैं की बात, पूंचता ही अरजी  
 फोरण्ट मुलावी इन्टरव्यू को मन आयो ।

म हम्मपा, गजी होया घर मा में मोती  
 तीर म्हारना पनोने ही छीर तिगतै पै जा लाग्या  
 छै म्हीता म तु भारग्न ना मूपाणे घा  
 घाज रग्मडा म्हागे जाग्यो  
 करम म्हारनो वे जाग्यो ओ गारमिण्ट ता ऊनी जाग्यो  
 जो हमास्त्रिये पै भी उ टरगू तो एर तुनारो घाग्यो  
 भट दरपण तागमियो त्यायो  
 मोनगिरी को तेल मगायो  
 हायाजोडी कर, र्वातै मे ताव मॅडातै  
 छै गज कपडो फडा भू डियै भामग्वामी हाळै पा मं-  
 मोदूडै दरजी पा मूट सिमावण भाग्यो  
 सज्या मेरी सूट ल्याणने-

जणा गयो वीकी दुवान पै, तो वे देख्यो क  
 गिमी मिमाई त्यार पडी ह  
 मे सण्णागो, भट बोल्यो रे मर मोदूडा  
 तू ट्रायल तो लेली होती  
 मने इ टरव्यू मे जाणू जठै बाध जा सकै न वोनी  
 तू ट्रायल तो लेली होती  
 तो म्हाटो बोल्यो, ट्रायल तो आइ नेव  
 म्ह तो भिडता ही दीखै सो-

फाड फूटकै सीम सामकै परै हटा हा  
 मोदूडो तो मेरै घरका को ही नाम कढायोटो है

मैं बैयाँ मोट्टो कोनी  
और बापजी, पैर देखल्यो, फिट आवैगी

मोट्टे को लक्कर सुणके थ्यावस आयो  
सै सै पैली में पैरण न कोट उठायो  
पण मैं तो रोजणरया आयो  
जद, च्यार जणा न बुला कहवा मे कोट ठँसायो ।  
रोतो रोतो के देखू हू क, खाली दैराँ कानी की बा—  
आगळिया सै च्यार इ च नीची लटकै है  
दरजीडो देरयो तो वो भी सु नू होगो  
वोटयो ओहहो जुलम होयगा  
वो सागरियँ सिकलीगर हाळो लबळियो छोरो हे ना ?  
वो भी एक कोट देगो हो  
लाम-वडाके मे ही देखो, दैणी वा को नाप याद वेको ही रँगो  
वो सुसरो लबळियो ही आ कुबद करादी  
म्हारी तो ध्यानगी मरादी  
तो भी कोई ग्याम बात तो होई कोनी  
एक वाह नै आठ इ च भीतरने मोड्या फिट आज्यासी  
आगै यारी मरजी होवै मो विचारल्यो  
सुणके बीकी वाता, मेरै ऐ या मनमे आई—  
जाणै मोट्टे की मू छ पाडल्यू  
मू में देखू हाड, खीचके जाड काडल्यू

पण म रिग ते पीरें रंगी  
 पण में इनणू तो मोल्यो 'रें मत्यानामी '  
 मोल्यो तो तो मोल्यो, श्रीर प्हरगके दम्पो आ भी चोग्या  
 पण रट, इव ओ वट्टे वैया  
 मेरा कहना बुळ्या जाग्घा न  
 तेरो काळी गाय, काड तो दे तू पाछो'  
 मुणता ही मोदूडो वोडो ऊचो होवें  
 कहवो पकडकें जरडी भीची  
 वाव कानी को वा न भटकें में सीची  
 श्रीर म्हारची तो दोयू आग्यां, रंगी, मीची की मीची  
 मूडै पै स फाट वाह दरजीडै कें हाथा में आगी  
 जद म्हाटो वोत्यो, टाको बुछ वच्चो रंगो  
 में सोची, ई भोदू सै पीछै सलटागा, पैल्या इ टरव्यू दे आवा  
 इया रोचकें चाल पड्यो में  
 वीस पावडा चल्यो गयो जद लैरचा में भोदूडो वोत्यो-  
 अजी पैट तो लेगा होता, आ तो विलकुल फिट आवैगी  
 भाळ मारकें जद में वावडक मोदूडै कानी देरयो  
 तो वो भोज्यू वोत्यो कोनी  
 दस वजता कें सागै गाडी जैपर पूची  
 न्हा-वोकर में, मांग्योडी सूट में अकडकें  
 दो वजता ही-  
 इ टरव्यू लेणै हाळांकें दफतर कें आगै ठें पूच्यो

इ टरव्यू वम इवीइवी दस पाच मिंट मे सुरू हुयो थो  
 दफनर कै वारु ये पै कुरसीपै वैठ्यो  
 जमादार मनमे मुळकै थो  
 मत्तर-हस्सी कडातूड छोग की भुगदड भेळी होगी  
 वाने देख देख हासै थो  
 पै था सगळा विरै विरै का, कोई गोल्डफ्लेक पीर्यो थो  
 कोई सास उपरला ले लेकर जीर्यो थो  
 कोई विना चमी बीडी मूठी मे दाव्या,  
 माचिस की विद मे दीखै थो  
 कोई बीने देख 'इकानामी' मीसै थो  
 कोई मेरो माथी कुराँ मे चुपकै मे चरवर ही खिले लागा था  
 अर चरवर की हार-जीत मे —  
 इ टरव्यू की हार-जीत समझै लागा था  
 पाच पाच मिंटकै आतरै, भीतरनं घटी बाजै ही  
 एक जणू निकळ्यातो, दूजो भीतर जातो  
 भीतर जाती वखत जाणियूं  
 हरख हरख हासतो मुळकतो भीतर जातो  
 (पण) पाछो आती वखत, सरणसट सोळू खोया  
 एक मिंट भी डटतो कोनी कैवाने वीमि के होई  
 ऐ या वै छव्वीस जणानं पार कर्या जद  
 चाणचकै ही नाम म्हारलो भी-  
 वाकै माथं म आयो, मनै बुलायो



मैं भी देस्यादेस हामतो ही वमरै म वदम बढायो  
 मुसाल म मैं तीन पावडा चारयो होमी  
 डतरौ मे कुरमी पर बँठयो वूडळियो भ्याई मी मारी  
 'क्या हसते हो ?',

मैं सण्णागो, मनमे सोची, मर वैरी, हामणू पाप ह ?  
 जातो तो मैं थारै जीव-जिजासा नै रोंतो जाऊ गा  
 अरै डँड, सूज्यै मू ड का, पाच मिट तो हास लेणदे  
 पण मैं मू डो, फोड कह्यो ना क्यू भी वीनै  
 च्यार जणा ड टरव्यू ले था

दो जुवान था, एक वूडळियो, एक लुगाई  
 म भिडता ही जाण गयो थो वूडळियो कुचमाद करैगा  
 पण मैं सोची, देखी जाती राम भरौमै  
 ओज्यू देख्यो, दैरौ कानी को जुवानडो,  
 खादी की जाकट पैर्या थो

और नाड नै मिट मिट मे ताण्या ने थो  
 ताण ताण कर नसा गलदरो इसो सुजा राग्यो थो म्हाटो  
 क छाती सै लेकर सिर ताणी एकमेक थो  
 वाव कानी को जुवानडो

अचकन और पजामू, पैर्या चुप वैठयो थो  
 और स्यामन बँड वूडळियै कै म्हारै ही

एक लुगाई जो बँठी थी, विना बात ही बा हासै थी  
 पण जो वूडळियो मेरै ऊपर गरजै थो

वी मा नै कोनी वरजै थो

मे सै पैली मेरै ऊपर निजर पडी ऐ चाताएँ की  
मन्नै पूछ्यो आपको नाम ? वाप को नाम ? गाव को नाम ?  
में मुन्नू सो होगो, मन मे वात विचारी  
देखो आपा खाता पीता कैया कै मोथा सै भिडगा  
जाएँ कठै धरममाळा मे कमरो माँगणनै आयो हू  
ओ भी कोई है सुवाल—

आपको नाम, वाप को नाम, गाव को नाम ?

पण मैं हिम्मत करके सीदो ही बोल्यो, सर  
अरजी मे सै लिग्या पड्या है, एक वार वाच्या तो होता  
मुणे विना ही ओ जुवाव, वावै कानी अचकनियू उछळ्यो  
जो इव ताणी सही सलामत चुप बैठ्यो थो

“क् क् क् भा भा भाई ”

वो के पूछ्यो मने सुण्यो ही कोनी पण मैं—

बडी मुसकला सै हासी नै डाटी राखी  
मोची ओ तो सारै को मारो ही स्हाबो डूब्योडो ह  
में बोलू जीके पैल्या ही विचलोडी वेमाता बोली—

“थे व्यायोडा हो क कु वारा ?

न्यायोडा हो तो थारै कित्तणा टावर है

में सोचो, रै मर मरज्याणी !

तू तो आ दोन्या सै भी क्यू चटनी निकळी

मैं बोल्यो, मैं इन्टरव्यू देवा आयो हू,

देवता एक मै एक था ठाया ही  
 कोई यो र डी तो कोई यो मूडी  
 कोई की तूद पै हायी की मूड थी  
 कोई की चप्पणियू सी यी सू डी  
 श्रीरां की बात बनावू के आपने  
 एक गणेश ही खोलके घू डी  
 पाँच परात समोसा की खाय के  
 पी गयो चाय की कू डा की कू डी

×

×

×

पीपी के दूध बिना दियो बचपण  
 मार्या जवानी मे भू ठा लफोसा  
 यूँ बिडदापण आय गयो जद  
 बेटा'र पोता दिखा दिया ठोसा  
 यो जग तो मुपन्न सो बण्यो तेरा  
 माज - सवेर का भी न भरोसा  
 चेत रे चेत, तू आज भी चेत रे!  
 पीले तू चाय'र खाले समोसा



## देखो जी क्यामे बड ज्याऊ

'ओ छोटे सो है एक जीव, जीमे भैतर लबचेड भरी चाये विरमाजी खिजज्यावो, मैं वात कहूंगा खरी खरी खिजकै कीका वो बळद बाद लेसी ? जद म्हारै बकरी है तो स्याणी, वी विग्माजी की भी बुद्दी होरी चकरी ह छोटे सो जी, वो जीमे भी लावद्या लगादी हज्जारा मन मे आवै है, आपा दोन्यू मिल विरमाजी नै मारा म्हाटो बणार इव परै हट्यो, के विगड्यो वी विरमाजीको इव भुगतू तो वस में भुगतू, वोलो के करल्या पाजी को ? मोचू तो हू, वीनै पछाड, दो घू मा छू'र अकड ज्याऊ पण पाछै क्यामें बड ज्याऊ ?

मेरो मतबल समजी क नही, कू हू आ कचन सी काया यू ही पिस पिस मरज्यासी के, दुनिया में आ के सुख पाया उठता ही ठोडी नै रगडू, तो भी रोजीना चिलक्यावै में घणा रगड कै देख लिया, पण नकटा है आही ज्यावै सो डडा भावण का लगा'र, आ गावलिया सै उखताग्यो क्यामे के चिट्टो भर्ग्यो है, मो डडा खा'र नही भाग्यो वम खाणू पीणू सोज्याणू, ये तीन काम चोसा लागै

चोयो रोणू भी माग्योडो, उम बाही सै खोखा लागै  
इव दुनिया का लफडा देष र में किमै नीम पर चड ज्याऊ  
वोलो जी क्यामे वड ज्याऊ

भइ तल पूण लकडी हळदी की लागत तो मा साची ह  
पण ओ घी देवलियो बाजै, ई की वाता तू बाची ह  
ई में गोडा गळज्यावै है, ई में गनिन्दो होज्यावै  
तने कितणू ही समझाल्यो, पण तेरें तो कोया भावै  
माद्याऊ तू तो रोजीना ई में ही चूर्यो चूर-चूर-  
खालेवै, टिकरण देमी के, ई घर मेरा कठै पूर ?

×

×

×

तू कै तो कूवो भेर करू कै तो खाडै में पड ज्याऊ  
इव बोल क क्यामे वड ज्याऊ

में करचा समाई ब्रैठ्यो हू, पीछें भी कपू मने स्यारै  
रैबादे पोउर ब्रीम लिपस्टिक, मती मरबोडा नै मारै  
रवादे साठी जाग्जेट वी, घर को आगो देरयाकर  
जद याद जरी को लेंगो भावै, व्याळ्हो बागो देरयाकर  
'जुलफै वगान' मराव करैगो, तू मिरस्यू को घाल्या कर  
उरती पै पज्या टफ गावळी, क्यू तो रस्तें चाल्या कर  
ये भायनिया छ छे चुट्टा हाळी मभदार डगो देगी

आँकी कस्य। में पन आ, ये तर्न गताँ स खो देगी  
मनै तो आकी सू न मुहावै, कै तो घर सै रुड ज्याऊ  
बोलो में क्यामे वड ज्याऊ

“थारी जुवान न गोक त्रियो म भौत देर सै सुणरी हू  
पण मै गम खाया बैठी हू, जाणो हो वेटी कुणरी हू ?  
के त्रिरमाजी थारो खागो ? के पटक्याई लेज्या’र पीर ?  
म्हारली भायल्या कदसी थारी चढै पोळ, खाणने खीर ?  
वास्ते लगओ ई घी कै में सूक सूक पीजर होगी  
थे चूर्य को चो-चो चेपो, माडी हीजर हीजर होगी  
डब खवरदार, मेरै आगै कोई नै कठै वखाण्या तो  
मेरी सूदी सी भायलिया नै बुरै भैम सै जाण्या तो  
थे क्यू कूवै मे जा’र पडो, में ही खाडै मे पड ज्याऊ  
बोलो जी क्यामे वड ज्याऊ

ये काम घिरस्ती हाळा भी जे थे लवचेड वनावै था-  
तो कियोँ बुढापो भडकायो, क्यान मन्नै परणावै था ?  
थारी ठोडी, थारा गावा, पीछै भी म्हापर वयू भखर्या ?  
म्हारला तेल साबण करीम पोडर थानै कैया अखर्या ?  
में डको वजा वजा कू हू, “में मू पै पोडर लेपू गी  
होठाँ कै लाली ग्गइ गी, माथै पै वीदी चेपू गी

करल्यो याने क्यू करणू सो , जुलफै बगाल लगाऊ गी  
 जे इवकै क्यू भी बोल्या तो, अम्मल खाकर सोज्याऊ गी  
 बोली इव मैं के करलेवू ? वावळी बूच सै भिडज्याऊ  
 बोली जी क्यांमे बड ज्याऊ



## सवाद

ले भइ सुणले फेमीली-प्लानिंग के खातर  
 गोरमिण्ट के-के छपवावै अर समभावै  
 ठै'रो ठै'रो इवी मेरो चित स्यान नही है  
 मेरो जी सो धवरावै, उवाक सी आवै

के बोली, तन्न ओज्यू उवाक आरी है  
 अरै वावळी तो नी होगी भग्वादेगो ।  
 फेमीली प्लानिंग तो बळी-बुभी चूल्है मे  
 तू मेरा मत्र पूर-परगा विक्वा देगी



## नई साल को नयो कलैण्डर

मेरो कोई कलकत्ता मे रेवाळो भायलो पुराण  
कलकत्ता से—

नई साल को नयो कलैण्डर मन्ने भेज्यो

जद मै बीने खोल'र देरयो

घणू अचबो मन्ने होयो-

वी फोटू मे मे के देरयो (क)

सकरजी अर पारवतीजी

आप आप को काम छोडके

आपस में चोपड खेलै है

चीपड पर कोडी पडरी है

अठस्यारी वाजी लडरी है

काळी पीळी सकरजी के पांती आई

हरी लाल पारवती जी के

से से ज्यादा मजेदार तो यो नक्सो हे (क)

पारवतीजी सकरजी की च्यार म्यार मारके—

आपके गोडा के नीचे घर राखी

और वापडे सकर जी की

तीन इवी तक कच्ची गुडरी



पण मेरा रामडा तोड तो मना उठाये  
 य्यू आगै नै होणै का गायना नही है

कितणू बडिया भाव चित्र है  
 पारबती नै आवै हांमी  
 मकरजी का घेहू घुटरघा लागी फामी ।  
 देखो देखो सारी दुनिया नै मारणियू  
 एक लुगाई कं हाथा सै मरण हाळो  
 अण तोडी बाजी खाकर कै-  
 मूडो छा सो करणै हाळो ।

तो भाई लोगो  
 म्हे तो ई सै एक सार काढ्यो वो सुणल्यो (क)  
 जद ताणी सकरजी चौपड मे रमरघा है  
 बेलो कूटो नाचो गावो  
 खावो पीवो मोज उडावो  
 घर घर मे थाळी खुडवावो गोठ करावो  
 गीत गुवावो ।  
 कोई नै भी खिरया कोनी  
 मकरजी चौपड खेलै है ।

## वीनणी नै माकड खागो

रसोई मे सीदो आगो  
वीनणी नै माकड खागो

वीनणी भी मुकलाई थी  
मासरं आई आई थी  
वाप घर वार सही देख्यो  
मगर भरतार नही देख्यो  
बोलकै वम वम वम भोळो  
भाग को आदपाव गोळो  
नेम सै तीन टेम खातो  
सदा सोदं मे भरमातो  
आज क्यू करडो खेल्यायो  
लहकोकर सोक्यू मेल्यायो

मोर सामटकर सोदं मे  
एक को एक तीळ-तागो

वीनणी रोटी कररी थी  
नणदली लोटा भरगी थी

जेटत्री दफनर ती कँ था  
 छान की वाट उडीकँ था  
 जिठागी नीचँ न्हारो थी  
 माम मगिया मटरारी थी  
 ममुरजी न्हा-धोवर मार्चँ-  
 मना में रामायण वाँचँ  
 ागीजी इव तक पोढयाथा  
 चादरो मू तक ओढया था

दीनगी सोवर क दी थी  
 तावडोनिक्ळ्यायो, जागो

माग चूल्हे पर मीजँ थो  
 थाल मे आटो भीजँ थो  
 माकडी मरज्याणी जायो-  
 प्हाड को सलाजीत खायो-  
 जुवानी कँ जोग छायो-  
 चाणचक माकडियो आयो  
 छात पर पैत्या तो गाज्यो  
 वाद मे वम-धम कर भाज्यो  
 छात की डोळी म भाकयो  
 माल की कीमत न आय्यो

मारकँ भँक्ळाई उठ्यो  
 न जागँ गयो नाड नागो

कूदके पड्यो कडकडाके  
 उवाळ्योडा आलू ठाके  
 भटाभट गवळा मे साके  
 वैठगो आटे पै जाके  
 वीनणी मूती मी जागी  
 वार-तोवा करती भागी  
 जणाँ म्हांटो लैर्या भाज्यो  
 कडककर दाँत दिखा गाज्यो  
 हाथमे कवजो जद आगो  
 भूरखा वटका मे खागो

इया बो धोळै-दोपाराँ  
 देखता देख' गजव ढागो

वीनणी भिडताही हारी  
 जोर सै भट तोवा मारी  
 हाथ को खाकरके भटको  
 आँगळ्या के भरके वटको  
 क ओज्यू दात दिखा साके  
 दूकळी पर वैठ्यो जाके  
 वार मुण सामू भाज्याई  
 जिठाणी नगदल भाज्याई  
 पियाजी इव भी पोढ्या था  
 चादरो मू तक ओढ्याँ था

ह्याव हाळा सुसरोजी परै-  
सड्या करर्या, 'भागो भागो'

वीनणी जद तोवा मारी  
ससुरजी भी सागै मारी  
दोनुवां का रोळा सुणकै  
'छुटावो रै कोई आकै'  
पडोसण पाडोसी आया  
दूद दूता घोसी आया  
इया म्हीलो भेळो होगो  
विना तीज्या मेळो होगो  
साजना इव भी पोड्यां था  
चादरो मू तक ओड्यां था  
दूर से ही दुतकारै था  
जेठजी लिया एक पागो

सुण्यो घर मे रोळो-बैदो  
चागचक अणआयो फँदो  
खोल आंखलिया-माखलिया  
कसमजी पाट्या मूद लिया  
जिठाणी कहयो अजी जागो  
वीनणी नै माकड खागो  
मुगी जद सूत्यो ही बोल्यो

अरै खायो ही है मोल्यो  
 जणा कुणसोक नार खागो  
 मचा राखी जागो-जागो  
 मना काची नीदा छेडो  
 खाणद्यो, खागो सो खागो



## फल्डाफाड

पैल्या तो थे काढता, साजन सीधी टाळ  
 कैया वावण लाग्या इव थे उट्टा वाळ  
 इव थे उल्टा वाळ, ल्हकोली थारी चोटी  
 ज्याणू धोखो खार जुवानी आज्या ओटी  
 सिंगर पिंगर कर फिरो, घणा गेल्या गेल्या तो  
 इम्या जुवानी में भी वोन्या था पैल्या तो

पैल्याँ मिर में घालता ये सिरस्यू को तेल  
 इव कय्याँ घालो सदा लोसन, अतर, फुलेल  
 लोसन अतर फुलेल सैट गावा मे छिडको  
 चाळीमी पाछै थे आछयो ल्याया फिडको ।  
 थारो मन भी बढ्यो उमर कै गैल्या गैल्या  
 इस्या जुवानी मे भी कोन्या था थे पैल्याँ ।

न्हावा सदा इकाँतरै जद गरमी आज्याय  
 रोजीना कैया करा काया सै अन्याय  
 काया सै अन्याय लगाणू ठडो पाणी  
 हप्तै सै न्हावा सावण सै फातिग ताणी  
 वी सै आगै फुलिस्टोप न्हाणै को चावा ।  
 दीवाळी का न्हाया छारडी नै न्हावाँ ।

जाडो आयो माजना थारै जी को फद  
 न्हाणू गोणू कर दियो थे कदको ही बद ।  
 ये कद को ही भूल गया पाणी को मीनिग  
 कोर्ट थारै जिम्यो चलाई ड्राईक्लीनिंग  
 मारी रात रिजाई म मूँटो नहि काडो  
 वाळ जोगो थान या के कहमी जाटो ।

काठी गजी पैरकै पैरो एक कमेच  
 दो दो सूटर ठासकै जड बटगा वा पेच  
 जड बटगाँ का पेन कोट ऊपर स ठूसो  
 बीकै ऊपर गोडाँ ताणी ओडो वूसो  
 ईने जाडो कहूँक कहुँ साठी बुदनाठी  
 लियाँ कहवै पै फिरो गत दिन कामळ काठी ।

गरमी आई साजना हुया उघाड—पघाड  
 पड्या रूहवो पखै तळै दिन भर भीच्याँ जाड  
 दिनभर भीच्याँ जाड मतावै गरमी थाने  
 ई गरमी को पड्यो न वेरो डाकदराँ नै  
 जद सै चाँदी कँ भावा मे नरमी आई ।  
 थाने दोन्यू कान्याँ सै ही गरमी आई ।

उल्टा सोदा थे करो तेजी मदी खा'र  
 आंगळिया सँ ल्यो'र ये वेचो वीच वजार  
 वेचो वीच वजार, फरक सै जोटा खावो  
 सुपने मँ भी थे रात्यू खावो'र लगावो  
 ये ताम्बूणी करणें मे ही होरचा मोदा  
 पण मन्ने लागै ये मगळा उल्टा सोदा



छुट्टी आई माजना मोत्यो थोडा ओर  
 मडे नै होवै सदा माढे दम पै भोर  
 माढे दस पै भोर निमट कर मूडो वीवो  
 पीकर चा' सिगरेट ताण कै ओज्यू सोवो  
 पुरव जलम मे ये माग्योडी करी कमाई  
 मौज करण नै थारै ही गुण छुट्टी आई

व्याकर चान्या दो जणा सग उराती तीन  
 गुटगुटियो सी वीनणी, लटखटियो मो वीन  
 लटखटियो सो वीन हाथ पग छोटा छोटा  
 चालै जद वीनणी धरै पग ओटा ओटा  
 उन वामण नाई नै । आछचा गलै घाट्या  
 जागै कोई घुट्टा घुट्टी व्याकर चाट्या

प्रेमाता भागी घरा घड रर थारी सोड  
 युण रूपन्तो कर मकै जो थारै मै होड  
 जो थारै म होड करै वै हयसी मग्गा  
 भगो भीन तिलाव मवी थारै मे भग्गा  
 चलनो फिरतो एक अजय घर अठ वग्गागी  
 घटकर थारी सोड, घरा प्रेमाता भागी

ल्याओ ल्याओ को वण्यो यो ग्रहन्व जजाळ  
 ल्याओ साजन वाजरो गुड'र चणै की दाळ  
 गुड'र चणै की दाळ मिस्च धणियू अर जीरो  
 दो कत्रजाँ को हून एक धोती को लीरो  
 बबई सै कठो, जैपर सै चूडी ल्याओ  
 दिनगे मै सज्या तर खाली ल्याओ ल्याओ

स्हारै स्हारै वी पडी कोठै मे दो मूण  
 पीसी चीणी एक मे थो दूजी मे लूँण ।  
 थो दूजी मे लूँण समझ कै वीनै चीणी  
 लियो चूरमू चूर गेरकै दूणी तीणी  
 खाताँ ही चणगाट उठ्यो चोटी मे म्हारै  
 दो मूणाँ नै नही मेलणी स्हारै स्हारै

## नयो पीमो

रिपिय का मा पीमा रोगा रामारयो देवा र ३१  
(म तुगाया नाम)

माटो माटा उपरिग पीमा तो गारमिष्ट र माथ गया  
पीछे छापी म एर तातर टाळा रान्यो गया यो  
जद रामरग न राज मिन्या तातर पुगणू म्र दवायो  
तार्ग वा मूडा तीन निया, छोटी पीमो मामे आयो  
पण चीमठ वा तू मो होगा, जनें जारर पूछो कोई  
रामारयो देयो रे होई ।

रिपिय का सो, पीसै ता दो, ओ इमो अनर चाल्यो हिसाव  
जीनें समभगनें आकडिया भी कर बळ्या माथो सरार  
इय नई गरिणत, इव नई म्हाजनी, क्यू आयो फैनाळ नयो  
म्हाटो नानू सो ह, पण लोगा कै जी को जजाळ हुयो  
वै बैळ्या चीम चाळ देवै, चाहे हरान होयो जोई  
रामारयो देसो के होई ।

मालग -

म तो वूणी कै बखत मूळिया को खरलो वेचण ल्याई  
तो एउ मोडियो आ पूछयो पीमै की कै दी है माई  
मै एक बताई, वो ठाई अर भट वेलो मो पकडायो  
मूळी कै बटको भर'र कह्यो, ले नई चाल को हू ल्यायो  
मै रोकर रहगी कर्म ठोक जद लड्यो म्हारलो नंगदोई  
रमार्यो देखो के होई ।

पँडतागी -

म्हारै बै आज चूनिय को जद सावो पुजा घरा आया  
तो बै गणेश पूजा मे आया, पीसा आ बचिया ल्याया  
गिणती का बै ही खरा पाच, जाँका माचळ्ळा होय तीन  
ठग कर गणेशजो नै, वामण नै, भलो बण्यो चूनिया बीन  
तू करदी आधूआद, डया पडत की पडतागी रोई  
रमारयो देखो के होई ।

सेठानी -

जाये काट्यो मालियो आज रिपियै का मो पीसा ल्यायो  
गिण कै देरया, पाया पिच्याणवै, पाच कठे ही गेर्यायो  
ल्याकर नानडियै कै आगै ही मेल दिया आडू वीरो  
मूठी भर भरकर खेलै हो, सो चाणचकै गिटगो छोरो  
बच्या चुगाणवै, बै लेकर भी बैद न मेट मक्यो मोई  
रमारयो देखो के होई ।

जोतगग -

मेरे घर हाळो सनीवार नै, माठ घरा मे फिर फिरके  
कर लेतो रिपियो एक चित्त कहैया-जैया वो फिर घिरक  
इत्र कद तो सो देळी लागै, कद रिपिये का पीमा आव  
दुनिया मगळी स्याणी होगी सै वो ही पीमो खुडकाव  
भखरी डाकोतण खडी खडी मन्जी म्हाराज करी खोई  
रामार्यो देखो के होई ।

अटळारू -

पीमै पीसै मे तुलत्यो रे ऐया को हलो सुणतार्ई  
मोटी सी एक बीरवानी वी काटै पै तुचवा आई  
मुगदर सा पगल्या ठार चाणचक विनां कह्या ही चढ बँटी  
चढता ही सूई गरणाफेरी साकर हूटी, वा ऐठी  
भट दियो नयो पीसो निकाळ अर चाल पडी सामट लोई  
रामार्यो देखो के होई ।

## सकलाई

गोर मिट तेरी सकलाई, मेरे से वरणी नहि जाई  
वरती पै पटडिया विछाकै  
इजन नै वोग्यां मै न्याकै  
दो प्हाडाँ कें बीच अवेरी गुफा खोदकै रेल चलाई  
इस्या इस्या कळ पुरजा आया  
अममाना मै मिनख उडाय  
विना पाख को मिनख, कागलै को काको तीतर की ताई ।  
विना तार रेडिया कितानै ?  
वन है तेरै मात पिता नै ।  
दिल्ली मे बैठ्या बोलै तो भोजामर में पडै सुणाई ।  
एक नयो राकट चाल्यो है  
वरती नही चाद हाल्यो है  
स्पूतनीक रुम को गीगलो, अमरीका है जीकी दाई ।  
दो मोटा लडवा हाळा है  
सै विल मे वडवा हाळा ह  
कुणसो चोखो कुणभो न्यावू, इन्ने कूवो इ नै खाई

## सूका बादल

फैल रह्या मारै अवर मे-  
घोळा-वोळा सूका बादळ छोट्टा छोट्टा  
लागै जागै कोई सीसतोट चेजारो-  
लीलै थोथै कं ढोल पै-  
मार गयो हो अठेकळी को एक हाथ चलतै रम्तै हो  
और अनाडीपण सै रग्गो हो-  
ढावा ही ढावा सारै

के कोई वी चँदर लोत मे मुरज लोक मे  
काळी पीळी आँदी आई  
और उडाल्याई सूत्योडै लोगाँ और लुगार्याँ का  
चादरा पजामाँ कोट जाँगिया  
लैगा धोती जफर ब्लाउज धोळा धोळा  
जो इव ताणी उडता जारया  
के कोई कागद के खुदरै व्यौपारी का  
बीस तीस का दस्ता उटग्या पाच मात जो-  
फाट गया है, मुड मुडकर के जघा जघा सै

अवर मे सारे उडर्या है सूका वादळ  
 लोग सोचर्या, ये के कहैने न्ह्याल करैगा  
 विना गाज का, विना वीज का  
 गूगा बै'रा, काणाँ खोडा, लूला लँगडा  
 नोसिखिया रँगरू ट, फौज इ दर की विगडी  
 भरती होगा सूका वादळ-  
 छोटा छोटा बिन ट्रेनिंग कै  
 आसै कुण के न्ह्याल हुवैगो ?  
 आसै कंको काम सरैगो ?

लोग भूलर्या है  
 ये छोटा सूका वादळ-  
 वडै वादळा के जलूस को रस्तो देखरण नै आया है  
 थ्यावस राखो



## विरखा आगी विरखा आगी

जाग्या जद सँ ऊँन्याळो थो, क्यू वादळिया भी होर्या था  
कोडो नगरै सा, नाळँ मा, कालिज का जार्या छोर था  
कँ बजगा ओ वेरो कोनी, घटी न सुणै जायेकाटी  
जाणू पडमी, चाये रस्तै मे ही छितज्या म्हारी माटी  
रँ कडक कडकक वादळिया, म्हानै तू के धमकार्यो है  
आजे, ओ करडी छाती करकँ विना अडाणी जार्यो हे  
इतणी सुगकँ वादळ डरगो, भट भाग गयो जैपर कानी  
पण ब्रीकँ तो ई डरण सँ सा म्हारी ही होई हानी  
'ग्नी डे' नी छुट्टी होती, इतणा म्हे था कद बडभागी  
विरखा आगी विरखा आगी

मवने कालिज में जार कह्यो-म्हे वादळ जीत'र आरघा हा  
आ सोळा आना माची है, थाने म्हे नही भुळारघा हा  
पण कू ण सुणै हो, आप आपकँ काम लागर्या था सारा  
वारा बजता ही शुरु कर्या, मै कानी कानी खखारा  
नापडो निक्ळ्यायो डव थो, कर्हया-जैया नाको पायो  
जाना ही रोट्या क मागै म्हे एक ओळमू भी लायो

देरयाक, आज भी भूल गया, मैं कै दी ही जाता जाता  
 म्हारी नथ को मोती दूट्यो, ये और घलाल्यायो आता  
 वारा म्हीना से बैठी हू, थारै घर मे वूची—नागी  
 विरखा आगी विरखा आगी

दोपारा ओज्यू देसा हाँ, म्हाटो वादळियो भाग्योडो  
 जंपर से फोज बुला ल्यायो, इब वग'र पुग्यो लवो चोटो  
 इ दर नै जाकर कह्यो—भुन्भुनू हाळा मनै डगावै है  
 मेरो न रोब मानै कोई विन छत्ता आवै जावै है  
 मन्ने इसपेसल हुकम होय तो दूट पडू बीजा जाकै  
 कितरण चित्त मुवायायो आ छू रिपोट थानै आकै  
 इ दर धमकायो, म्हारो चाकर होकर क्यू भाग्यो डरकै  
 जा आज भेजर्यो हू तने म्हारा पुलपावर देकरकै  
 म भट पिछाण लीन्हयो वीनै, म्हाटो वो को वो हो सागी  
 विरखा आगी विरखा आगी

वो पुग नजीक म्हारली छात पै गरज्यो बोल्थो, आर्यो हू  
 मैं भीतरणै से वोल पड्यो, आज्या मैं कै घबरार्यो हू  
 वो हुकम लियोडो इस्पेसल, ओ तानू म्हारो सह न सक्यो  
 मारचिग बैड वाज्यो विजळी की ले तलवार चल्थो न थक्यो  
 पैल्या तो कुछ भुरिया छोड्या, पाछै चालण लाग्या नाळा  
 च्यारु कान्या से घेर लियो, घरनै वादळ काळा काळा

मिण्टा मे नाळा खाळा हुया, बो गयो खाळ जोडै ताणी  
 गळिया मे हाट मकानां मे, मारै भरगो पाणी पाणी  
 टेणा पै भडभड मुण'र चिमरू, छोरो जाग्यो छोरी जागी  
 विरखा आगी विरखा आगी

ओजी छोरे का वापूजी, आकर थे भी क्यू न्हाल्योना ?  
 वारो हफतै को मैल, बैठ नाळै कै तळै धुपाल्यो ना ?  
 हक गिरम्या मे भी दीतवार स दीतवार ही न्हावोगा ?  
 वाळा मे भूठो तेल घाल, तडकै भी यू ही जावोगा ?  
 वामे बैठणिया मासटरा को डूव्योडो मारो स्हावो  
 के विना नहाया ही आवै है थारी कालिज को बावो  
 म छोरा की काप्या देखै हो जीसै वीनै क्यू न कह्यो  
 पण दगदग नाळा छुट्या देख, वीस निचलो ना गयो रह्यो  
 विरखा विरखा करती करती वा कमरै में आई भागी  
 विरखा आगी विरखा आगी

क्यू गिरम्या विरखा कररी है विरखा ने यू क्यू तरसै है  
 ओ मर्याळ है बावळी क ई मे कदमी मोनू वरसै है  
 ओ खाड रत्योटी होतो तो म्ह विना कह्या ही न्हालेता  
 भर भर कर कू ली घडा टोप, निवळ्या तावडो मुका देता  
 पण तू जाणै, म्ह जाणा, मै जाणै ओ है मादो पाणी  
 ई में सोडो सोडा होगा, न्हावा मे के आगी जागी ?

कीड़ा की वाता जाणगिया डाकदर रोज ममभावै है  
छोटा कीडा ग्वान कै मायकै रोज पादरा जावै है  
तू भी मत न्हावै जरा आज, लागण दे विरखा कै आगी  
विरखा आगी विरखा आगी

में कू हू ज्यादा पढणै सै भी होज्यावै मायो खराब  
क्यू ये भी स्याणा वेसी होग्या पढ पढ अगरेजी किताब  
कोई थाने जाण'र भोळा, करदी होगी यू टकसोळी  
कीडा भी कदे इया जावै ? पण मैं कोन्या इतणी भोळी  
बो गयो जमानू आठ कोस, जद चाये जिया भुळा लेता  
आलू को नाम बतारकै अडा दो च्यार खुवा देता  
में कू हू ई पढणै-लिखणै में कदतो पिंड छुटैगो के  
आ पाँ-पाँमेरी पोथ्या सै थारो जी कदे हटैगो के  
मैं कितणी बार कह्यो थाने पण थारै एक नही लागी  
विरखा आगी विरखा आगी

तू साची कै है भूठ नही, पण इब ग्यारणने क्यू आई  
मैं तो आगै ही पिमर्यो तू तू भी क्यू अठै चली आई  
तू जाणै है, विन न्हाया साया मैं कालिज में जाऊ हू  
साडे बाग वजता वजता मैं मगतो पढतो आऊ हू  
आता ही तेठा नया मिलै, मारो मरीर ई में जासी  
आ गोजीना वी विरखा तो म्हारो लोहीडो पीज्यासी

गोडा दे दीन्हा पैट्या ने, प्राफ्या दे शीन्ही पोया न  
 पाछें भी दुनिया स्यारें ७ जम वे मिनतो म्हा मोया न  
 क्यू वच्यै गच्यै हाडा नं आ छोग की राप्या सागी  
 वावळी विगी विरखा आगी

वाता वणा'र धर सै निवळ्या रस्तें में था गाडा गोळा  
 देख्या, मारा साडा पाणी सै भरगा था पोळ-पोळा  
 कोई कहर्या था मोज हुई, स्यायद दम दस आगळ होगी  
 कोई भीसै था म्हानें तो आ डबो दिया वाळ जोगी  
 में सोचू हू यू कैवा हाळा साळ साणिया ही होगा  
 म्हाटा लगाणिया स्याणा था वी पगडी हाळ' नं वोगा  
 वो आस्या साळ चलार्यो थो म्हानें तो वठें दया आगी  
 विरखा आगी विरखा आगी



## जरद को पान

जाडो आयो जणा भायला मन्नं वोल्या—  
तू इव तीम वरम को होगो  
परा इवतारणी मीठा पान जनाना खावै  
क्या को कवि है ?  
कदे कदे तो तू जरद को भी सेवन करकै देख्या कर  
बँगलो पान लगाकै, चुन्नू तेज गिराकै  
जरद की दो-च्यार पत्तिया—  
अर किमाम की सीक भिडाकै  
जाड तळै दावकै पान नै  
धमण नै निकळै जद सारी दुनिया चकरी होती दीखै  
पीक एक दो थूक्या पीछै  
इस्यो मजो आवै-भ्हे तन्नै किया बतावां  
कविता की भायल्यां प्रेरणा और कल्पना  
धोन्यू मागै सागै आवै  
जद बेरो पट्टैगो आनै ही—  
मरदाना पान लोगडा कियौ बतावै ।  
मै मोची—मीठै का लागै डेडा पीसा  
तो बी कविता कोन्या उपजै

और अटीनें गाली चार पीमटी में ही  
कविता की भायल्या प्रेग्गा और कल्पना मार्ग आव  
के घाटो ह ?

इतगी वाता मोच-माच कं  
में बोल्यो 'भई थारी मरजी  
पण मेरं तो इस्यो पान खाता ही भट उल्टी हो ज्याव  
पण वं बोल्या—

ऐया की उल्टी होयोडी म्हारी बोळी देम्योडी ह  
इवकं खा तू

म्हाने उल्टी की मुल्टी करणी आवं ह ।

पण खाता ही चरमराट लागं जद त् पीर न थकिये  
भलो, पान नै मना थकिये

में बोल्यो—भई थारी मरजी

जिर्या कहवोगा, वियां करू गा ।

पनवाडीडो मेरं मूडें कानी देख्यो, मुळक्यो, हाम्यो  
एक मिन्ट में ही जरदै को पान बांदकं, दियो हाथ में  
खाता ही चण्णाट उठ्यो चोटी में जाणें—

फलकं वं गासिये विना ही—

खागो हो मिरच को फोलरो ।

मिर ऐया को चकरी होगो

ज्यू कूवं को भूण फिरं है

और भूण का डडा मा दो हाथ उठाकं, भोड पकडक

वरी जनेवू की गीती—  
तो आख्या सै पाणी निकळ्यायो ।

माथो भण्णावण नै लाग्यो  
एँया लागी जाणै कोई  
कविता की भायल्या प्रेरणा और कल्पना  
माथै पै चपला की मारै  
अरै राम तू रिच्छ्या करिये  
धायो म प्रेरणा-कल्पना सै मन्नै तो कोन्या चाये  
मैं तो मेरी ई तुकबदी सै ही काम चला लेवू गा ।

मैं बोल्यो-भइ जी घवरावै है इव मेरै उट्टी होसी  
वै बोल्या-पीक नै थूकदै  
गिटज्यागो तो जी घवराकै—  
साच्याणी उल्टी हो ज्यागी, मोच लिये तू  
पण मैं वाँका क्याका ये उपदेस सुणै थो  
एक मिण्ट में उल्टी करकै  
स्हारै बैठ्यै भडभू जै की वाणी अर मू फळी भाटदी  
ठडै ठडै पाणी का कुळ्ळा करकै—  
ठडै पाणी की माथै पै दो मू ण गिराई  
आदी घटा पोछै चेत हुयो जद सोची—  
देखो किसिक प्रेरणा आई ।  
देखो किसिक कल्पना आई ।



पण चर्भ की बात बतावू  
 एया उल्टो करतो करतो ही—  
 जरद का पान चाबणा सीख लिया मैं  
 और एक दिन डबल पान खाकं जरद का—  
 म्हारे हाळ ही नोर मे, बड्यो रामलीला देखण नै ।  
 भीड-भडक्क मे ही चिथतो, खिचतो, भिचतो  
 म आगं मी जाकं बैठयो ।  
 वे दिन कोई 'रावण बव' थो  
 राम राम ! या इतणी भीड कठे से होगी  
 भिडे टाट मे टाट पगा से पग चिथर्या है  
 गोडा भी कोई क्याने सीदा करलेवे ।  
 जुलम करलिया आपा ई भीड मे बैठकं  
 पण इबतो एया का काठा फौसगा आकं क  
 मुड करकं भी पाछो कोन्या देख्यो जावे  
 पाछा निकळा भी तो बोलो कैया निकळा  
 जुलम कर लिया ।  
 तीन-च्यार पीक तो वारण ही थक'र आणू चाये थो  
 इब थका तो कठे, नही थका तो कयाँ चैन पडंगो ।  
 जुलम कर लिया ।

म्हारै बैठयो एक जणू बोल्यो क आज तो रावण मरमी  
 में मन मे मोची, रावण तो के तैरो बदमी मरमी

पण, आपाँ तो माच्याणी मरगा ।  
 अरे राम तू लह्याज राखिये  
 ओज्यू तो मैं जरदो खावू  
 तो तू तीन-तलाक भलाही मनै वढादे ।  
 अहो कृष्ण भगवान लाज तू राग्नी भी थी  
 द्रुपद-सुता की भरी सभा मे  
 बी सै भी ज्यादा इव मेरी भरी सभा है ।  
 लाज राखिये मेरा सिरजनहार सावरा ।  
 गज की बिनती सुणता ही तू भाज्यो आयो  
 अर बीने ग्राह सै बचायो  
 नरसीजी का कारज मार्या  
 और भीतसा भगत उबार्या  
 मेरा सिरजनहार । भगत पै बिपदा आई ।  
 आव सावरा आव । भगत पै किरपा करके  
 च्यार आगळ की जगा दिखाके  
 आज भगत के एक पान को पीक थुकादे ।  
 और हूवती न्याव वचादे ।  
 आव सावरा ।

इव मैं थाने किया वतावू  
 बिनती सुणता ही सावरियो  
 पगा उभाणै भाज्यो आयो



और हाथ की हाथ, हाथ न ऐया काढ्यो  
जागै कोई गोजी मे वीछियो लड्यो हो ।  
काड्यो जद ताणी तो मन्नै भी दीखै थो  
पण वो उठकै हाथ—

म्हारली तळै कनपटी कै ऐया को पड्यो भनभनातो कै  
मैं तो सुन्नू होगो । मुरछित होगो  
कद रावणियू मर्यो  
घरा में कदसी आया  
मनै आज ताणी भी कोई याद नही ह



## वीनणी मे आज भूतणी आई रे

आज वीनणी दिनगे में ही घर कर राम्यो ऊपर नीच  
पटक पछाडा तात फटाका, आम्या नें खोलें अर मीचें  
डाटी टटै न पाच जण्या सें, पकड पकड वावरिया सीचें  
गिगै न कोई माम् दादम, दीगं जीपें जरडी भीचें  
जद ये कोतिक देग्या, मासू भाजी गुवाड मे आई रे  
भाजो भाजो ओपरी बलाय दवाई रे  
वीनणी मे आज भूतणी आई रे

मांस बली टावर है, ऊचो नीचो पग पडगो होसी  
के रामारी राखूडें पै ठोड कुठोड बैठगी होमी  
लाडेसर मैदी के हाथा, बखत कुबखत चलीगी होसी  
बी गूदी मे सुखलै की भू खडो पुकारै बडगी होसी  
म्हीनै पैली की बात, बठीसैं निकळी एक लुगाई रे  
तो बा वीनै भी तोड'र परै बगाई रे  
वीनणी मे आज भूतणी आई रे

रोळा सुणकै जगत भुवा भी आकर बोली सै मरज्यावो  
खडी खडी के देगो हो, रामार्यो काजीजी नै ल्यावो

दादी बोली काजी मे कोन्यां निकळै, देवी नै ध्यावो  
 मंदर हाळै बाबाजी को मोरो खुळा खुळा कर प्यावो  
 आ होज्यासी घोडै मुवार बस दो मोरा प्याताई रे  
 जाणै मिस ही कररी थो आ डवताई रे  
 वीनणी मे आज भूतणी आई रे

मुगनी बोली, सात कुवा मे सात ठेकरी तो पटकावो  
 काळी हाडी मे गुड धरकै, चौरावै पै डवी गडावो  
 मँमदण बोली, दीतवार नै भैरूँजी कै तेल ढळावो  
 मालासर हाळै बाबै पा जाकर ये वूजा उघडावो  
 वो खड्यो खड्यो परचा देवै, म्हेभी वीपा उघडाई रे  
 वो थारी भी उघाड देसी जाताई रे  
 वीनणी मे आज भूतणी आई रे

चाणचकै ही एव नुगाई माचै पर मै कूद'र बोली  
 म्म्म्म्म्म्म् मै म्हाराणी कोनी कोई वादी गोली  
 आ साजादण देख पालणू, हास हाम बड बडकर बोली  
 जीमै मै घोट्या बँठी हू, बोलो मेरी आगी—चोली  
 मै ही उपरनी वाजू म ही वाजू म्हामाई रे  
 डव थे मेरी देखोगा सक्ळाई रे  
 वीनणी मे आज भूतणी आई रे

यू सुण मासू उछळी वौली, वीपा तेरा पग पकडास्यू  
 हे म्हामाई माई । तेरै जाया व्याया सभी धुकास्यू  
 बबई से छोरो आता ही गँठजोडै की जात दिवास्यू  
 ई नै राजी करदे, तेरै मठ पर रातिजगो करवास्यू  
 वा यूँ कहकर भट धोती पर दो आगी रखकर ल्याई रे  
 अर वार वीनणी पर सुकळा कै छाई रे  
 वीनणी मे आज भूतणी आई रे

एक मोडियो भाडो देवा, विना बुलाये घर मे आयो  
 मोरपास की भारी बाध्या, आता ही वो हुकम उढायो  
 में इव्वी काडू, थे पाच पतासा, ग्यारा पीसा ल्यायो  
 सवा सेर आखा कै सागै, पैनू सो चक्कू मगवायो  
 वो चक्कूमै घरती पै आडी-टेडी लीक कढाई रे  
 ल्ल मतर, चिडिया फुर, भूतणी भगाई रे  
 वीनणी मे आज भूतणी आई रे



# वाने पूछो क्यू है ?

जो बीच सडक के चाले है  
 तागाळ्हा ने दिन घाले है  
 वाने पूछो, सडका के स्हारै-  
 ये फुटपाथ वण्या क्यू है

जो काटा से फलका तोडे  
 जो चमच्या से लाडू फोडे  
 वान पूछो आखिर थारे  
 ये दो दो हाथ वण्या क्यू है

जो 'पैसलीन' ने ढूँडे है  
 जो 'सिवाजोल' ही रूँडे है  
 वाने पूछो ये वैद बावळा-  
 है के ? क्वाथ वण्या क्यू है

घरहाळी भीखे वार वार  
 टक्को कदे न ल्यावे कमा'र  
 साली टावरी वगेरण ने-  
 प्राणा का नाथ वण्या क्यू है



आमद थोटी पग गरच घरू  
 भाड नै फोडर्यो गर चरू  
 उखतार्यो जीसे जरू-जरू  
 तो चालै तण्या-तण्या वयू ह

कानी कानी ठीचा रारया  
 लीफटी पीटता पण जारया  
 वानै पूछो, वै जाण-बूभ-  
 कादे मे जाय मण्या वयू ह

भीतर से सूकर कुमळारया  
 सूक होठा गाणा गारया  
 वाके वापा नै पूछो, थारा-  
 वेटा वण्या-ठण्या वयू ह

भुखमरी सतारी भाया नै  
 पूछो जा सबी लुगाया न  
 मै बेरुजगारी का मिकार-  
 दिन पै दिन जाय जण्या वयू है

## घणी खारी होई-

एवर मेरें घणें बडें माणीतें घर कें—  
बडें आदमी को जीमण को न्यू तो आयो  
मैं इतरू हर्ग्यो'र उमायो क  
दिनगे मैं मज्या तक  
मारो दिन मैं खाली—  
रगट रगड डाडी करणें मे  
न्हाणा धोणा उजळ धोळिया करणें में ही  
घणू बितायो  
जाणें कोई छैं छैं टावर होया पीछें  
व्या-भुक्लार्च की सिलवर जुवली मनांणनें—  
नोमिखिया सम्मेलन हाळा-  
सभापती कें पद कें खातर मने बुलायो ।  
मज्या होतां होतां थानें कियां बताऊं  
मेरें कितणू चाव चढ्यायो ।

आठ वजे मी मोटर को सो—  
खुडको मन्ने पड्यो मुणाई  
जुग जुग जीवो, ये है ठाठ बडें लोगा का  
एक आदमी ताणी भी मोटर भिजवाई

आज दिखा दूंगा लोगों ने क  
 वडा आदमी भी बडपण मैं—  
 मेरो कितरू मान करै है ।  
 ड्राइवर ने, पट्टैगो जद तो यू ही मीत मे पटाकै  
 और नही तो रिपियो बेली देकर कूगा  
 मोटर की मोरियाँ खोलकै—  
 वीरै धीरै बीचू बीच बजार काडने  
 जो भी देखैगा एवर तो—  
 मगळा मुन्ना सा हो ज्यागा'  
 पण जीने म्हे मोटर समज्या  
 वा म्हाटी माल सै लद्योडी ट्रक निकळ्याई ।

आखिर मोटर आ ही पू ची  
 अर म्हे भी जीमण ने आखिर जा ही पूँच्या  
 वोळा बाजू पैत्या सै भेळा होर्या वा  
 मूट वूट नकटाई ध्यार्या  
 च्यार जणा रम्मी खेलै था  
 च्यार-पाच खोलकै पाचसौ पिचपन वा टिगा—  
 अमलीडा पड्या पड्या मिगग्रेट म्हारता  
 धुँआ उडा रेडियो मुणै वा  
 वाँ वाव् लोगों मे म्हारा गोनी-कुडना  
 'याग ही चोटै चिनकै था ।

म जाकर कै बैठ्यो ही यो  
 इतणै मे ही नौकर आकै म्हानै बोल्यो  
 'चालो बाबू जीमण चालो !'  
 यू सुणतां ही मगळै का सगळा बाबूडा  
 नौकरियै कै गैल होलिया  
 बड्या एक कमरै में जाकै  
 हाथ धोयकै हाथ पू छकै  
 बी कमरै मे टबल अर कुसिया पडी थी  
 जद में सोची—  
 या तो अठै रमोई कोनी, कठै जीमस्या ?

पण बै सगळा वापै बैठ्या—  
 जद म भी बस बठै बैठगो  
 अर साच्याणी बठै परोस्योडी थाळी आवण नै लागी  
 मै दो पाटा आमै-सामे रखकै चोकै मे जीमणियूँ  
 आज विनां ही पग धोयां कुडसी पै बैठ'र जीमण लाग्यो  
 जीमण के लाग्यो थाळी नै निरखण लाग्यो !  
 म्हे मीठै मे डबताणी बस लाडू पेडा खायोडा या  
 रुदे कदे ठाई बिद बैठी हो कनागतां में जीम्या अर—  
 घणू जोर भार्यो तो बम ग्वाई जलेविया  
 ई सै आगै भी कोई मीठो होवै ह  
 म्हानै बेरो ही कोन्यां थो !

पग थाळी नै देव आज आख्या चकरागी  
 भांत भांत की विरै विरै की बीस मिठाई और मळाई  
 तीस चटपटी, पूरी साग कचोरी ऊपर सँ न्यारा था  
 दही बडाँ की प्लेट ममोसा के स्हारै थी  
 न्यारी न्यारी चीजा की मँ न्यारी प्लेटाँ  
 जाँके सागै मँमें न्यारी न्यारी चमची ।

मँ मोची-इव कुणमी खावू , कुणसी छोडूँ  
 जे इनगी चीजा को आज परोसो आतो  
 तो धीरै धीरै सँको सुवाद ले लेके  
 पूरै आदँ दिन मे खाता  
 पण इव आदी घटा मे ही कुणसी कुणसी नै सलटावू ?  
 कुणसी चाखूँ ? कुणसी खावूँ ?  
 अर जुगसी का चाब चाब केँ भरछ उडावू ?  
 मँ सोचै ही थी इतणें मे नौकर आकै-  
 बीस पचीस छुर्या केँ सागै  
 छोटी छोटी पीतळ का सी जेळो धरगो ।  
 मँ बाने देखी तो डरगो ।  
 मँ सोची भोजन करताँ ही कोई को अपरेसन होसी  
 पण सावरियो लह्याज राखली  
 मरी या ध्यारणा एकदम भूठी निकळी  
 वाँ जेळ्या नै वै वावूडा 'काटा' केँ क  
 रोप मिठार्याँ मे वाँमे ही खावण लाग्या

मूह अंगरेजा का काका हा  
 भन्नै डयाँ दिखावण लाग्या ।  
 में भी वाँकी देरयाँ देखी रसगुल्लै मे-  
 काँटो रोप'र ऊपर ठायो ।  
 पण उठणै कं पैल्या ही बीको रम उछळ्यो  
 अर मेरी आरया मे आयो ।  
 रसगुल्लो नीचै ही रंगो, खाली काँटो मू मे आयो  
 पण यो अकरम होताँ बस मै ही में देख्यो  
 मै ओज्यूँ मै आदी फाड उठाकं बीकी  
 काटे सै मू मे सरकाई  
 जणा लाळ सागै लटक्याई ।  
 अर काँटो जाकरकै कागलियै मे गडगो

मै काटे नै पटक परंसी, लगा बास्ते  
 चमची ठाकं तोड कचोरी खाणै की सोची डवकाळं  
 पण चमची कं नही पकड मेँ आइ कचोरी  
 इब आगै तो हुई कचोरी, पीछै पीछै चमची भागै  
 ऐयाँ कोई पाँच मिंट तक दोन्यूँ रेम करी थाली मेँ  
 आखिर वा नीचै पडकर ही पीडो छोड्यो ।  
 में सोची आपाँ भी कैया का मोथा हाँ  
 कचोरिया कं भू छ्याणो वाँथेडा पडगा  
 पैल्या मीठो मीठो तो सारो खालेता  
 इया सोचकै में चमची नै

खीर मलाई की प्लेट के कानी लेंगो  
 भरके चमची खाई तो खाता ही मेरो  
 बठे चरडदेसी मारो भू डो उपडचायो  
 वा वाल जोगी प्लेट तो साटै चरड दही की निकली  
 पण में जाड भीचके रेंगो ।

इतए मे ही नौकर ओज्यू घालण आया  
 और चीमटां मे लोगां ने परसण लाग्या  
 पण जद वावु नटगा तो वै पाछा मुडगा ।  
 इवके मेरो हियो पसीज्यो, भाव उठचाया ।  
 लहैर नरपना की आई, मै सोचण लाग्यो—  
 देखो देखो, मोट्यारां ने कियॉ आज मोट्यार जिमावै  
 ये विच्यापडा के जाणै के हुवै सातरी ।  
 लहैर कल्पना की उठ सीदी घर मे आई  
 खणक खणक चूडी वजतं गोरै हाथा मे  
 मोड्योडै दो फलकां ने ओज्यू से मोड'र, एक दिखाके  
 चुपके सी थाली मे वरके  
 और दाळ को चमचो भरके  
 नटता नटता कंयां घाले  
 तिमळ तिमळ चूड्या चमचे के मागे चाले  
 और मुळकती मामे बैठी—  
 धोती को पत्तो सु वारती  
 भीठो सरवजो बैदारती

ऊपर में यू न्यारी बोलै—

थाने खाएँ पीएँ नी भी सोदी कोनी  
 ऐया थारा गोडा ये क्यासे चालैगा  
 दाळ नही भावै तौ ठैरो पणू वणावू थारै खातर  
 ऐया मुग्गना ही म्हे थाने किया बतावा  
 कैया अणभाता भी दूणा भाज्यावै है  
 पण ये गैला मरद पैरकै धोळा गावा  
 लिया चीमटा घालण आगा ।

अर नटता ही मोथा सा पाछा मुड चाल्या  
 डोळ विनाँ का-सूर विनाँ का ।  
 ये भोदूडा के जाएँ के हुवै खातरी ।

पण म मोचण मे ही रैगो  
 सामें देरयो तो बाबूडा पापड खा था  
 अर मेरी थाळी ज्यू की त्यूं भरी पडी थी  
 मोट्याराँ के हाथा से सेवयोडो पापड  
 आदो काचो, आदो काळो  
 मेरी भी थाळी में कुण कदसी आ वरगो  
 मन्न वेरो ही कोन्या थो ।  
 म सीची आपाँ तो क्यूई कोनी खायो  
 पण खावो चाये मत खावो  
 आ बाबूडाँ के सागै ही उठणू पडसी ।



इया सोचकै में भी पापड खावण लाग्यो  
 इतरणै मे ही नोकुरियो कमरै मे आयो  
 घटण दावकै त्रिजळी को पखो चला दियो  
 च्यार आंगल कौ पापड को दुखडो भी म्हागे  
 पुरव जलम कौ बी वैरी नै नही मुहायो ।  
 फरण फरण पलो फिरता ही  
 फरड फरड करतो मेरो पापड भी उड र पघा मे आयो  
 वारै मिरजनहार आज तो भलो फँमायो ।  
 भलो जिमायो ।

लोग सुपारी खाई अर इळायची खाई  
 पण मै काड जनेवू ऐ या मोगन खाई  
 जठै जिमावै नही लुगाई  
 बी घर मे जीमण जावू तो राम दुहाई ।

## सेकिड की सूयो

उछळ उछळ कूदतो फुदकतो-

एक टाग को नाच दिखातो

तम्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्,

मेकिड को मूयो भागै है

एक टाग को नाच दिखातो

तम्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्, तक्,

ओ मेकिड को सुयो चोरटो

चोरी करकै भाग्यो जार्यो

पाछै पाछै थारोदार सिपाई चालै

जाकै हाथ नही ओ आर्यो

ठिंगणू थारोदार सरावी भतवाळो हो-

होळ्या होळ्या एक घडी में एक पैड हळवासी मेलै

अर वूडळो सिपाई जीकै

हाडाँ मे है रुडक आज भी

एक घडी मे वारा कोस भाग ज्यावै ह

पीछै भी चोर नै नही वै पकड सकै है

क्यू ? ओ म्हाटो जबरजग है

एक घडी में माठ कोस मारै फल्डाका

आभी कोनी, चोर न निजरा में आवै है

मिट मिट में, मिण्ट मिण्ट में  
 वो वा दोन्या की आग्या में लूल गेग्तो—  
 दोन्या की छाती के ऊपर से जावें  
 ज्यू ही वं वीने पकडणने हाथ उठावें  
 इतरणें में वो आगै जा गेतो साज्यावें  
 ल्हुक-मिचणी को खेल दिखावें  
 हाथ न आवें घणू वणावें  
 पण, लोग के एक भैम ओ भी होर्यो है—  
 थारोदार सिपाई से ई म मिलरया है  
 गिपिया की चाबी से चाले चोर पकडवा से दिग्वावटी  
 और पकडणें को मिस भी जूठो वणावटी  
 ये दोनू भी घणा घाघ है  
 जाणवूभ के कोया पकडे चोरटिये नें  
 क्यू भी हो मिण्टा घडिया म दिन दिन करता  
 म्हीना वरस हुआ, हज्जारा जुग जुग वीत्या  
 लाग्वा कोडा कळप वीतगा  
 पण सेकिड को सुयो आजतक हाथ न आयो  
 कितणा ही जुग का जुग मू के आगै आसी  
 पण मेकिड को सुयो जणा भी हाथ न आसी  
 ओ मुडर ही कोन्या देखे, भाग्यो जासी  
 तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक् तक्  
 एक टाग को नाच दिसानो

## प्रार्थना

हे ईस्वर, हे गोट, रमुल्ला  
तुरत भेज सोळा रसगुल्ला  
जीमं भगती जागै पक्की  
पाय्रै भेज कळयूँ की चक्की  
मनै न चाये पौड-अमरफी  
भिजवादे विदाम की वरफी  
मिलज्या पेट भराऊ-पेडा  
तो दुनिया का मिटै वसेडा  
जे मिलज्या मावै का लाडू  
तो भौसागर तिरकै काडूँ  
जे घर मे ठडाई घुटज्या  
जलम मरण को चक्कर छुटज्या  
वैकुंठा को वासो वोई  
जठे खीर की वरणै रसोई  
जीणूँ वा भगता को जीणूँ  
मिलै जिनानै अमरस पीणूँ  
जीपर भगवन राजी होवै  
वो अमरस से गावा वोवै

जीपर किरपा नाथ करावै  
 वो अमरस मे हुनकी खावै  
 अमरस की न बात बताऊ  
 जागौ दोन्युँ भसता साऊ  
 स्वामी इतणी सी तो करद्यो  
 अमरस मै दो बोठा भरद्यो



## उत्तर-पडूत्तर

"ह्यूमिनिटीज को प्रोफेसर छोरै ने पूछ्यो  
 मृटी करै विनाम, उदाहरण दे ममभारै"  
 "मरी मा, या मे म एक पित्रेग ल्याई थी  
 पाच पित्रेग अर तीन गटोला घल्लै म्हारै"



## राणी आई-राणी आई

हाको सो फूट्यो-

भारत को दूर करणै

घणी ड्यूक के सागै सागै

आज नई दिल्ली मे आवैगी-ब्रिटानिया की म्हाराणी

हाको सो फूट्यो

आज हवाई इयाजा के अड्डे पालम पर

नेतावा के सागै सागै-

और हजार लोग मोटरा ले ले भाज्या

और प्लेन उतर्यो, दरवाजो खुल्यो,

लगाई सीडी-ग्रर आगै ही आगै लिया ड्यूक ने

उतरी यूँ म्हाराणी जाणे—

लेकर पुष्प-विमाण इन्द्र के सागै मागै

सीदी सुग्गा में उतरी हो खुद इन्द्राणी ।

भारत की भोमी मे विचरण करवा तारणी ।

धन घडी । वन भाग । आज यो ओसर आयो

यो पच्छिम कानी मोने को मुरज उग्यायो ।

वारै मिरजनहार । विनाणी ।

तूँ कोनी आयो तो के ह । तूँ ही भेजी है म्हाराणी ।

या म्हागणी—

आभं की सी पळक, भळक-नख-जोत-विरण सी

गूवै की मी नार, आस जीकी व हिरण सी ।

चाल हमणी सी, वुगलै भा वोळा गात्रा ।

ऐ या आग्वड नारड मे भी—

स्यान-मिक्ल की घणी लुभाणी

गुडसै मीठी जीकी वारणी

वडै भाग सै आज नई दिल्ली मे उतगी

इन्द्राणी सी या त्रिटानिया की म्हाराणी ।

या जी रस्तै सै मोटर मे बैठ निक्ळसो

वी रस्तै की सडक आपको भाग सरासी ।

उमड उमड सरवर सरसासी

फूल फूल देवता फूल नभ सै बरसासी

सूका रु ख हरचा हो ज्यासी

या जी रस्तै सै मोटर मे बैठ निक्ळसी

वी रस्तै की सडक आपको भाग सरासी

और सडक कँ दोन्यू कानी, फुटपाथा पै,

के छज्जा पै के विरछा पै ।

कोट-कोट कागरै-कागरै—

लाखू लाखू मिनख खड्यो जो दरसण सातर

वै वीनै उडती सी देग्र'र भी सगळा तिरपत होज्यासी

धरम अरथ अर काम मोक्स वे  
 च्यारु सागै सागै पासी  
 या जी रस्तै से मोटर मे बैठी आसी  
 वी रस्तै की सडक आपको भाग सरासी

वा आरी, वा आई, यल्ल्यो चली गई वा  
 रै, वा काळी सी मोटर है ना ? नई नई वा  
 कोई नै तो हाथ नाक कोई नै दीख्यो  
 अर कोई नै मुकुट फाक कोई नै दीरयो  
 पर पूरी राणी कोई नै कोन्या दीखी ।  
 उचक उचक वावना घणूँ ही जोर लगावै  
 पण बाकै राणी क्याकी निजराँ मे आवै ।  
 कठे एक छेकड कै मा से—  
 मोटर कै हुड कै नीचै पयियो फिरतो दिखगो—  
 तो बस सतोप कर लियो  
 वा जावै, वा जावै राणी  
 बडै भाग से, बडभाग्या नै दरसण देवा  
 आज नई दिल्ली मे आई  
 इन्द्राणी मी या ब्रिटानिया की म्हाराणी ।

या म्हाराणी ।

जीकै जैपर मे आण की बात सूणी तो—



पैलै दिन ही जैपर म्हाराजा की राणी  
 बणी सुततर  
 जा'र मिली मदरास देस कँ, विना ताज कँ राजाजी सँ  
 ना पडत नै पूछ्यो ना पूछ्यो काजी सँ  
 मिली भगत को सोदो दोन्या की राजी सँ  
 पण, या अचरज की बात इया ही लागै जाणै—  
 छोटी साळी करै मसकरी—  
 साठ वरस सँ भी ऊपर कँ जीजाजी सँ ।  
 जैपर की म्हाराणी मिलगी विना ताज कँ राजाजी सँ ।

और वठीनै वा ब्रिटानिया की म्हाराणी  
 जैपर म्हाराजा कँ सागै—  
 जा'र सवाई-माधोपर कँ वन खण्डा मे  
 खाता खाण न पीता पाणी  
 फिरी घालती घाणी-माणी  
 और मारती नार-बघेरा हिरण-हिरणिया  
 और भौतमा जीव-जिनावर दो दिन ताणी  
 वारै वा । भारत मे आछी आई राणी ।

ठैर । निरकुस कवि । रँ तू या के मे ऊठ्यो ?  
 ड्यूक और म्हाराणी दोन्यू —  
 ये मिभाग करवा नहिं आया  
 छोड आज तेरी नादानो

जरा देख तूँ आकै कानी  
 ये हैं भैरव और भवानी ।  
 ये प्रलयकर सकर रूपी गरवनार कै सकेता पै  
 जीवा को उद्धार आज करवा आया है  
 ये जो राजा राणी सा लागै या तो खाली माया है ।

नमो नमो भगवती । सक्ति । चडी । कल्याणी ।  
 यूँ सिकार कै मिस मिस मे बदूख धारणी,  
 जीव तारणी, पाप हारणी  
 माफी चावू, माया कै पडदे मे लागी  
 तूँ ब्रिटानिया की म्हाराणी ।  
 नमो नमो दुरगा कल्याणी ।

या राणी है- या सक्ती है- या लिछमी है  
 ई को स्वागत 'तूमघाम' से करणूँ चाये  
 जलम जलम की या भूखी है, ई को 'फाड्यो भरणूँ चाये  
 तो के खागी या ?

कानी कानी आज सैकडी इयाज भेज भटपट मगवावो  
 कासमीर सै सेव, नागपर सै नारगी  
 बिकानेर सै भुजिया, कलकत्त सै कतली  
 बबई सै बरफी, रसगुल्ला रामपरै सै  
 अडमान सै अडा, मछली मछलीपट्टम सै 'र  
 माम मदरास खाम सै ।

खुर्जे से घुरमरा और हापड में पापड  
 या जी टेवल पर जीमगा बैठेगी वीपे  
 कम से कम हजारों रिपिया को चपडो होगू ही चाये  
 जठे जठे भी या जावे है बठे बठे ही  
 कम से कम लाखों रिपिया को तो चपडो होगू ही चाये ।

राणी तन्ने एक बात कू  
 बुरो मना मानिये, देस मेरो गरीब है जी से कू हूँ  
 ई को करम कमेडी को सो है अर मन राजा को मो है  
 घर मे लूखी-सूखी खाकर भी यो-  
 करतो रिह्यो बटाऊ की मिजमानी  
 पण जो गुड की एक डळी के खातर तरसें  
 जणै जणै के आगे जाके पेट उघाडे, हाथ पसारै  
 वो कोई नै क्यासे घालै सतपकवानी  
 राणी । तन्ने एक बात कू  
 बुरो मना मानिये, देस मेरो गरीब है जी से कू हूँ ।

तो राणी । तू भारत मे आकर भी  
 साचे भारत नै कोनी देख्यो ? क्यू क-  
 दिल्ली बबई कलकत्तो भारत कोनी है ।  
 आके अर लदन के मूला मे थोडो हो फरक हुवेगो  
 वेस्टपोल की अर मनाट-सरकम की

सडका मे थोडो ही फरक हुवैगो ?

भारत ही जे तने देखणू थो तो राणी  
तूँ भारत कै बीस तीस गावा मे जाती

लूखी रोटी लिया हाथ मे—

मिरच्या की चटणी कै सागै

भिडा भिडाकै खाती, सी - सी करती जाती ।

बीच मे ले पाणी की घूँट— मोद मनही मन पाती

हास हास गाव की गूजरी को तूँ जद घूँघटो हटाती

तो, फाट भला ही ज्यावो लूगडी

पण वा तन्ने मूँ न दिमाती

जे तूँ मूँ ह दिखाई को नेग भी चुकाती

तो तूँ बीस पगा लागणी का वदळै मे टूँगा पाती

के घाटो थो ?

और हाथ ही तने मिलाणूँ थो तो तूँ

गाडिये लुहारा की छोरी मँ हाथ मिलाती

भारत ही जे तने देखणूँ थो तो राणी

तूँ भारत कै बीस-तीस गावा मे जाती ।

पण जे तूँ साँचै भारत का दरसण करती

तो पाछै ये कहाणा बाणा किया चालता ?

क ये वैही राजा ह । ये वैही ह राणी

जो छाती पै मूँग दळचा करता इवताणी ।

सागी दुनिया वदळी, पण ये त्रैया का बैया इवताणी

रु दळ रु दळ कर करी देस की-  
 सदा घूळधाणी'र राख छाणी, वरसा तक  
 नही वात या है विसराणी  
 ओज्यू भी आकर कोडा रिपिया पै राणी  
 आज फेरकै चाली पाणी ?  
 भारत मे आकरकै के जै कग्गी राणी ?



## प्यार की बात

“बेटा तू कुणसी छोरी से प्रेम करै है  
 के बीको इतिहास नही तू सुण्यो पुराणू”  
 “नही नही इतिहास वदे भी में नी देख्यो  
 पण बीको भूगोल पिताजी सगळो जाणू”

“देग्यो थारा दांत दूटर्णा सुए होयगा  
 इव थोडा हो दिन जा है क नाड हालैगी”  
 “मेरा दूट्या मो दूट्या पण तेरा दूट्या  
 निघटक होवै जीव घग्गी ज्यादा चालैगी”



## किरकिट की कामेण्ट्री

आज्या मेरी प्यारी किरकिट की कांमण्ट्री  
तेरै बिना अणमणू है मेरो ट्राजिस्टर

तू आवै ज्यूँ नई बीनणी घर में आवै  
अर घर हाळा दिनगे सँ चा'पाणी पीकै  
कुरसी मुड्डा घाल, चाव सँ दरी विछाकै  
बैठ्या बैठ्या छिण छिण तेरी वाट उडीकै

घर हाळा ही नही कबीलै का, पडौस का  
सगळा भेळा होरचा मिस मिमेज अर मिस्टर

तेर आणै की कलोक मे टम देखकै  
तीन हाथ एरियल उठै करवा अगवानी  
बटण आँन कर त्यार रेडियो होज्यावै है  
जणा खलबली सी मचज्यावै कानी कानी

देखा तू आती ही के वोलै, मुणवाने-  
कान लगा रारया साळी के सागै मिस्टर

या मेरे ट्राजिस्टर की म्विच नही खुलै है  
तू आती ही तुरत घूँघटो मो खोलै है

नई मभ्यता माय पळघोडी, घणी पढयोडी  
तू घाती हिन्दी अग्रेजी मे बोलै है

स्मोर लिखणनं मुन्नु भट चोपनियू ठाव  
तो मुन्ने को मां भी ठावै एफ रजिस्टर

ऐया माजन किरकिट को कॅमिण्ट्री मुणसुण  
मूत्या मूत्या सुपने मे भी बाँल उछाळ  
मूत्या मूत्या मुपने मे ही फिर्लिङग करले  
सूत्या सूत्या सुपने मे ही विकिट सम्हाळ

इया रात भर मुपने मे भी चैन नही है  
चपरासी मै लेकर देखो चीफ मनिस्टर

इसो रोग फैल्यो किरकिट को च्यारु कानी  
टिकट खरीद'र अगै बँळ्यो नुयो नुयो है  
ताळी बजता ही स्हारै हाळ नै पूछै-  
मने बताये इवकै कं कं गोल हुयो है ।

ऐया का देखणिया तो वामे मिलज्यावै  
जो समाज मे पढ्या लिख्या वाजै वालिस्टर

## आमरण अनसन करूंगा

एक दफा मैं नैरु जी ने तार दियो क  
मेरे कमरे की गिडकी से दिन उगताई  
सूरज को सीदो पल्लको मेरी दोन्यू आरया पै आवै  
जी स मन छक नीदा मे चाणचकै चेतो होज्यावै ।  
ई प्रसंग मे मैं याने या याद दिवाद्यू क  
भारत का परधान मतरी, बगानै से पैल्या  
ने या घोसणा करी थी  
क जद भारत आजाद हुवैंगो  
जणा देस का मभी जणा सुख से खाकै सुख स सोवैंगो  
मेरे सुख स सोणै की तो थे सुण ही ली  
इव सुख से खाणै की सुणल्यो  
मेरे घर मे एक विलाई एँया की हीली हे  
थाने किया वताऊ  
मेरे नही समझ मे आवै बीकी घाली क्यामे जाऊ  
व मरज्याणी मैं मैं कैया पिड छुटाऊ ।  
मैं थाळी मे घला रोटडी,  
पैड मे पाणी को लोटो भरवा जाऊ  
पाछो आऊ तो थाळी मे थाळी पाऊ ।  
वोलो इइ मैं मेरो सिर सुख से खाऊ कै बीको खाऊ ?



एँया में सुख सँ मोणें खाणें की दोन्यू ही तल्लीफा  
 तार भेजकें थाने याद दियाणूँ चाबू (क्यूँ)  
 भारत का परधान मतरी बणने सँ पैत्या  
 ये या घोपणा करी थी

(इव) के तो सूरजकें आगै डोळी करवाकें  
 और केन्द्रकी पुलिस भेज, मेरें घर की विल्ली मरवाकें  
 दस दिन कें भीतर भीतर परबद वर दियो  
 और नही तो में अनमन आमरण करूँ गा ।  
 के तो मेरी दोन्यू मागा  
 दस दिन कें भीतर भीतर मजूर कर लियो  
 और नही तो में न डरूँ गा, सोच लियो ये  
 में कोई मदर मे जाकें इव अनमन आमरण करूँ गा

एक बात में और बतायूँ  
 क मैं कोई ऐरो गैरो नत्थू खैरो बोनी हूँ  
 मेरे पीछे हज्जारा ही फोलोवर है  
 जीसे कूँ हूँ मैं न डरूँ गा  
 मैं अनसन आमरण करूँ गा ।”

तार भेजकें मैं मन मे यूँ सोचण लाग्यो  
 तार बाचता ही नेरु जी घबरा ज्यामी  
 जी दिन अखबारा मे  
 मेरी मागा कें सागै मेरी फोटू छपज्यासी

वी दिन सै ही गोज' मिलणियै लोका को तातो बधज्यासी  
कोई बीच बचाव करण दिल्ली सै आसी ।

मन भुळा चुपळा समजासी

राजाजी को मुवकामना तार सै आमी ।

प्रेस प्रतिनिधि मेरो भापण जा अश्ववारा मे छपवासी

उजन नेणनै आप डाकदर बिना बुलाये घर मे आसी

और जिलै का सगळा नेता सै ओफीसर मनै मनानी

(अर) में मन्दर मे सूत्यो सूत्यो सबनै कहूँगा—

“में कोया मानू भाया में कोन्या मानू

में भरै वचना मै पाछो नही फिर गा

में अनसन आमरण करू गा ।”

आखिर वै दस दिन भी बीत्या

पण दिल्ली मै नेरुजी को

हा ना को जुबाव नही आयो

जद दसवै दिन मनै चौगणू गुस्तो आयो

पण अनसन कै खातर कोई—

मदर भाग्यो नही मिल्यो जद में घबरायो

कहया जया नरसिंगजी कै मदर कै म्हत नै पटायो ।

बठे जा'र माचलो बिछायो

और गाव मे दो रिपिया देकर सारै डूँडी पिटवाकै

बडा बडा परचा बटवाकै

में बस आख मीचकै अनमन सुरू कर दियो

आठ वजे सी मेरी चा को टम हुई जद मनमे सोची  
 आज आज तो आपाने कुछ-घरा कनेवो करके थोडा  
 चा'पाणी करके पाछे आखूँ चाये थो  
 पण मदर के चक्कर चक्कर मे—  
 ऐंया निरणावासी ही आकरके जमगा  
 ऐंया कैया पार पडैगी ?  
 पण देखी जासी राम हुवालै ।

बैठ्या बैठ्या ग्यारा वजगा  
 मगर एक भी जखूँ मिलाने कोनी आयो  
 मदर का म्हतजी दाळ के छूँक लगायो  
 मोटा मोटा रोट सेकके—  
 कूट ऊँखळी मे —'र मिलाके खाड,  
 आरती कर भुगान के भोग लगायो  
 जीम एकला जद ढकार नी  
 जद मेरो काळजो बठे कठा मे आयो ।

सोचण लाग्यो

आपा भी जे आज घरा होता तो इब्बी  
 दैडा को चूरमूँ कुटाके पँचमेळै की दाळ लु काता  
 यो तो सूकट ही खार्यो है  
 पण आपा घी का भीज्या पीडिया बधाना  
 और बैठ पीडिया च्यार कम मे कम खाना

और पट पै हाथ फेरता तुरत पान खात्रण न जाना ।  
 यो मूका रोटा चूर्या है जीमे यो मोदो होग्यो है ।  
 आपाने तो आरु टोकार्या ही कोनी  
 ऐंया में इजसे अनसन ना कर राभ्यो है  
 कुण सो कै'ता हो में ई कै गळै पडै यो ?  
 पण कम मै कम ई न तो कैणू चाये थो  
 अनमन तोड्या पोछै आपा, मै सं पैर्या  
 दाळ-चूरमै की हो एरु गोठ करवाम्या  
 पण देग्यो कैया के दूटै ।'

ओज्यू मोची

ऐया बैठ्या उठ्या तो दिन दोगे कटमी  
 थोडा आडा ही होज्यावा' इया मोचकै आडो होगो  
 आडो होता ही प्रम मेरी आंग लागगी  
 क'बत भी है भूवो वामण सोवै ज्यादा  
 जानो मज्या चेन ह्यो जद बठे घडी मे च्यार बज्या था  
 में पमवाडो फेर्यो अर उठणै की मोची  
 पण लागी जाएँ उठता ही चक्कर आमी  
 जणा खाटपै पड्यो पड्यो मै बठे म्हत ने हेलो मारयो  
 "ओ बाबाजी, मैसै सं मिलबा खातर कुण कुण आया था ?"  
 बाबाजी त्रिजिया राणी कै  
 लोडी को सलडको लगाता ही यूँ बोल्या  
 "म्हान तो कोई भी कोनी आयो दीग्यो ।"

म सोचें थो इवतारणी तो—

आसपास कँ गात्रा मे भी खरर फँसगी होगी मारँ  
श्रीर मोटरग लिया लोगडा आरचा होमी  
पण आपणँ गात्र का भी कोई नही आया

अखबारा मे खरर निनाळचा छँ दिन होगा  
थोर आज डूँडी पिटवा, परचा वटवाया  
पीछँ भी इवतारणी कोई नही मिनण नँ आया  
ना ही कोई ग्रीच वचाव करणिया आया इव के होमी  
पैल दिन ही इया काळजो  
फटर फटर करर्यो है तो आगँ के होसी ?  
मज्या होगी !

‘लोग ताल मे बैठचा बैठचा खारचा होसी बडा पकोडी  
कदे चाट मे दही गिराकँ, कदे दही मे चाट गिराकँ ।’

मँ सोचँ ही थो इतरणँ मे

एक जणूँ मदर कँ स्हारँ हाळी ही छातपँ खड्यो यूँ  
वठे लुटारथो थो चीला नँ बडा-पकोडी (अर)

“चील चील बडो ले काजी को कडो ले”

मन्नँ पड्यो सुणाई

मँ सोची आपणँ सँ तो ये चीला भी बडभागण है ।

(जो) बुला बुलाकँ लोग लुटावँ बडा पकोडी

चाणचकँ ही मेरी निजर स्यामनँ दौडी

एक बडो जो नही चील कँ पज्यँ मे आयो थो-

बो आ मदर के चोक मे पड्यो थो  
जद मेरे मे चाणचके ही अगद को सो उल्ल आयो  
अर मे उठकरके देखभाळ के च्यारु कानी  
भटमी बडो उठा'र मावतो मूँ मे घाल्यो  
अर मुडकरके पाछो माचे कानी चाल्यो ।

दिन छिपगो जद एरु दोम्त पूछरणन आयो  
चुपके सी ब्रैठ्यो वोल्यो—क्यू के सल्ला है ?  
मे जाल्यो क्याकी मल्ला है ?  
ऐया तो दो दिनमे ही मेरा कडतू भेळा होज्यामी  
तेरी काळी गाय कहैया तूँ मने जिवादे  
के तो तूँ मन्ने चुपके सी पेडा ल्यादे  
के तूँ ल्याकर एरु दूध को लोटो प्यादे ।  
तेरी काळी गाय कहियाँ तूँ मने जिवादे ।

यूँ मुणता ही उठके पाछी जूती पैरी  
अर बाकी वा पगा तान मे जा चुपके सी  
एक दूध को लोटो ल्यायो  
लोटो लेकर मे होठा के जणा लगायो  
इतराँ मे ही दरवाजे पै—  
पुरव जलम को बैरी जाण कुण टपस्यायो  
बो खोलो खोलो करतो ही मोदो छाती पै चढ आयो  
जी पैत्या ही म लोटैन माचे नै नीचे मरहायो ।

रा राई यू फट पार्टी रो मो थो-  
 रातां रगता रगता म्हाडा हाल्या ही रोनी  
 गाग राई जामूमी करवा आयो था ।  
 म वीन कमम तम दम पर रोत्या रोमी  
 मह अ रेरी रात होयगी  
 टापर टीकर घग एगला टगना होमी  
 तू जा क्यू ना ?  
 आजकल तो चोर-चकोरा रो भी क्यू जोरो होर्यो है  
 ये इत दोन्यू ही चालो में ठीर ठार ह  
 दिन मे तो हालत विगडी थी  
 पण इवतो हिम्मत ब घगी है ।"

बडी मुमविला से मैं वा दो या ने काड्या  
 तो इतरण मे म्हत आ मर्यो ।  
 बोल्यो "ठाकुर जी पोढे है  
 थे सारो दिन ई माचें पर ही काड्यो है  
 इब सोता तो ठाकुरजी का दरसण करल्यो  
 उठो और आरती कराद्यो"  
 जाणें मेरे में जद के खोटो दिन बडगो  
 मैं कैता ही सभामड के कानी होगो  
 कहैयां जैया करा आरती पाद्यो आयो  
 और म्हत के सोया पाछें जणा चावसे लोटो ठायो  
 तो इतरणी जल्दी उठगो ज्यू कागज को हो

रीतो लोटो देख मने भू टरी आई  
 आख तिरमिराई अर मैं माथै म साई  
 वारै राड विलाई अठे भी आगै पाई ।  
 ठाकुरजी का दरसण वरणै की मैं के परमादी पाई  
 अरै गम । इत्र आस आस मे कहेया जैया दिन तो रुडगो  
 पण या पाच प्हर की कैया रात कटैगी ?”  
 मने मेरै पै ही इतरणू गुस्मो आयो क  
 भूख नही निकळै थी तो मैं  
 क्यू ऐंया को फंदो ठायो ?  
 और आज दिनगे भी थोडी गळती करगा  
 कई लुगाया कवूतरा कै खातर—  
 मोठ घणा ही गेर्या था—  
 वामे सै ही कुछ पाव- आदपा सोर-सार कै—  
 बरलेता तो अडी भिडी में आडा आता ।  
 एक विचारी सिवजी पै भी  
 गुड की एक डळी धरगी थी  
 वा ही ठा लेता तो क्यू तो स्हारो होतो ।

चाणचकै ही मेरै याद आई क म्हत जी—  
 ठाकुरजी कै भोग लगाकै  
 चुटकी और मखाणा को डब्बो ठाकुरजी—  
 कै म्हारै हाळै आळै मे ही मेल्यो है ।  
 मैं उठकै धीरै सी मदर का पट खोल्या



और अघेरें में ही अटकल स टिटोळ कें, उन्ना ठान  
 दास-मखाणा चुटकी त्वाकें  
 रीतो डव्यो ठाकुरजी की सेवामे पाद्यो मेल्यायो  
 मन्नं ठाकुरजी भूखा मारघो है तो में भी यू —  
 ठाकुरजी नै इव भूग्या मारु गा  
 देखूंगा भूखें वामण को दूध दुळाकें  
 ठाकुरजी भी किसान चुटकी दास मखाणा भोग करंगा'  
 पण ई परसादी सें क्याकी छुदा मिटें थी ।

कहैया जैया तडफ तडफकें तारा गिगकें पट पकडकें—  
 में वा एक रात तो काडी  
 दिन उगता ही छोरें नै सागें लेकरक  
 मदर मे मेरी घरहाळी भूखती आई  
 आता ही बोली—'ओ कुण वापनोम्हुगावणू'  
 थान भूखा मरणें की या सीख सिखाई  
 के तो कोई नही कर सकें कदे कमाई  
 के घरहाळी सें राखें रोज की लडाई  
 वो मदर मे आकें बैठें क  
 घर गिरस्त हाळा मदर मे आकें बैठें ।  
 थानें थोडी लोक ल्हवाज भी कोनी आई ।  
 उठो खड्या होवो, र घरा चालो इव सागें सदगी थारी  
 में सुन्नो होयोडो सो बोल्यो, 'चालू तो गा  
 पण दिन दिनमे ठैरकें आज रातने आस्य ।

वा बोली-चोखो कोनी सदगी होमी  
 पण इव कंने रात ग्रावंगी ? मैं इव लेकै जास्यू ।”  
 यू मुण मैं मूडो लटकायो  
 धीरै मी चादरो ममेट'र माचो ठायो  
 दात्र कात्र मे मे मीदो घग्कानी आयो ।  
 एक जणू फोटोग्राफर कं सागै आतो सामै मिलगो  
 जाल्यो “ह ? मैं के देखू हूँ अनसन यू ही तोड दियो के ?  
 मैं ता फोदू तारणने ई नै ल्यायो हूँ  
 पण इच्ची तो एक पोज लेणू ही चाये  
 मैं बोल्यो इव बाळ कंमरै न तू काल कठे मरगो थो  
 मेरी सूकेडी करवादी ।  
 कडतू भेळा होगा मेरा रात रात में  
 इव मन्ने कोनी कोई फोदू उतराणी  
 मेरी तो उतर्योडी ही है ।”



# वाइसिकल की चोरी

लडका-

मेरी वाइसिकल कुण चोरी रे  
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे  
मेरी वाइसिकल-

तीन लोट सी सी का लाग्या जद वा घर मे आई  
पण कोई पुरव जलम की वरण वीने भी उचकाई  
मेरी साड दुपहिया सोरी रे ।  
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे ।

लडकी-

तीन टका की वाइसिकल को इतरूँ रोव दिखाव  
छोर्या के चोरी करण को भूठी नाम लगाव  
तेरी मती किया की होरी रे ।  
चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे ।

लडका—

तीन टका कै मू मै निकळै तीन टका री बात  
 और नही तो एया कँदे कीकी के ओयात  
 चोरी करकै सीना जोरी रे  
 चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे ।

लडकी—

चुपरै चुपरै चुप रँज्या तू मू मम्हाळ कै बोल  
 और नही तो पडज्यावँगा आज कमर मे धोल  
 तेरी धरी रहँगी तोगी रे  
 चोरी चोरी चोरी कोई जालिम छोरी रे ।

दूसरी लडकी—

भाया, तेरी वाइसिकल मै लेगी खोल किवाड  
 ये भूठ्याणी बात बढाकै क्यू कर राखी राड  
 वागे ओज्यू प्रेम की डोरी रे  
 चोरी चोरी चोरी निकळी घरमे चोरी रे ।

## रूपाली कामण

ई दुनिया मे भात भात का रूप पड्या है वेपरमाण  
पग देवीजी रूप आपकी किए सबदा मे करू बखारण  
रभा अर मेनका उवसी जे थारै कन्ने आज्या  
तो साची कूँ वँ तीन्यूँ ही चकित हो पछाड खाज्या  
दमयती ही नही रती भी थारै आगँ सरमावँ  
कामदेव खाज्या गुरगडी जे थारै नीडै आवँ  
आध्र देश की माटी लेकर एक मुस्त छत्तीस घडी  
घणै चाव सँ खुद वेमाता थागी या मूरती घडी  
मावम की रात सँ रूप ले अम्मर बकरै सँ ले गद  
सिडतै कादा को रस लेकर थामे पूर्यो गरदभ-छद  
दो मोटी मोटी टागा पर काळी काळी सी काया  
विना मूँड की आदी हथणी रची विधाता की माया  
खाली दोन्यूँ पग तोलै तो होज्यावँ दो मण दस सेर  
जापै गोडा चोडै चिलकै कमरवध का सा नाळेर  
और चाल की अजब लचकू मे तो वेमाता गजब कर्यो  
थामूँ मरमा भरतो ही तेमूरलग वेमोत मर्यो  
मिर ऐया को जिया घडूँची पर तारू को मूँणियूँ  
नाक इम्यो ज्यूँ विन तागा को एक बटोडो भूणियूँ

और नाक की हाडी जागे माथे मे म्परी सूटी  
 वो भी टप टप टपके जागे हीले वामर की सूटी  
 और नाक का दोन्युं छिद्धर जागे ऊला चला हो  
 दोन्युं होठ इया ज्यू कोई भीज्योटा बडकूला हो  
 होठा की पापटी'र जिव्या ज्यूं बिन धुपी रकाबिया  
 दाता की बत्तीमी जागे गोडरेज की चाबिया  
 जद भी ये थारै श्रीमुख मे कोई बैरा उचारो हो  
 तो ऐया लागै ज्यू डी०डी०टी० को छुट्यो फु वारो हो  
 माथे की काळी सलेट भळके ढाळचोडे सीसै मी  
 ये पर या वीदी मुहाग की एक पुराणे पीसै सी  
 आग्या जागे ढीवमियां पै कोई रगड्यो कोयलो  
 पळकां जागे दावे मरती औरया मार्यो खोयलो  
 भाफग जाग भूठी कची म कतर्योडो भव्वो ह  
 गोळ गळो यू लागै जागे कोलतार को डव्वो ह  
 गीक ऊपर गोळ गोळ काळी काळी थारी ठोटी  
 लागै जागे चिपी पडी हो भांग घोटणे की लोडी  
 उळइयोडे वाळां को गुच्छो जिया घडे पै वेवडो  
 वा मे चुट्टो यू लागै ज्यू जेवडिया को जेवडो  
 अर दोन्युं हाथा मे जद ये थारो भोड खुजावो हो  
 तो अणगिला जू वा की जूणां धरती पर बरभावो हो  
 नही पदमणी और चित्रणी, नही हस्तणी-सखणी  
 ऐया की पाचवी नायिका नाम न्हायो डकणी

## अष्टग्रह

पारा म्हीना पेन्या में मुगतो आर्यो थो  
अठ्ठारा नी माल और गो मा' गो म्हीनू  
ऐयाँ को कल्डो आवैंगो (क)

राम बचावैंगो जीने वैही बचैंगा  
और नही तो, कोई लेर्या न रैंगो तो  
खाली गल्डप्राण बचैंगा ।

पट पट मिनख मरैगा ऐया

जिया कोई कमजोर खिलाडी की चोपड पँ स्थार मरै है ।

जिया जामना में घुट घुट कर प्यार मरै ह ।

पट पट मिनख मरैगा ऐया—क्यूँ ?

अष्टग्रही सजोग पडै है ।

वामे भी तेरस सै मावस तक ऐया का कल्डा आसी  
क मोड्या मुडै न तोड्या दूटै

ताऊजी सै ऐया बतळारी थी ताई

“हाजी सुणन में आवै है दुनियाँ रैज्यासी चौथाई  
आपा घरमें दो ही हाँ कँको के रैसी”

मुण मुण कर म्हारलो वाळजो भी हालै थो  
उछळ उछळ उपरने नीचै नै चालै थो

जाण यो काळजो नही मीडको कूदरघो ।  
 कदे कदे मन नै ऐर्या धीरज भी देतो क  
 अस्टग्रही मजोग आपणो घरमे लाग्या—  
 डेड बरस से ऊपर होगो ।  
 कैर्या ? छै टावर दो लोग लुगाई  
 अस्टग्रहां मे कहो कसर कुणसै की होरी  
 पद्रा दिन से ज्यादा कोन्या चालै है गीवा की बोरी  
 आदा छोरा आदी छोरी । म्हे ईसर जी तो वा गोरी  
 अस्टग्रहा मे कहो कसर कुणसै की होरी ।  
 पण जद कातिक लाग्यो तो धीरै सी म्हारो—  
 धीरज भी चल दियो जिर्या आस्योज चल दियो ।

कानी कानी जग्य जाप अर भजन कीरतन होवण लाग्या  
 मतचडी सहस्र चडी, लखचडी तक जिग होवण लाग्या  
 राभायण की पोथ्या पै जो गरद पडी थी वा सा भडकी  
 अर घर घर मे, 'दोन दयाल बिरद सभारी  
 हरहु नाथ मम सकट भारी'  
 पडघा सुणाई  
 अठे जिग्य होर्या बँचरी भागोत बठेसी  
 भजन कीरतन मे तो सारी दुनिया ही विदराबन होगी  
 गळी गळी की मोड मोड पै-सदावरत खुलगा था सारै  
 जो घोळै दोपारा भी भोळै लोगा का



कठ काटता आगो पीछो कोनी देख्यो  
 वा लोगा मे आज चाणचक—  
 भौत घणी भगती उमडी ना ।  
 भौत घणू बैराग जग्यो ना ।

मेरँ मन मे भी यूँ सोळाना जचगी थी व  
 इवकाळी दौरा ही वचा  
 पण घर हाळा मनै भेटरिक—  
 पास कराई है तो के मरणे वँ ग्यातर  
 नही नही मै नही मरु गा  
 परळी भी होज्यावैगी तो  
 मै परळी से बचणै की कोसीस करु गा ।  
 पैल्या देखो परळी होण की चानम कैया कैया हँ

सोचण लाग्यो विरखा होकँ परळी हाव  
 तो आपान से से पैल्या के उपाय काम मे ल्याणी ?  
 भट बुद्धी परकामी सीदो मो उपाय हँ  
 छत्तै पँ छनो छत्त पँ ओज्यु छत्तो  
 इया तम्हेले ताणी ताणागा-सावँठा पचासा छत्ता  
 बीच बीच मे देकर मोटा मोटा गत्ता  
 त्हाई से विपकाद्यागा मूळी का पत्ता  
 नीचँ बैठ्या भजन करागा एक वू द ही कोन्या लागै  
 मूरज नीचो उतर नावडो तेज करैगो

तो आइमक्रीम हाळै डन्वे मे टावरिया ने बठा—  
 बग्फ की सिल्ली सिरपे धरल्यागा म्ह लोग लुगाई  
 वा पिघळगी जदताणी तो परळै-पारळै सा होलेगी  
 वरती सै ही पाणी निकळधावैगे तो सीदो उपाय है  
 उलट भू पडै न बीकी ही न्याव बग्गाकै  
 एक कू चिये कै लाठी वाधकै  
 चग्गा कै डाड-न्याव खेता निकळंगा !  
 मनु वण्या म्हे पूंचागा कोई प्हाडी पै  
 के वेगे आपणै सातर ही—  
 कोई श्रद्धा बैठी हो काजळ घाल्यां  
 पण यो उपाय दूसरो नही कोई कर बैठै  
 और नही तो गळी गळी मे  
 मनु ही मनु तिरता पावैगा !

आसिर वै कलडा दिन आया  
 भजन कीरतन और जोर स जोर पकडगा  
 और भुड का भुड लुगाया का बैठ्या यूँ भजन करै था  
 कौसल्या के जलमे राम जै रघुनन्दन जैसियाराम'  
 'हा ये रामारी जे परळै होज्यागी तो  
 तारी कै जाळ को ओण्णूँ कुण ओडैगे  
 मै तो वा सै लड'र भगड कै  
 दाईसौ रिपिया लगा'र इब्बी करवायो  
 "राम तिलक की भई तयारी

केकई नें सब बात विगाडी'  
 'मेरै ना बावळो टोपसा को नाको वाको होरघो ह  
 पण बाईजी, थारो भाई ऐया कै है-व  
 मा' कै म्हीने पीछे ही सीदा करवास्या'

मैं भी मा' आता ही मेरी गऊमुखी मे हाथ घालक  
 सुरू करघो भगवान राम ने चकमू देखू  
 कहैया जैया तेरस चौदस तो बीती  
 पण मावस आई जणा मुणी (क)  
 अस्टग्रहा सै जो जो होणी है व सै इव  
 पाच बजे कै पैल्या पैल्या आज हुवैगी

मैं तिन उगता ही न्हा-धोकै  
 चदन टीकी लगा विछा कर आसण बैठ्यो  
 घरा कह दियो थो क आज मैं-  
 रोटी टुकडो नही खाऊ गा सारै दिन उपवास करू गा  
 भजन करू गा-रामायण बाचू गा  
 सज्या ताणी मन्न कोई मना छेडियो ।  
 अर सुण टावरिया नै भी सै नै  
 छाती कै नीचै दाब्या रहिये  
 परळ की फेट मे नही कोई सो आज्या  
 क्यू ? मैं करर्यो हूँ पाठ  
 बीच मे मैं उठकै कोन्या देखू गा के होर्यो है

यूँ कह रामायण की पोथी मेल रूहेळ पै  
 डरतो डरतो रामायण वाचण नै लाग्यो  
 'दोन-दयाल विरद सभारी मेरै मे मत करिये खारी  
 मगळ-भवन अमगळहारी परळै की क्यूँ बात विचारी  
 में नर हूँ मेरै है नारी दोन्यू काळी गाया थारी ।'  
 एँया मैं जद पाठ करै थो  
 तो चाणचकै ही मनै सुण्यो ज्यू  
 म्होलै में दो-तीन घरा का—  
 बरतण-भाँडा उछळ पड्या हो ।  
 इबकै म्होलै मे परळै आगी दीखै है  
 तेरस चोदस का दो दिन तो  
 किहया राम नै चकमू देकर काड दिया था  
 आज आज भी और रामजी जे चकमै में आज्याता तो  
 तडकै तो आपा ही बीकै स्हारै के था ।  
 पण इब कैया करा, कठे जावा परळै तो आगी दीखै ।  
 और नही तो म्होलै मे यो—  
 घमघमाट यो खडबडाट ये खुडका भुडका क्याका हो है ।'  
 मैं रामायण छोडी अर सीदो ही भाज्यो  
 अरै सुणै है ? क्यामे बडरी है ? परळै तो आगी दीखै ।  
 घरती हाली थी के ? इब खुडका होर्या था ।'  
 वा बोली—  
 "थारै कानी को तो मोक्यूँ हाल्योडो ही है ।

एँया ता गुडना तो रामजी गेजीना ही घर घर होयो ।  
 आची की चाची कै, भादर की भाभी कै  
 दो-या कै गौगला हुया है ।  
 बाकी ही थाळया बाजी थी ।”  
 में मुणता ही चित्तगम को मो होगो अर मनमे मोची —  
 ‘परळै कै दिन भी गीगा जगने की गुरमत कैने मिलगी  
 जद होगी दीसै है परळै ।  
 जलमावण सँ पिड छुटंगो जद ना मारंगो ।  
 एँया ही कैन मारंगो ।  
 देखी तेरी परळै ल्या घालदे रोटडी  
 क्याको माग कर्यो है”



### सुवाल—जुवाव

“एक गणित को अध्यापक छोर नै पुछयो  
 एक एक मे जोडै तो कुल कितरणां होवै ?”  
 “सर, पैल्या तो एक एव जुड दो ही होवै  
 परण दस धारा बरसा मे दस-बारा होवै ।”



## न्यारा न्यारा मजा

टोपी को मजो कुछ न्यारो ही है  
 पगडी को मजो कुछ न्यारो ही है  
 भच्छर माखी अर छिपकलिया  
 मजडी को मजो कुछ न्यारो ही है

रमगुल्ला वरफी कळाकद  
 मावै का लाहू भी खाया  
 पण छा अर काच कादा मे  
 रात्रडी को मजो कुछ न्यारो ही है

दाहू कळा अमरुद आम  
 अगूर घगा ही ग्या देख्या  
 पण काळो मिरच अर लूण पडी  
 रात्रडी को मजो कुछ न्यारो ही है

तवला मितार अर वायलीन  
 अर क्लार्नेट भव बजा चुक्या  
 फागण की धमाळा कें मार्गें  
 ढपडी को मजो कुछ न्यारो ही है

मिगरेट चिलम पीकै देखी  
 हक्को भी गुडगुडाकें देख्यो  
 पण आनें कोई ममजाद्यो  
 धोडी सो मजो कुछ न्यारो ही है

## खाटली पीडली

म्यागी तेरी गइमिवल भी आज वार को काम करंगी  
इमरजेंसी है तेरी चिट्ठी आज तार को काम करंगी  
आज देस सेवा करणें को भीको धरू हाथ मे आयो  
तेरी जीव भेजदे नेफा या कटार को काम करंगी

के बोली भाई को व्या है, कुछ गंगा है बणवाणें का  
अरै वावळी वयू कररी है लक्खण मन्ने मरवाणें का  
कदे राम सँ डरी नही तू पण मुरारजी सँ तो इव डर  
बणवाणा तो दूर बात करता ही पकड है धारणें का

मान मत मेहमान मन मे चिनेक धडको  
खोल मू सीदो वज्यू रस्तो बगडको  
पूरियां नै छोड आमे के पड्यो है  
ताणकें सी खीर को तू ले सबडको

ढोवसो सी नाक मूँडो अणमणू है  
होठ बडकूला र आंख्यां पर पणू है  
देखता ही बीन नै आज्याय मिरगी  
बीनणी है या क कोई बीनणू है

बेटी हाळा भी कोई मूरख थोडी था  
 मुद्दो नेकर तीन आदमी पावम की रातने पधार्या  
 आगी मेवा अर वाणच फळ सोक्या का गोकडी रुपय्या ।  
 एकेक कँ लोटा की वदी  
 ग्यारा गड्डी मोटी मोटी नई चिलकती  
 वनडै कँ हाथ मे दे'र पडत पचा नै म्हुरत पूछ  
 दो दिन कँ भीतर व्याह माडकँ  
 त्रँ पाळा रातने चल दिया

दिन उगताही छीतरियो तो फूल्यो फूल्यो  
 नगर न्यूँत करकँ बरात कँ तागी आयो  
 पेटी मे स लोट काडकँ ओज्यूँ देग्या  
 दिखता ही भूँटेरी आई, अरै कसाई यो के करगो  
 मारी की सारी गड्डी जैहिद हाळँ लोटा की भग्गो  
 रँ नरसगिया में तो भग्गो ।”

पण नरसगियो लोटा को भूगो थोडी थो  
 बीकँ तो दिमाग मे खाली एक बीनगी ही घूमँ थी  
 हाथ पगा कँ मैदी माड्या  
 माथै पै टीकी आख्या मे काजळ घाल्या  
 पैजणिया की छमछम करती बीकी आन्या मे भूमँ थी  
 बीकँ तो दिमाग में खाली एक बीनगी ही घूमँ थी  
 रोल्यो बापूजी इव क्यूँ होगो सो होगो  
 इव तो वम दागल्यो बात नै



और तयार करल्यो बरात नै  
 क्यूँक बटे पू चणू जरुगी आज रातनै ।  
 मोच ममभकै यूँ माडी उटा पै कू ची  
 और बरात टेम पै पू ची  
 छोरी हाळा तयार सडधा था  
 वोल्या बस इब जल्दी ही भद्रा लागुगी  
 मोइ कु वर सा' सै सै पैल्या फेरा लेल्यो  
 क वर साव तो फेरा ही लेवण आया था  
 चा' पाणी अर कलेवो धलेवो तो रोजीना ही होवै है  
 पण व्या की तो वात चालकै ही रँज्या है—  
 निडसेक प्रभुजी आज सुणी है  
 (बिया कु वरजी भोत गुणी है)  
 बीस कीम की मजल ऊट सै करकै उतर्या  
 मीदा फेरा मे जा बैठ्या  
 जठे वीनणी धोळै सै चादरियै को मारकै दुमालो  
 पैल्या मै बैठी ऊगै थी  
 होमकु ड मे पैल्या सै आगी बळरी थी  
 नरसिगियो जाकरकै बैठ्यो पडत फेरा सुरू कराया  
 सिरस्यूँ कँ तेल को कचोळो ओज होम मे  
 वो सिळोक वोलण नै लाग्यो  
 'ओम श्री गणेशाय नम  
 धरम छेत्रे कुडू छेत्रे मम वेटा यू यू सवै'

हाजी, देखो घरम ओर कूड नै छेतो  
 सै वेटा यू-यू सोज्यावो ।  
 श्री गुडचरण सरो रज'  
 मेरै चरणा मे सारो गुड ल्याकर मेलो  
 अजो कु वर मा' ऊ गा मतना, चेतो राखो  
 काम मेळ मे आणैवाळो ही इव ममजो  
 ओम म्याति स्याति स्याति ।  
 देखो चेतो कगे कु वर मा' ऊ गो मतना ।”

इरकै कु वर साव कै चसगी  
 आख ममळता बोल्या-रै व  
 मन्ने ही मन्ने जद का साया जार्या हो  
 थारी बनडी नै तो वरजो  
 देखो कैया मेरै ऊपर लटकी आवै  
 ईने थम क्यूँ नही जगावै  
 ल्याओ देखा वीडो को घोचो ही देखो  
 आगी ठाली वळरी है वीडो ही चासा  
 पडत बोल्या- होम कु ड मे वीडो मतना चाम लियो ये

इव वम काम मेळ मे आगो  
 अमर रह्यैंगो थारो सागो, जैया सोनूँ और मुहागो  
 जिया खाट की वाई कै सागै रै पागो ।  
 इव थे दोन्यूँ बैठ्या बैठ्याही-आगी कै पेरी देख्यो

और कुवर सा' हाथ वीनणी को थारै हाथ मे लेल्यो ।  
 वाई तेरो हाथ काड, पकडल्यो कुवर सा'  
 वोलो आगी कै आगै सोगन त्या कू हूँ  
 'मैं आगी कै आगै यूँ सोगन खा कू हूँ'  
 पडूँ नरक मे जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा  
 'पडूँ नरक मे जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा'  
 तने छोड मैं इमरत ने भी नही चाखू गा  
 'तने छोड मैं इमरत न भी नही चाखू गा'  
 तने जलम भर तानी मैं सागै राखू गा  
 'तने जलम भर तानी मैं सागै राखू गा'  
 पडूँ नरक मे जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा  
 'हा पैली पडलियो क  
 इज दो वर थोडी नरक मे पडूँगा ।'  
 "वम इज काम मेळ मे आगो उठ ज्यावो थे ।"

फेग नेकर डेरे आया

जणा लैर वा लैर वीनणी हाळा आया

तडवै दीतवार है परम्यु मावम है अर इज भद्रा लागीगी  
 मो थे चा पाणी तो वरल्यो ।

अर ऊटा पै कू ची धरल्यो ।

छीतगियो मनमे मोची-

भद्रा इच लागीगी के मने लागीगी दीगै

वा' मुरारजी आज थे देस-दुख मे हूब  
 सोच समभकै रातदिन फिडको त्याया खूब  
 फिडको त्याया खूब विछायो सट्टो लाम्बो  
 ने जादू की छडी कर्यो सोने को ताम्बो  
 कोई की उतरी कोई कै चढगी बुखारजी  
 आया ही है वैधराज बणकर मुरारजी

देसाईजी आपकी माया अपरपार  
 सोनू सट्टो सैमगा, सोगा सभी सुनार  
 सोगा सभी सुनार कर्यो गैणाँ को फदो  
 चौदा कैरट राख फेरकै दस पै रदो  
 "लेल्यो रिच्छया वोड राष्ट्र रिच्छया कैताई  
 जो देसाई ने देवै बीने दे साई"

जैयाँ रोगी रोग भोगकर तन नै चावै  
 जैया भोगी भोग भोगकर धन नै चावै  
 जियाँ सीतळा माता चावै ठडी रोटी  
 बैयाँ ही श्री नेरूजी मेनन नै चावै ।

कोई व्हवै बापडो मेनन ठालो है के काम करैगो  
 कोई बोलै वूडो होगो इव बैठ्यो आराम करैगो  
 मै वूँ हूँ ऐयाँ बतळावणिया नै ही सा चिन्त्या है के  
 बाने के पचोळ आगलो चूडी की दूकान करैगो

खरबूजो दिखज्यावै तो तू चाकू बगज्या  
 कूकडियो दिसज्यावै तो भट ताकू बगज्या  
 बडै भाग सँ जे दिखज्या मेठाँ का टावर  
 तो नकली बढूख ले'र तू डाकू बगज्या

जीकर भी या जिन्दगी जीणी नही आवै  
 कोई प्याव भी तो म्हाने पीणी नही आवै  
 इच्छ्या तो है बीडी की जगाँ सरवन ही पिवा  
 पण टेम पै कट्रोल की चीणी नही आवै

जिन्दगी साँच्याणी हराम होती जारी है  
 आये दिन रिपिये की छदाम होती जारी ह  
 घणै चाव सँ न्हाण नै ल्याया था मोती सोप  
 बा भी पडी पडी हमाम होती जारी है



## म्हानै भी छोरो व्याणू है

दम दिन पैल्या की ही थानै बताऊ  
एक अजनबी सो अघेड मन्नै आ बोल्यो  
म्हारै भी लडको व्यावण सावै होर्यो है  
मैं अखवार बाचतो सोची होर्यो होसी  
पण बीकै क्याको धीरज थो  
ओजू बोल्यो-म्हानै भी वेटो व्याणू है  
मैं अखवार पटक कै बोल्यो व्याद्यो तो, मैं बरजू हूँ के ?  
हक मेरै सै ही व्याणू है ।  
मने यू नाराज देखकै  
वो भट जोड्या हाथ, पगा मे पगडी मेली  
कह्यो गिडगिडाकै थे यू नाराज मना होवो  
मैं तो थारै काना मे काडण आयो थो क  
कोई छोरी हाळो थारै सै टकरावै  
तो थे मेरै छोरै को भी ध्यान राखियो  
मैं बोल्यो बाबाजी, इव वै गया जमाना  
चोदा कैरट सोने का गैणा घालणिये-  
छोरा नै इव छोरी हाळा देखणनै कोनी आवंगा  
इव रामा का भजन करो थे

इत तो छोरै हाळा ही छोरी रं ग्यातर  
गांव गांव मे छोरी देखगाने जावगा  
चौदा सै चौत्रिस करंट—

ताणी का गैणा तता वताक  
गुप चुप भाव जचाकै मीठी बात वणाक  
बाप आपका बेटा यू ही परणावैगा  
जा बेटा का बाप नही यू कर पावैगा  
बा बापा का पूत लाडला—ठूठ कु वारां रंज्यावैगा ।

एक बात में और वताछूँ, छीतरिये नं जाणो हो ना  
बोकै भी बेटो व्यावण सावै होर्यो थो  
पण छीतरियो ठोक-बजाकै सैने कै थो  
घालू गा तो चौदा करंट मै भो पन्द्रा कोन्या घालू  
चाये मेरो नरसिंगियो कु वारो रंज्या  
पण बिच्यापडै की यू—फिरता फिरता चौदा जूती घमगी  
जद कोई चौदा करंट कै  
गैणा मे छोरी को दादो राजी होयो  
भिडताही छीतरियो—छोरी नं छल्लै की छाप प्हराई  
पण चौथै दिन ही बीकी  
ऊपर की सा पालीम उतर्याई  
बो क्याको चौदा करंट का वणवावै थो  
आठाना की आठ छाप मेळै मे सै लेकै आयो थो  
नेग नेग पै न्यारी न्यारी छाप बरतणै की सोचै थो

पाच मिन्ट में छोरे हाळा  
 भंसागाडी मे वठार वीनणी विदाई  
 और लुगाया हास हासके ओळ्यू गाई  
 क्यू भी हो जी  
 छोरी हाळा चाहे मिजमानी कोन्या दी  
 (पण) वनडे के वनडी तो आई  
 पण वरात जद पाछी आई  
 तो नरसिंगियो सही अथर मे  
 वनडी न 'अर्वागिनि' पाई  
 वा सरमाती सी बोली "जल्दी जल्दी मे-  
 में तो मेरी एक टाग घर मे भूल्याई  
 इव में भंसागाडी मे से कैया उत्तरू ?"

म्होले हाळा बोल्या  
 भाया अदले को बदळो है यो तो  
 जितणे ही कैरट ना गैणा घाल्या जावे  
 उतणे ही कैरट को वनडी घरमें आवै ।'  
 पण नरसिंगिये के काना मे  
 पडतड का सबद गू जर्या था इवताणी  
 'पहू नरक में जे कुछ भी मिथ्या भाखू गा  
 तन जलम भर ताणी में सागै राखू गा'  
 बोल्यो-वापूजी एवर थारी टाग अठीने भी पकडायो ।'



## आज की रादा

एक रात की बात, दस बजे  
देख मिनेमां को सँकिड सो जद रादाजी घर मे आई  
पू च रुम मे वैग पटक, साडी बदळी  
कर्यो मरकरी बल्व ग्रॉफ ग्रीन नै ग्रॉन कर  
उछळ काँट पै वैठी, थोडी आडी होई, सोवण लागी  
पण सोणो को यो मतलव विलकुल कोनी थो  
कै वीनै कोई नीद घेरली  
पड्या पड्या डल्लो पिल्लो पै चाणचकै ही  
दूर द्वारकापुरी गयोडै एक फ्रँड की याद सताई  
जीमै ई को बालापण सँ लव होर्यो थो  
भोत देर ताणी तो रादा  
उळजी रही विचारग कै ही घणै जाळ मे

चाणचकै ही उठी, फोन को उठा रिसीवर  
मथुरा पी सी ओ ' सँ न वर मिला वताई  
सिटी द्वारका, फोर, दू, जीरो  
पी पी मिस्टर कृष्ण  
अवी या अरजेंट ट्रक काल बुक करणी''

इतगू कैकर छोड रिसीवर  
फिल्म इन्डिया की कापी ले वा थ्रोज्यू मै आडी होगी

थोडी ही देर मे फोन की घटी वाजी  
मुणकर रादा होगी राजी  
जैया हज को सम चार सुण होवै काजी  
कहयो-‘हलो रादा स्पीकिंग ।  
ओह्,हो तो ये घर मे ही था ?  
हा हा गुडनाइट, गुडनाइट  
हलो हलो डीयर  
पैल्यां तो था ये कुछ नीयर  
अब थे देयर अर मै हीयर  
बोलो मेरो कैया मन लागै बिन देरया  
मनै विलखती छोड एकली जद सै थे द्वारका गया हो  
भूख न लागै नीद न आवै  
सारी सारी रात थारी याद सतावै ।

बैया तो मन बैलावणनै दिनगे-भज्या  
होटल मे क रेस्तरा मे मै जाऊ तो हूँ  
चा' कै सागै टोस्ट फोस्ट  
या विसकुट-फिमकुट खाऊ तो हूँ  
पण डीयर मेरो तो मूड आफ ही रै है ।  
बटर टोस्ट टेबिल पै आता ही के जाणा

याद थारली माखन-चोरी क्यू आज्यावै ।  
जद मिटा मे सोक्यू अपसैट होज्यावै

कदे फोड्स आज्यावै ह तो  
बिना मूडकै भी मैं क्लब मे वार्क मागं यूँ होलेवू  
पण पिगपाग मे इव विलकुल भी मन नही लागं ।  
आज अठे रीगल टाकी मे 'मुगने आजम' सुरु हुयो है  
'सैकिड सो' मे चली गई थी  
वीने देख'र तबियत बिगडी नीद नही आई तो सोची  
थासै ही दो मिनट बात कर जी राजी करल्यू  
नही नही डीयर इतणी तो बात नही है  
पण और दिना की सी तो आज की रात नही ह  
ल्यो में साफ साफ ही कैदूँ  
'जब प्यार किया तो डरणा क्या  
छुप छुपकर आहे भरणा क्या'  
डीयर थानै किया बताऊ  
कितणू दरद भर, भर्योडो है वस ई गाणें मे  
'लव' की नही मगर 'लाइफ' की  
एक 'फिलासाफी' को 'ट्रू पिक्चर' दीखै है  
आ गाणा मे 'लव' को पाठ सिनेमा हाळा  
कितणू बडिया रोज पढावै  
एक रप्यो दो आनां मे के नो आनां मे ।  
डीयर कदे वगइ-ववइ चानणें को प्रोग्राम वणावो

ता पैल्या काइ डली रिंग मी  
 मं भी सागै चालू गी, है हैं  
 नही नही डंडी ई मे 'इ टरफियर' विलकुल न करेगा  
 मैं कैबूंगी कोई 'इ टरव्यू' को 'कॉल' बठै सै आयो  
 जद तो मम्मी भी खुम होगी  
 खुमी खुसी मे 'टिफन,' 'अटेची', 'हॉलडाल' खुद तयार करैगी  
 हाँ तो या माइ ड मे राखियो  
 इय तो टाइम भी 'गोवर' होणै वाली है  
 अच्यया- 'टाटा-बाइ-बाइ'



## चीनी फौजाँ अर चिलचट्टा

चिलचट्टा घबरा गया चीनी फौजाँ देख  
 इव आपा दौराँ वचाँ ई मे भीन न मेख  
 ई मे भीन न मेख पकड ग्याज्यासी कच्चा  
 सूअर नै भी नहिँ छोडै मूअर का वच्चा  
 पण भारत की फोज दाँत कर देसी खट्टा  
 राजी हो-हो दुआ मनार्या ह चिलचट्टा



## गोवा पाछो भारत आयो

बोळ वरसा पैत्या की मैं बात बताऊ  
राम ही जाण कठे दास थो  
पुतगाल के टावर कोन्या होया करता  
जद वो म्हाटो देख भाळ के च्यारु कानी  
भारत मा के कर्ने आके विरै विरै की बात बरगाके  
और भुळा चुपळा  
गोवा ने गोद ने लियो  
दमरा दीव जो गोवा का छोटा भाई था  
जाँ को गोवा मे बिनेस मो' पैत्या से थो  
भाई ने जातो देख्यो तो ये भी म्हाटा गैल होलिया  
पुतगाल माधी क आपणें मँजा में ही मदगी चोखो  
एक जग न गोद लेग आया' -  
तीन मिलगा आपानें, के घाटो है ?  
हँया वो तीन्यु वेटा न पाळें लागो  
इया वरम पर धरम गीतता चय्या गया अर  
पुतगाल के मनमें ओज्युं पाप उठचायो  
जद वो कोई चाल सोचवें  
अफीरा के अगोला ने और गोद को वेटो मा यो

सोची कोनी आजकल का—

जायोडा ही किसान न्ह्याल करै है—

जद ये देम देसका, भात भात का, गोद मोल का  
तन बुढापे मे कैयाँ के न्ह्याल करैगा ।

क्यू भी हो जी वेटा कै मन मे तो कोई कपट नहीं थो  
पण जो सारो कपट वाप कै मनमे भरगो

जद वो आने विरै विरै का दुख ही देणा सुरू कर दिया  
आ तीन्यू भाया ने वोटयो

“वम इवमे ये तीन्यू भाई  
जितणी भी हो करो कमाई

वा सारी मन्नें ही द्यो पाई की पाई”

तो भी ये तीन्यू भाई क्यू भी नहीं बोल्या  
अर वो आने घुरड घुरड कै सने खागो

खायो मो तो खायो पण ये

ज्यू ज्यू होया समभदार बो त्यूँ त्यूँ आने कसकर राग्या  
‘इतणू खावो, इतणू पैरो, ऐ या चालो’

तो भी ये तीन्यूँ भाई क्यूँ भी नहीं बोल्या

पुतगाल देखी कै ये तो तीन्यूँ ही गोगली गाय ह  
इया सोचके धीरे धीरे आपे हाथ उठावण लाग्यो

जद भीतर ही भीतर आणे हियो पमीज्यो

रोता रोता मनडो भीज्यो

अर किरोद को ज्वार धधक कर मनमे सीज्यो ।

ई अरमे तव भारत मा की भी जजीरा दूट चुकी थी

और फ्रास भी भारत मा के जायोडा नै  
 पाछा सू प'र चलयो गयो थो  
 पण पुत्तगाल गीगा को भूखो चिप्यो पड्यो थो  
 गोवा दामण दीव आपकै  
 असली मां वापा नै दिल्ली चिठ्ठी भेजी  
 वापूजी, म्हे तीन्यूँ भाई अठे भीत ही दुख पार्या हा  
 ये कंयाकै दुम्ट कसाई कनै म्हानै रख राख्या है  
 यो एया को जालिम नागो घुरट घुरड कं म्हानै खागो  
 ज्वयो म्हानै गिण गिण रोटी देवै गिण गिण गाबा देवै  
 वात करा तो वात वात मे टाग अडावै  
 अर ऊपर सै वात वात म आख दिखावै  
 हामा तो हथकडी पहरावै । त्वास्या मूळी पर लटकावै ।  
 इयां सास भी म्हारा वीने नही सुहावै ॥  
 वापूजी, इय पुत्तगाल के सामन मे म्हे उयतागा हा  
 म्हान पाछा घरा बुलाल्यो  
 म्हे म्हारी मा की गोदो मै आणू चात्रा  
 म्हान छानी मै निपकाल्यो म्हान पाछा घरा बुलाल्यो ।  
 चिठ्ठी वाच'र नेह्म यू मन मे सोची  
 'टावर ह आमा मन जोनी नाग्यो होमी'  
 जद त्रै जापट थापड रगगे की ही सोची  
 पण त्र पुत्तगाल न भी जागज लिख भेज्यो  
 'इय त्र म्हारा टावर तर रान कोनी रंगू चावै  
 मो भाया त्र रिग्पा ररक

म्हारा तीयूँ टावर म्हाने पाछा करदे  
बुरो मनाँ मानिये वात को ।'

या चिठ्ठी जद पुत्तगान के कन्ने पू ची  
तो बैकी मूछ्या फडकी हो ऊ ची ऊ ची  
जाण आरयाँ पै फिरज्यामी काळी कू ची  
माथे की'र हिये की च्यारू सागै फूटी  
और अकडकर एया को अमचुर होयगो  
जाण कोई एडी सै ले चोटी ताणी वळ ही वळ हो  
अकड अकड मे पाछी चिठ्ठी लिखी क  
"तेरा कुणसा टावर ?

गोवा दामण दीव, सदा सै मेरा है अर मेरा रैगा"  
चिठ्ठी वाच'र नेरुजी चक्रर मे पडगा  
ये गोली का तीर काळजे के भाँ गडगा  
पण वै धीरज सै ही वाम काडणू चायो  
ओज्यू चिठ्ठी लिखी क भाया एँया मत कर  
म्हारा टावर तेरे कन्ने कोन्या रैणू चावै म्हारा पाछा देदे"  
ओओज्यू कलडाई में ही लिखके भेज्यो कुणसा थारा टावर ?  
ओओज्यू बात चलाई तो बस खबरदार है ।  
नेरुजी ओओज्यू गम खागा  
पण टावरिया की पीडा उतणी ही वडगी  
वाकै भी ये वाता गडगी  
थोडा दिन पीछे नेरुजी पुत्तगाल नै ओओज्यू चिठ्ठी लिखके भेजी  
तू म्हारे टावरिया नै इतरणू ख्यारै है



ई सं म्हारी भी आत्मा भीत दुग पावं  
 सो तू भाया म्हारा टावर म्हाने देदे  
 और नही तो में पचा न भेळा करस्यु  
 पाछो चिठ्ठी आई 'मेरा सारा पच पजोस्योडा है  
 याने जो करणू सो करल्यो'  
 'नेहरूजी ओज्यु लिख भेजी  
 'भाया ऐ या बात बढाणी चोखीकोनी  
 आ बाता मे सार नही है  
 तेरी-म्हारी यू कोई तकरार नही है  
 सो तू भाया म्हारा टावर म्हाने देदे ।'  
 ऐ या चिट्ठी पनी मे ही तेरा चौदा बरस बीतगा  
 पण ऐ या रोएँ सं कुण रावडी घाले

पचा को भी हुयो फैमलो "तीन्यू टावर भारत का है  
 पुर्तगाल को वापें हरू-अधिकार नही है  
 पुर्तगाल बाने भी पाछो कागद भेज्यो  
 'पचा को करणू तो मेरे सिर माथे पं  
 पण यो नाळो अठेई पडंगो ।  
 में देखू गा मेरे सामें कुण आकर कं किया लडंगो'  
 जणा पच भी मूँडो छा सो करके रैगा

जग्गा माडियो मेनन वीकै एक तारणकै भापट मारघो  
 आख तिरमिगाई'र गाल पै पाचू उपडी  
 पड्यो लडखडाकै, च्यारू खाना चित होगो  
 भूल्यो मा हेकडी, सल्डदे सीदो होगो  
 गोलै को गुर जूतो होवै ।



## पाडौसी

५५

५५५

५५६

५५७

म्हे एक अचछपै पडौसी की जियां रहर्या हां  
 वा की हर हरकत नै नादानी समझकै सहर्या हां  
 म्हारें सँ के दुराव, के छिपाव ?

जणा ही तो विना पूछया बता ज्यावै  
 चीणी को भाव, गीवाँ को भाव ।

जद सँ वाकी घडी खोई है  
 दिन मे दस बार पूछणनै आवै  
 के टेम होई है ?

५५८

५५९

५६०

आपणें अर पराये को भेद तो वै सीख्यो ही कोनी  
 लेमनसँट जो माँगकै लेगा था  
 पाछो दीरयो ही कोनी ।

५६१

५६२



## कढी-विगाड

बण्यो बणायो काम विगाडै  
वाने जाणो कढी-विगाड

सूरत मे जो दिसै सूम सा  
मूरत मे माटी की लोथ  
ऊपर सँ तो भारी-भरकम  
पण भीतर सँ जाके थोथ

जाका भाव-विचार निकरमा  
जाकी बोली भी कठफाड

ये नहि जाणै भाई चारो  
ये नहि जाणै के है प्यार  
नीच करम करवाणू हो तो  
ये हो सँ सँ पैल्या त्यार

ये अकरम मे आगे पावै  
सुब कारज मे हालै नाड

ये करदे राई को परबत  
 ये करदे ग्यारा का पाच  
 य साची नै भूठी करदे  
 और भूठ नै करदे साच

अल्लम गल्लम लगा लफोसा  
 ये कर देवै तिल को ताड

गोविन्दो भी कोनी जाणै  
 ऐया कै नन्दाँ का फद  
 चाणचकै ही ये आ टपकै  
 दाळ भात मे मूसळचद

और बिनाँ बतळायीं ही ये  
 तुरत उधारी ले ले राड

## पशु मेल मे कवि-सम्मेलन

दिन उगता ही एव डारियो एवमप्रंस चिट्ठी ल्याकर दी  
घणी खुसी सँ खोल'र बांची  
नगर भगतपुर जिला जगतपुर  
भोत जोर को पसुआँ को मळो भररघो है  
बी मेळ मे भोत जोर के कवियाँ को सम्मेलन होसी  
बी कवि सम्मेलन मे थाने भी आए है  
गाडी भाडो तो चाँगा ही  
और कोई दस्तूर हुवे मो ये लिय दीज्यो

चिट्ठी बांच'र कई तरै का भाव उठघाया  
पसु मेळे मे कवि-सम्मेलन । के मतवल है ?  
के कवि-सम्मेलन सुणवाने पसु ही पसु भेळा होवंगा ।  
यानी मिनखा के मेळे मे तो कविता बोळी ही होली  
इव पसुआ मे भी तो जागृति करणी चाये ।  
पसुआ को मेळो भी तो जोर को लिरयो है  
जे कोई जोर को पसु आ कविता कँती बखत लैर स  
कवि के दूढ मारज्यागो तो  
कविजी गुरगडी खाता नीचे आवंगा ।  
और बीर रस की कविता ने नीचे पड्या पड्या गावंगा !

ओ । ई खातर ही साफ लिखी है क  
 भौत जोर के कविया को सम्मेलन होसी  
 पण आपणें तो सरीर मे ज्यान ई कोनी  
 आपा ई कवि सम्मेलन मे किया निभांगा  
 (पण) देखी जासी, राम करंगो सो होवंगी  
 आपानें तो रिपिया चाये  
 पीछे आपा पसुआ के मेळे मे ही क्यू  
 मुरदा के मेळे मुसाण मे भी जाके कविता बोल्यावा'  
 पाछी चिट्ठी लिखी— च्यारसौ रिपिया गाडी भाडो ल्यू गा  
 पसुआ को कवि-सम्मेलन है  
 मिनखा को होतो तो क्यू कम भी ले लेतो'  
 चौथे दिन ही फट वावडती चिट्ठी आई  
 फलडाफाड जुबाब लिरयो थो  
 'ढाई सौ रिपिया लेणा हो तो आज्यायो  
 और नही चुप्पी खाज्यायो ।'  
 में फट तार दियो 'आरचो हूँ ।'

दस बारा दिन पीछे ही वो सम्मेलन थो  
 बी दिन में गाडी से मोटर मे—मोटर से गाडी मे—  
 चडतो'र उतरतो नगर भरतपुर सज्या च्यार बजेसी पू च्यो  
 बेरो पाड्यो,  
 दिखणादी जोडी के स्हारं पसुआ को मेळो भररचो थो  
 बीटो पेटी तार बठे में खड्चो खड्चो देखणें लाग्यो—

क कद सयोजकजी फूला की माळा ल्याकर मनं पहराव  
 और जीप सँ मनं गेस्ट हाऊस ले ज्वावै  
 तातो पाणी करा न्हुवावै, ताती ताती बाँफी प्याव  
 कद सयोजकजी फूला की माळा ल्यावै ।

(पण) वठे किसा सयोजकजी था ।

कानी कानी हरियाणं का नारा नाथ तुडाकै भाजै  
 जाकै लेरघा बाका मालिक

मोरी पकड्या लटक्या लटक्या चालै सागै

वूडी गाया-बाछा बाछी, काळी काळी भैंसा आछी

“तेरै सौ बर जच्चं तो लेज्या भाया—

पण दिया पिछै ल्यू गा नहि पाछी ।”

ऊट खड्या अलडाटा मारै

भेड बकरियां त्राहिमाम् त्राहिमाम् पुजारै

यू च्यारू कानी मेळै मे भात भात का पसू खड्या था

च्यारू मेर देखकै सोची-गया कोनी बिकणा आया

बै इत्र ताणी कोनी दीरया

पीछै में मेरै कानी ही देरयो और जोर सँ हास्यो

गवा बिना तो पसुआँ को मेळो पूरो ही कोनी होवै

च्यारू कानी आख फाडकै देखूँ टक टक

पण कोन्या दीरया सयोजक

एर भागतै बाछडियै की मेर विस्तरबदक माईंटाग उळजगी

कैया जैया बा काडी, तो सूटकेस पँ गोबर करगो

जणा करम नै रोतो रोतो





जद नौ बज कै माठ मिनट पै कवि सम्मेलन मुरु हुयो  
तो-भौत घणी दरिया त्रिछरी श्री  
जा पै बैठ्या था हज्जारा लोग लाठियाँ ले ले करके  
जाके पीछे लोग खड्या था-  
आप आप कै ज्यानबरा की मोरी पड्या  
वाँके भी लर्या नै-कोई चढ्या ऊट पै  
अर कोई घोडे पै, भैसे पै कोई चढ सम्मेलन मुणवा आया था  
सभापतीजी आमण माड्या  
से से पत्या कवि मूमळजी  
एक बीर रम की कविता यूँ बोलण लाग्या  
अर धरती नै आममान से तोलण लाग्या  
भट भट फट फट-गोडरेज का सा ताळा यूँ गालग लाग्या  
“अरे चीन तूँ क्या बरता है  
तूँ मेरी भू पर तक्ता है ।”  
इनणी सुणता ही बस सुणजाळा भट टोक्यो ।  
अरे बैठ्या भू का बचा ।  
भारत मा नै भू कैर्यो है । थोडी सी भी सरम नही है ।  
कवि मूमळजी अज्युँ बोत्या-थे भू को मतलब नहिँ समज्या  
देखो-

‘बस चुप रंज्या

जायोडो काल को, आज भू को मतलब समभावण आयो  
अठे भुजा कै पोता होगा ।’

कविजी बोत्या—

अच्छा अब मैं एक नई रचना पढता हूँ—

“हम फौलादी वीर चीन का चूरा कर देगे

कूरा, खूरा, गूरा, घूरा, डूरा कर देगे

हम फौलादी वीर चीन का चूरा कर देगे !”

इतना मे लैर्यासी आकै एक साड जोर सै टाड्यो

मुणता ही कविता को पानूँ नीचै पडगो

कविजी त्रै जा है वै जा है !

इवकाळै कविता बोलण नै गीतकार नरसीजी आया—

“ओरे नरसी तन्नै गाया सरसी”

पबलिक मे सै एक जगूँ चुकै सी बोल्यो

“भात भरण तन्नै आया मरसी”

इतणै मे नरसीजी विदक्या

“के तो भात भराल्यो अर के कविता मुणाल्यो !”

इवकै मेरो लम्बर आयो

(मैं) एक टाग मे पैर पजामू

अर टूजी टाग में जागियो पैर्या

छत्तो ताण, हास्य रस की कविता यू बोलण लाग्यो

“इकै छीको, फितरू ही छीको छत्ते पै छीक पडैगी

इवकै छीको—इवकै नेळा का छूतका प्रठीनै फीको

कविता मुणता ही पबलिक ‘सीरियस’ होगी

सोची बुद्ध कैताही कविजी छत्तै की सिर मे धर देगा

जणा लोग गुममुम भाठा ना

मुणवो कर्या न बोत्या यू बी

मैं ओज्यू बोल्यो—“रै वेटी का बापो  
हास्यरस की कविता पढर्यो हूँ क्यू तो हासो  
हा हासो देखा”

पण कैणो से कुण हासै थो  
सै सोचै था हास्या अर छत्तै की लागी  
ई हासी मे के काडागा ।

मैं चुप चाप बैठगो पाछो  
ऐया कविता कैता सुणता बारा प्रजगा  
मेरो लबर आवै अर सै गुम सुम होज्या  
कई जणा बैठ्या ऊगै था और कई आडा होगा था  
म्हाटा सूत्या सूत्या ही हेला मारै था—

‘वा वा ! ऐया की ही एरू—दो और आणदे ।  
वा वा या भी आछी लागी एरू इसासी और फीकदे ।’  
के बेरो सुपने मे बोलै था क सापरत ।

दो वा डका लाग्या, सयोजकजी बोल्या—  
इब सम्मेलन खतम हुवै है

सै कवियाँ नै भीत भीत धनवाद देऊ हूँ”  
नही बात भी पूरी होई जी पैल्ला ही

आप आपका ले रमालिया चादर, गमछा, साफी, धोती  
सत्तर अस्सी जणा मच कै कानी

ऐया भाग्या जागै कविया नै बाधकै मारसी  
कवि—सम्मेलन खतम हुयो है

क या कोई फटियर मेल ठेसन पै आणी ।

और सीट गोकर्ण ने जाणें  
 यह क्लास के मुसाफरा की—भोड एक डब्बे मे भागी  
 मेरो पग चिथता ही मैं जोर से पुकार्यो  
 “रै वारै देखो मने तो दाव लियो रे”  
 सयोजकजी मेरो हाथ पकडके खीच्यो  
 “थे इने आज्यावो, अठे मच पै मेळो देखणिया सोवंगा ।  
 वारै सोणें ग्वातर न्यारो तवू आगै वेंगवायो है”  
 “मैं वाल्यो मन्ने थारै तवू के माई कोन्या सोणू  
 मन मेरा रिपिया देदयो—मैं पली गाडी से जास्यू”  
 दो एक जणा और भी मेरै सागं होगा  
 सयोजक जी हेलो मार्यो—“रामेसरिया ।  
 सब कविया की फीस चुकादे लिया अठे ही  
 पाच मिट मे रामेसरियो  
 चूणें के चूणें नै ही टिचकारी दे हाकतो लियायो  
 सयोजक जी बोल्या—  
 दाई सौ हाळा नै तो ये व्यावणसार भंस पकडादे  
 और डेडसो हाळा न ये गा सम्हळादे  
 आसपास से आवणियां नै ये ठालड बकरी पकडादे ।  
 लेज्यावो सा ।” मैं बोल्या मैं तो भरपाई  
 एक भंस तो सत्रा वरसां पैल्या से ही खडी चरे है  
 और दूसरा लेज्याकर कुण करै लडाई  
 मैं तो मेरी फीस फास सगळी भरपाई

## बनड़ै को गीत

मेरी धोतनी पुराणी  
मेरी टोपली मरज्याणी  
मेरे व्या की वाता चालै  
पण वा एक आल सै काणी  
बाप वूडियो पड्यो खाट मे खाली थक उछाळै  
मरणे सँ पैल्या पैल्या ही क्यू नहिं काटा बाळै  
मेरी सासू भी कटखाणी  
जाणै बेटी कोन्या व्याणी  
बाबी आकरकै काकै सँ  
कोन्या बतळाई इबताणी  
जोर नही कोई को चाल हूगी होकर रमी  
व्या होवो चाहे मत होवो बा तो रोकर रैसी  
मेरी सूरत भी डराणी  
बाबी जावँ नही बखाणी  
चालो आँ बातों मे मन्न  
कोनी दीनै आणी—जाणी



## चाँद सै चिठ्ठी

एक दफा को बात बताऊ  
चार जणा बैठ्या भट्टै पै बात करै था  
एक जणू बोल्यो 'व सुणी है—  
रस चाद पै ऐया को राकट भेजैगो  
जीम बठ्या मिनख चाँद पै पूच भोम सै बात करैगा  
दखो म्हाटा कैयाँ का जालिम जुलमी है  
ठाला बठ्या क्य नै क्यूँ उतपात करैगा  
वाळा वाळा मिनख चाँद पै पूच अरेरी रात करैगा  
क व कोई मिनखाँ को अपघात करैगा  
(पण) ठाला बैठ्या क्यू नै क्यूँ उतपात करैगा'  
जणाँ दूसरो बोल्यो 'र' के सिर भेजैगा  
दस दिन पैल्याँ ही राकट मे काळो कुत्ती एक बठाक  
बोल्या था प्यानी वेटी चडज्या सूळी पै  
गौर चढी थी जणा चाद काती सिर थो पण  
चढताँ चढताँ वी विचापडी का चाद कानी पग होगा  
जणा खेलणा आका खोगा  
पण ये मोगा, कुत्ती कै सागै सागै ही  
कुत्ती कै घुचरिया नै मभजार डबोगा

आज नही सुणने मे आवै  
 काळी कुत्ती व्याई, राजा न परणाई  
 राजा घाली रोटी, कुत्ती होगी मोटी  
 ब्यू वा कुत्ती काळी काळी छोटी छोटी  
 न तो चाद पै पू ची नै वा आई ओटी”

पडतां ही तीसरो भभक कै यूँ भणकार्यो  
 “मै तो पैल्या ही जाएँ थो  
 इया मौत सै कुचरणी कर रूस-रगिया  
 ये के काकडियो काडैगा ? अर  
 कुणसो ऊपर भजनदास बावो बैठ्यो है  
 जो आने प्यासी जाताई -घुटी घुटाई, छणी छणाई  
 (अर) कुणसी बठे चाद पै विरमपुरी होरी है  
 जो ये जाता ही जीमैगा वम का गोळा, कठ सोसणी ।  
 कुणसा जाता ही मिलज्यासी नावादेळी दिछणा पोळी  
 बैठ्या ब्यू रै ना ये निचला  
 बस आने ही सै सै ज्यादा घरती पै दुख होर्यो है के ?

एक बात और है क ये मोथा है समजै कोनी  
 ब्यू क पून्यू कै दिन ये सज्यासी देख चाद न  
 रावट मे बैठ्या बैठ्या ही  
 सीद बांध कै ये रात्यूँ देगा फटकाग

मगर चाँद पं जाणू कोई  
 नू वाँ हाळी नानी कै तो जाणू कोनी  
 जो आदी घटा मे गाडी ठेठ घालदे  
 घर मजलाँ घर कू चाँ आनै  
 सारी रात लग ज्यावैगी रस्तै मे ही  
 दिन उगे सी पूँचंगा जद बठे चाँद तो छिप ज्यावैगो  
 अर बदलै मे सूरज बावो त्यार मिलंगो  
 जद आका भोगना बठे भरणा ज्यावैगा  
 वा किरणाँ की लपट देख आँका माथा गरणा ज्यावैगा  
 कोई सीदा सोज्यावैगा अर कोई सरणा ज्यावैगा  
 जद ही ये वळता वळता ऐँया सोचंगा  
 देखो कीपेँ चडता चडता गळती सेँ कीपेँ आ चडगा ।  
 ऐँयाँ तो बस रात देख कै  
 चाँद देख कै सूनु कोई ही चडज्यावै  
 पण लाखाँ कोसाँ को चडणू ऐँयाँ हाँसी खेल नही है

चोयो बोत्यो 'कुण के कँसी ? हूँणो है सो होकँ रँमी  
 मन्न तो लागै ये म्हाँटा  
 बस ऐँयाँ ही पडता उठता, उठता पडता  
 कदे भौम पँ पडसी तो ये कदे चाँद पँ भी जा पडमी  
 ऐँया ये आँगळी पकडता कदे जा'र पू चियो पकडमी  
 कदे भौम पँ पडसी तो ये कदे चाँद पँ भी जा पडमी  
 पण एक बात न्याऊ होज्यागो



न वरत नीय ना नरणी मुगायी  
जगाँ नाँद न अरग रग न छाती पे नउरं दर्गगी  
जगाँ नाँद म ये म्हाटा म्गिया दिगंगा  
घात दग'र वे छरं पछाउ गाज्यागी"

मैं जाती ये जाता मुगायो इतरगू तनमें होगो जाणें  
नगा रनपना की मीठी पू चगो नाँद पे  
घोह हा ! या है चाद-जगा मे सागा ई पे आणू चावं  
पैल्या बेरो टातो ता पैत्या ही आता  
मारं चकर काट कूट कं, देग भाळकं च्याह कानी  
में ल्हुक करके एन प्हाड पे जावर बैठयो  
गोजी मे मे तुगत फोटिनपेन राड वं  
फाड डायरी मे से पन्नू  
मैं घरहाळी ने चिट्ठी लिखणें की सोची-  
'विरिय ! मंगे फिर मना वग्ये  
तू आटो आमण्या मोचरी होगी मन मे  
मैं लेकर क साग नही इजनाणी कंया कोनी पूच्यो  
मैं तन्नै कू , मैं बजार मे गयो नही हूँ  
मैं तो आज चाँद प आगो-धूमण खातर  
इव मैं तन्नै ई चिट्ठी मे चाँद देस का  
थोडा भौत हाल लिखरयो हूँ  
से मैं पैल्या तो मैं तन्नै साची कू हूँ  
अठे पू चता ही इव तेरी याद मन तो

भौत जोर से आवण लागी

पण वारं वा, चाद चाद है नही कल्पना है या कोरी

और अगर नाराज नही होवें तो लिखदू

गौरा गौरा मिनख लुगाया तेरे से भी ज्यादा गौरी

हई का सा घोळा-घोळा छोरा छोरी

(पण) अठे नही चाल है चोरी-सीना जोरी

में सोचूं हूँ जणा अठे तो मेरी पार पडैगी दोरी

मिनख अठे का ढिल्लम पिल्लम किच-किच फुस फुस

कोया वें धाया सरीर का मोटा तगडा

होवें ही कोनी कोई मे रगडा-भगडा

जगा इया की मेरो मन दोरो ही लागै

क्यू क न तो कचेडी है न याणू

लोग लुगाई से मोथा है जाणै ही कोनी कोई-

कोई नै कैया वंकारू 'र डराणू धमकाणू-उकसाणू

और पवाही भूठी द्याणू

विना चोट के अस्पताळ मे नित जाऊं पट्टी वें उवाणू

जाणै ही कोनी कोई

नी तो जाणै ये खुद खाणू

और नही जाणै औरा नै किया खुवाणू

मिनख अठे को मदरासी बावें को जैया फिर उभाणू ।

पण एक बात है एया के देम मे भूँठ,

चोरी, फरेव, तिकडमबाजी- को स्कोप भोत है

अठे कठे डालडा, कठे चीणी बलेक की ।  
 कठे गोल्ड कट्टोच, कठे स्मगलिंग घडिया की ॥  
 वं वेटी का बाप भर्या वीरा अफीम का  
 और परैसी जाकर ढाळघा  
 सौ-पचास रिपिया चौकी हाळने बाळघा ॥  
 और हजार आप सम्हाळघा, कठे अठे वं ।  
 मन अठे पूच्या दो घटा सँ भी थोडी ज्यादा होगी  
 पण इवताणी नही समझ मे आई मेरै  
 मैं आने कैया के चकमूँ देकँ आऊ ।  
 एक बात मे और बताऊ  
 जे तेरै धक्के चढज्या तो नटवरियँ नँ अठे भेजदे  
 पीछँ तो म्हे दोन्यू मिलकँ  
 ल्हुक छिप लबी पाइप लाइन एक विछाकँ  
 चाद देस को सारो इमरत-  
 नरक कु ड मे कर सप्लाई  
 बठे ब्लैक से बेच एक का तीस करागा  
 मोको लाग्या खडघा च्यारसौ बीस करागा ।  
 इमरत की ही बात करागा इमरत का ही ढोल भरागा  
 जिसा कराँगा-बिसा भरागा ।  
 हा तो नटवरियँ नँ जल्दी सँ जल्दी भिजवाये देखा

ले सबजी के खातर जो यैलो ल्यायो थो  
 बँमे या चिट्टो घालू हू

सीद बाद कै वो पाछो नीचै पटकू हू  
 बोच लिये छातपै खडी हो ।”  
 यू लिखकै में थैलो नीचै फीकण चाल्यो  
 तो मेरा पग बठे तिसळगा  
 अर दडाच खातो मे भी घरती पै आयो  
 इतण मे ही आख खुली तो में के देख्यो  
 (क) में धूसै मे लिपटचोडो ही माचै कै नीचै पडगो थो  
 चाद देस कै सुख को सुपनू  
 तकियै की जैया ही माचै पै छुटगो थो  
 बा कैरी थी—थे भी कोई टावर हो के  
 जो सूत्या सूत्या ही नीचै का ऊपर—  
 अर ऊपर का नीचै हो ज्यावो ।  
 जावो जी बस जावो जावो ।



## ढळी राताँ, बीती बाताँ

दो चीजा बिख्यात थी राकिट अर राडार  
आज तीसरी चीज है कामराज नाडार  
कामराज नाडार एक बम इमो बणायो  
बारा मन्धा नै कुसिया कँ नीचँ ल्यायो  
कानी कानी सँ एया इस्तीफा आवँ  
ज्यूँ पडकर हामता उठ'र गाबा भडकावँ

गांधीजी चावँ या मिलज्या रामराज ही  
सन्त विनोवा ले भाग्या पण रामराज ही  
चोखा चोखा राज इया जद वँटता देरया  
तो नेरुजो ले भाग्या बस कामराज ही

मन्त्रीजी बोल्या पिन्जा नै 'सूगर खाणी बढ करो सब  
क्यू ? पैल्या सूगर मीठी थी, पण इब सूगर खारी होगी  
सूगर खाकँ गोरमिट की थे मतना तकलीफ बढावँ  
थे जाणो हो ? गोरमिट कँ सूगर की बेमारी होगी

काई चा मे घोळ,र पीगो, भर भर कर प्याला'र रकावी  
 देवर घेवर मे खागो तो गूँद सूँठ मे खागी भावी  
 चीणी को केदोस ? रेट तो बीकीबढणी ही वाजिव थी  
 ज्यू ज्यू रेट बढी त्यू त्यू ध्योपारी बीने कसकै दावी

देख पुलिस को मारजेंट जे दवज्या मीणू  
 तो समजो घरमे वठी मीणो भी दवगी  
 जणा बोडर पै भारत से चीणा दवगा  
 तो भारत मे पडी पडी चीणी भी दवगी

कृष्णामाचारी उतर्यो देसाई आयो  
 देसाई उतर्यो आयो कृष्णामाचारी  
 टावरिया ही नही मिनिस्टरिया भी देखो  
 खेल खेलर्या 'ऊतर भेसा मेरी वारी'

चीण आपकै मनमे झूठ्याणी वणार्यो है आज बहादुर  
 पण बाकै एक भी नही है मिनखा मे सिरताज बहादुर  
 बाकै सिंगल मे भी घाटो, पण में भारत में साच्याणी  
 डबल डबल हा लिया बहादुर, लाल बहादुर, राजबहादुर

ठडै दिल में सैं भी इबतो तेजी निकळी  
 राजाजी कैं भेजैं में सैं भेजी निकळी  
 भेजैं सैं तो तमिळनाड को नकसो निकळयो  
 भेजी में सैं पाणचकैं अंगरेजी निकळी

डब्बे मे तो टावरिया खातर गोळी विसकुट ल्यायो हूँ  
 थाने आमे कोई स्मगलिंग की घडिया सी दीखै है के ?  
 ना-ना घडी-वडी ईमें कोनी है  
 ,कुछ भी हो खोलके दिसावो  
 कैता कैता जाएं वं खुद रस्सी तोडी डब्बा खोल्या  
 डब्बे मे डब्बो, डब्बे मे घडिया निकळी  
 घडी देखता ही वामे से एक जगूँ भरके किरोद मे  
 "भूठ बोलते हो" यूँ कैतो कैतो जाएं  
 मेरे सिर में ठाकरके डडे की मारी  
 मैं मारी जोर से चिलारी  
 हडबडा'र जद चेत हुयो तो के देखू हूँ (क)  
 सिरहाएँ से हाल हालके सूटकेस ही  
 मेरे सिर पे आ पडगी थी  
 और एक ठेसन पे गाडी रुकी खडी थी  
 गाडी की छक् छक् तो विलकुल नही सुएँ थी  
 पण काळजो विया ही करयो वक् धक् धक् धक् २

सूटकेस न में ओज्यूँ से लगा स्थिराएँ  
 म्हारे हाळी एन सीट पे एक जगूँ सूत्यो सूत्यो  
 अगवार वाचरयो, वीने पूछयो-  
 क्यूँ भाईजी कुणसी ठेसन आई है या ?  
 मने बडोदो आगो दीसै । वो भट बोल्यो-  
 "इवी बडोदो कठे ? बडोदो आगै में दो घडी पडी है

यूँ कहतो कहतो वो मेरे कानी देरयो  
 'दो घडी पडी है ? के कहरयो है ? धक धक धक धक  
 इ नालायक ने वेरो है मेरे कन्ने दो घडिया है  
 तर, "भौत देर ठैरी ना गाडी  
 "यातो यू ही ठेरै कोई चेकिंग वेकिंग होरी होसी  
 "चेकिंग वेकिंग—? क्या की चेकिंग  
 म्हे तो देखो टिकट कटाकरकै बैठ्या हा ।  
 "नही चेकिंग तो यू है, आजकलै कुछ लोग अठीने  
 स्मगलिंग को घघो जोरा से कर राख्यो है  
 ताज्जुब तो यो है क आज ई घघं कै मा  
 कई जणा तो पढ्या लिरया, बिलकुल ही अपटूडेट बण्योडा  
 आज देस कै सागै कितणी कितणी गहारी करर्या है ।"  
 ये ही है जो आज देस की अर्थ व्यवस्था ने विगाडकै  
 लपट-वेईमान-स्वारथी बण्या  
 आपकी ही तिजूरिया ने भरर्या है  
 आज देस कै सागै कितणी कितणी गहारी करर्या है ।"  
 वो ज्यूँ ज्यूँ भामण भाडै, मेरे वैया ही छुटै पसीना  
 आपा भी की मूरख से भिडगा इतकाळै  
 में छोरी छोरा कै खातर दो घडियाँ लेकर आयो हूँ  
 मने आमै किसी तिजूरी भरणी है इव  
 पण नालायक, वाता वाता मे कितणी गाळी काडी है  
 पण काडो सा—आपा तो बोला ही बोनी  
 वो भापण जारी ही राख्यो—



पण स्मगलिंग करवा हाळा को ही खाली  
 सासन और प्रसासन भी दोन्यू इतणा ढी  
 इवी इवी में या ही खबर वाचर्यो थो छ  
 क, एक जण पा दस हजार की घडिया प  
 जे मुरारजी देसाई की जगा आज में मन्त्र  
 तो कहतो 'स्मगलर कै पैल्या गोळी काडो  
 ऐयां जे दस वीम जणा नै गोळी सँ उडा  
 तो चोरी को यो धधो बिलकुल रुक ज्यात

यूँ सुणता ही मन्नै लागी, जाणै तेरै गोठ  
 यो तो सुद्ध देस भगती मे—

सराबोर होयोडो ये भापण भाडै थो  
 पण मन्नै लागै थो जाणै वो मेरै गोळी र  
 सो में ऐया सोचण लाग्यो, इबकाळै सँ  
 सूटकेस कै मा में वो डन्वो निकाळकै  
 दोयूँ घडी समेत चालती गाडी कै बारै  
 के ईने ही कहद्या भाया मेरै कन्ने दो घा  
 टारिया खातर त्यायो हूँ  
 नही नही ई देस भगत नतो रहणू वाजवी  
 अगर् हाथ कै भी वाधा तो  
 एन घडी तो पैल्या सँ ही एन हाथ कै र  
 टूजी नै दूमरै हाथ कै भी वाधा तो  
 एन और वच ज्यासी दीने कठे बाधम्यां ।



मैं इब तक हुरामान चाळीसो पुरो च्यार वार पढगो थो  
हे वजरग वळी । ये मेरी सूटकेस न  
ऊपर ऊपर से टिटोळ के ही चल ज्यावै  
ईने भीतर से न खुलावै ।  
ओज्यू सोची-आने पूछा  
क्यूँजी थे चा पीवोगा क नास्तो करोगा ?  
या सीदो ही दस को पत्तो वरा हाथ में  
परा ई से तो आऊँ और वैम हो ज्यागो  
आपा तो कँता ही भट भट  
ऐया खोलागा जाणँ ई के माई क्यू भी कोनी है'  
फक् फक् फक् फक् २ धक् धक् धक् धक् २

इतरणे में ही वै आकरके  
स्हारै दडखीच्या सूत्योडँ देस भगत नै ही भरुभोर्यो  
“कयो भाई साहव ये वँग आपका है क्या ?  
‘हाजी हाजी’ करतो वो उठतो उठतो वँग नै दबायो  
खडयो हो’र बोल्यो—साहव कुछ इधर आइये  
यो ही कुछ धाते करनी है—इपर आइये  
‘मुभसे बातें फिर करलेना, पहले अपना वँग दिवावो  
ऐया कहतो कहतो वो खुद सीच वँग नै  
भटकँ से खोल्यो तो वीमे पाच—च्यारसो घडियाँ दीसी  
सूटनेस खुलवायो वीमें  
दस शराम की बोलत, पँन तीनमी निकल्यो

सूटकेस की पॉकेट में सोने का विमकुट निकळ्या सोळा  
 विस्तर भडकायो तो बीमे  
 सब प्रिलायती कपडा निकळ्या वोळा वोळा  
 जाकेट में थी सोने की छड पाकेट में थी रुपै की लड  
 तकिय में था दो ट्राजिस्टर पाच केमरा, साठ लाइटर ।  
 वारै मनै देस भक्ति करतव पढारिणिया  
 वार स्मगर्लिंग करणै पै गोळी कढारिणिया ।  
 और बडोदो दूर-कई ठेमन पैल्या ही  
 एक जगा गाडी रुकता ही  
 सब सामान वटोर सिपाही  
 देस भगत ने पकड-नारक लेगा नीचै  
 अर मैं जो इव तारणी थर थर काप रह्यो थो  
 सोचण लाग्यो-“अरे यार तेरै कन्नै इतणी घडिया थी  
 तो तू ही दो-च्यार घडी मेरै विस्तर में दवका ज्यातो  
 तो तेरै के घाटो आतो  
 मैं तो कम से कम दूणू राजी हो ज्यातो ।”

## लिछमीजी से अरदास

हे निछमी चाची इतणी सी किरपा करिये  
अन-घन से भण्डार भवो लोगा का भगिये  
सुणो है क तेरी सुरसत से पट्ट कोनी  
पण मेरे खातर वीसे राजीपो करिये  
(१९६१)

हलोहलो? विसणू पुर? कुण? हा लिछमी चाची  
में सुरसत को बेटो बोलू है हाडी स  
चाची, मन्ने तरं विना आवडे कोनी  
आ'र भतीजे नें सम्हाळ पंली गाडी स  
और एकली फिरणो को इव बखत नहीं है  
सो तू आतो रिद सिद ने भी सामे ल्याये  
सुरसत मा पूछे ना 'घोराणी सिद चाली ?  
तो तू वीने वात आपणी मना बताये  
(१९६२)

जितणी जितणी लिछमी की महिमा में गाई  
उतणी उतणी बढी देस के मा मँगई  
धी चावळ, चीणी की तो के वात बताऊ  
गोवा की बोरो भी सो रिपिया मे आई

लिच्छमी चाची

धरा दिना सं मैं भी तो अरदास करू हूँ  
 तरं दरसण खातर तो मैं खडचो खडचो 'क्यू' मे थकगो हू  
 और पगा म वाई टा चालै लागा है  
 मन्न दरसण देणो को लवर कद आसी ?  
 सुणी है क देवी'र देवता सीदा दरसण कोनी देवै  
 व कोई जग क प्राणी मे ही पिरगट होक फळ देवै  
 तो ऐया की जुगत बठादे क  
 रिजन्न वैक क बडे गोरनर न मैं भी चाय पं वुलावूँ  
 वृस्णामाचारीजी से मैं जाकर सीदो हाथ मिलावूँ  
 पोछै तो वस मैं अर चाची ।  
 सुपने को सारी वाता होज्यावै साची

हां चाची एक वात सुणी है क  
 एक 'लोट की पीठ भूल से छपणी रंगी  
 ऐया की ही एक भूल जे और हो सक तो करवादे  
 मैं मेरा दो दस्ता कागज वा भेजू हूँ  
 वापर भी ऐया गळती से सौ सौ का सौ नोट छपादे  
 और तही तो एक प्रात क गुड-सककर को कोटो छादे  
 कोई परमट ही पटवादे ।  
 बुद्ध तो हाथ दिखा भूठ्याणी चाची बणारी ।

इक्कै लागै है ई घर सँ  
 रुस्योडी लिछमी चाची पाछी आगी है  
 यूँ तो रोज दिवाळी नै दीवा चासा पण  
 मेरै घर मे जोत दिवाळी की सी इक्कै ही जागी है  
 ई घर मे लिछमी चाची पाछी आगी है

वा भइ चाची, फूट्यैडै टंका का तवरा  
 फूट्यै हियै 'अयूब', भाग फूट्यै 'भुट्टो' नै मँमळा करकै  
 करमठोक 'चाऊ-माऊ' क' भेजै मे बस भेडाँ भरकै  
 'टरकी' नै टरका 'इरान' नै आँख दिखाकै  
 सठ 'मुकण' नै मोख सिखाकै  
 'अमरीका' सँ अड 'ब्रिटेन' नै बार घालतै नै छोडघाई  
 अर तू मेरै घर मे आई  
 तो सारै बंद्या क' आगी मी लागी है  
 मेरै घर मे जोत दिवाळी की सी इक्कै ही जागी है

चाची तू तो जाणै ही है  
 हज्जारा ही बरस बीतगा, रावण को पूतळो बाळता  
 'स्याति स्याति' क' नाम सदा जुद्ध नै टाळता  
 बरसा पीछै ही इक्कै जुग क' रावण की भूँछ मरोडी  
 टागी देकै चित्त पटक पासळिया तोडी  
 माई मा हृदा देदेक' मिटा हेक्डी  
 डुक्का ही डुक्का म वीकी खाल उधेडी, हाडी फोडी  
 पाछै भो चाची तू कसर राखदी थोडी

खर इतना म ही रांवणिये की  
 रांवण के हीमायतियाँ की सा करडूँठ निकळ भागी है  
 मेरे घर में, जोत दिवाळी की सी इक्के ही जागी है

चाची इक्के तू आई तो है ही ई घर मे  
 लग्ये हाथ ही अनघन भी भरदे पळ भर मे  
 सान से भरदे सदूख  
 मैं भी इक्के एक खरीदूँगा वदूख  
 मन्ने भी रांवण को मूँ काळो करणू है  
 मन्ने भी अन घन से मेरो घर भरणू है ।

(१६६५)

‘नर’ ने कोई नी चावे है सै ‘नारी’ ने चावे है  
 नही ‘दीवाळो’ चावे कोई सै ‘दीवाळी’ चावे है  
 मिटे देस को सो दीवाळो म्हे भी या ही चावाहा  
 म्हारै सागे सागे ही म्हे थारी खर मनावा हाँ

पण—

लिछमी चाची का मन चगा  
 नदा ने ले डूब्या दगा

दिल्ली मे आदोलन होर्या  
 दुस्ट देस की लिछमी खोर्या



बड़े मर्ज से खूँटी ताप्या  
 कामराज कमरे मे सोर्या  
 भागे ही, जद उडे पतगा  
 नदा ने ले हूव्या दगा

टिकतो छाया ने मरवाके  
 सता पे गोळो चलवाके  
 पण वो इव कैयां टिवज्यावै  
 कामराज को घर बळवाके  
 भूठो ही भीरु है रण ?  
 नदा ने ले हूव्या दगा

है चुनाव की ओज्यू त्यारी  
 उठो पाटिया न्यारी-न्यारी  
 पण वीसा वरसा सं देखा  
 राज सुरयारी, प्रजा दुग्यारी  
 स्वारथ साधे कई लफगा  
 नदा न ले हूव्या दगा

से लिछमी ने ल्याणू चावै  
 से कुरसी अपणाणू चावै  
 'घोसी-पत्र' लिखै नी कोई  
 सवी घोसणा-पत्र वेंचावै  
 बिना बात ही नया अडगा  
 नदा ने ले हूव्या दगा

जगा जगा पै काल पड्या है  
 मनी माइक पकड सड्या है  
 वडी मुसकिला से विच्यापडा  
 कामराज का पग पकड्या है  
 पण पिरजाजन भूखा नगा  
 नदा नै ले हूव्या दगा

चीनी हो या पाकिस्तानी  
 नागालैंड करै मन मानी  
 देख राज की दुममुल नीती  
 करै उपद्रव कानी कानी  
 ढग हुया सारा वेढगा  
 नदा नै ले हूव्या दगा

देखो किसी क विगडी भेजी  
 हिन्दी से अकडै अंगरेजी  
 वा निरमळ सीतळ सुभाव पै  
 प्रिगटावै है खुद की तेजी  
 'टम्म' पुजावै, पूजै 'गगा'  
 नदा नै ले हूव्या दगा ।

(१९६६)

# लिछमी चाची आज रात सुपने मे आई

भाई लोगो

आज रात मन्ने सुपने मे साक्षात लिछमी जी दीखी  
दिव दिगाट करतो मूँ अर वै च्यार हाथ  
वो मुकुट अनोखो, और गळ मे कठो चोखो  
एक बार मेरी भी आस्या खागी घोखो  
एक हाथ मे कोइ रसीद की सी किताब थी  
और दूसरे में थी चसती एक लालटण  
खडघो डावर्योडो सो जद में कानी देख्यो  
जणा हासती ही बा बोली-

क्यूँ मने पिछ्णयो कोनी के तूँ ?

बोली सुणता ही मैं बोल्यो- 'लिछमी चाची ?

हा हा वेटा सागी ही हूँ

मैं आरी थी जणा जिठाणी जी बोल्या था

बिस्सू से भी मिलके आये

तो तूँ ऐ या सुस्त सुस्त केया होर्यो है, राजी है ना ?

'हाँ हाँ वैया तो बिलकुल राजी हूँ चाची

सुस्ती तो यूँ है क आजकल

एक चाय के प्याले से चुस्ती आज्यावँ

पण 'ब्लैक' की खरीघोडी चीणी जदवी चा' मे पडज्यावँ

जद सारी चुस्ती ओज्यूँ सुस्ती होज्यावै ।

चाचा मुळकी बोली—मैं तो पैल्या ही जाणै थी

तेरँ चाणी की ही तुम्मत होरी होगी

मातर ही मैं चीणी की 'परमित बुक' सागँ ल्याई हूँ

लेल तन कित्तणै कीलो को परमित चाये'

कहती वा 'परमित बुक' खोलणाने लागी

मै भट टोकयो

"नही नही चाची ये के परमित ल्याई है मरवा देगी

काई धारणै थूणै मे तूँ पकडा देगी

यो भी कोई देवलोक है ?

मिनख-लोक मे तेरँ दसकत का परमित कैया सिकरैगा

भ्रठ देवतावा का नी—

परमित पै खाली चोरां का दसकत चालै है

भूठा, लपट, दगाबाज, मक्कार चोर सँ मौज मनावै

नक घोर साहकारा का काळजिया घक् घक् हालै है

भ्रठे देवतावा का नी,

परमित पै खाली चोरा का दसकत चालै है ।

चाची बोली में जाणूँ हूँ मेरँ सँ भी छानी है के ?

मेने तो ज्यादा भ्रासै ही वाम पडँ है ।

पारो के है ? ये तो बेटा

भाज्यावूँ तो ठीक, नही भ्राय तो कोई बात नही है

पुरो मना मानिये, बता पण

## बिना बात की बात

“देख म्हारलो भिडियो इक्के जीत्यो ही है  
गाव गाव मे गळी गळी की मोड मोड पे कुवा खुदाके  
वो घर घर मे सेत सड्या करवा देवंगे ।”

“देस्यो रे तेरे भिडिये ने  
म्हाने तो जीतणियां सारा भिडिया ही भिडिया लागे है  
कुवा खुदाके कुणसी जे जंकार करंगे  
कई जणा की जिदगानी को वेडो वैया पार करंगे  
कुवा ही खुदवावंगे ना ?  
पाच भात दम बीस लाख खा ज्यावंगे ना ?”

“तन्ने तो म्हारली पाल्टी हाळा सगळा चोर दिखे है  
मगर बात साची तो या है क  
चोर और वेईमाना ने सगळी दुनिया चोर दिखे है  
तेरी पाल्टी हाळा मे कुण सो चोखो है  
खुशीराम खोखो है, धन्नामल देतो आयो धोखो है ।”

“देख अगर यूँ व्यक्तिगत नावा पे आवे  
तो में थारा दस हजार से उपर नाव गिणा देवू गा

थारें तो सब चोर लफगा, वेइमान ही वेइमान है  
 खाली सभी आपको ही घर भरणूँ जाणें  
 न तो त्याग करणूँ जाणें  
 नी आजादी कै खातर कोई मरणूँ जाणें”

“हम्म रै थारें ही लोगाँ कै कारण टिकरी है इवतारणी आजादी  
 किया क्रियाँ का सत्यानामी धरती पं है  
 जान यो भी वेरो नी है आजादी कद आई अर ईने कुण ल्यायो”

“तेरो बाप ल्यायो आजादी अर कुण ल्यायो  
 जाण वीने या रस्ते मे वंठी मिलगी  
 लाखा लाखाँ लोगा का वलिदान हुया है  
 आजादी का मालिक बणर्या है ये घोव”

“देख अगर जे गाळ भेळ पैं आयो ना तू  
 ठोक नही रैवंगी मैं पैल्या से कंधूँ  
 इयकै क्यू भो वोल्यो ना तो तेरी जीव कटा देवूँगा  
 तेरी आख फुडा देवूँगा तेरी टाग तुडा देवूँगा ।”

“हम्मै पैल्याँ का भी तेरा  
 सौ पचास तो कतल कर्योडा टंगर्या है ना ?  
 सरम नही आवै साळै नै ।”

“ओज्यूँ वैं ही गाळ, देख तन्नै ओज्यूँ कू  
 क्यू तू तेरी मौत बुलावै

इबकें दिल्ली से भिडिये न आवणदे तू  
बीच बजारा तेरी टाट नही कुटवाई  
तो बस समजो मेरी मा अजवाण न खाई ।”

“ले भिडियो तो के बेरो रुदमी आवंगो  
तन्ने तो में पैल्या ही सो मजो चखाद्य ।”

कहतो कहतो—एक ताणके भांपट मारी  
पैल्या तो भापट पडताही  
भिडिये को साथी मारी जोर से चिलारी  
पण वो भी हिम्मत नी हारी  
एक कौल मे मार्यो डुक्को,  
इतरणे मे ही पड्यो एक गुद्धी मे मुक्को  
दोन्यू होगा गुत्थम गुत्थी  
पटकी मार पछाडयो नीच, पडयो पडयो वो जरडी भीचे  
पाच-च्यार रस्ते चलना जद आकरके छुटवाया  
अर बाने लडण को कारण पूछयो, तो वे बोल्या  
“नही नही रे-म्हे साच्याणी थोडो लडर्या हाँ  
म्हे तो दोन्यू सागे सागे चाचो और भतीजो ही हा  
म्हे भी इबके राजनीत मे आण खातर  
भैतर के चुनाव मे खड्या होणन दोन्यू  
भासण देणे की लडणे की पैल्या से प्राटिस करर्या हाँ  
साच्याणी थोडी लडर्या हा ।

## बिल्ली और कागलो

एक विरह्य पै एक कागलो  
जोरा सँ चाच मे पण्ड के रोटी को टुकडो खार्यो थो  
और विरह्य के नीचे बिल्ली बँठी बँठी  
ललचाई निजरा से ऊपर ने देखै थी ।  
“कौवा ताऊ, थारो गाणू सुण्यां भौत ही दिन होगा है  
ये भी कितणू सुन्दर गावो, सुर मे गावो”  
चतुर कागलो बिल्ली की ये वाता सुणके  
काड चाँच सँ रोटी पज्ये मे दुबकाई  
पाछे बोल्यो-रं मरज्याणी ।  
घणा घणा भोदू बणाचुकी तूँ म्हाने इतरणा दिन ताणी  
इव में भो तेरो हूँ ताऊ, में कोनी वाता मे आवूँ  
में ईसप की सब कहाणिया बाँच वूँच के  
रोटी खावणने बैठ्यो हूँ



## पाती बबई सै-

विरिये ।

मेरो फिकर मना करिये

बंया में बिलकुल राजी हूँ ।

पण के राजी हूँ, हाँ समझो बस राजी सो हूँ

बिना तेलकँ मिरच मसाला की छूँबयोडो

फीकी फीकी वेमुवादमी भाजी सो हूँ

जागूँ जद सँ सोबूँ जदतक फिर वो करू सरणबट होयो

ज्यूँ कुम्हार को चाकूँ फिरै, तेली की घाणी

ना गेटो खाणूँ सूजे, ना पीणूँ पाणी

दिनगे पैत्यां उठ लाइन सँ नित्त करम सँ निबरत होबूँ

लाइन में न्हाऊ, लाइन सँ गावा धोबूँ

खाणूँ पीणूँ बस में चढणूँ सब लाइन सँ

ये वाता पढकँ तू भी राजी होवंगी क

में लाइन पँ हो चात्रूँ हूँ, वेलाइन कोनी होयो हूँ

रहो वात खाणूँ पीणूँ की, में जाणूँ दू के साऊँ हूँ

जणूँ जणूँ को माथो सातो और खुवातो

भूठी साची भोगन सातो, बस में चढकँ धक्का सातो

आफिम में पूँचूँ जी पैत्यां टाँट डपट का लाइ-भुजिया

मने मालिन लोग खुवावे ।

घणा ओलमां खाता खाता मेरो घणू पेट भर ज्यावं ।  
 बहो मुमकिला सँ मे ये मव खातो खातो और पचातो  
 जद गही पँ पाछो आँऊ  
 तो कमरं को कूणू कूणू मनं साणनं पाछो आवं  
 और रसोई तो यूँ लागं जाणं बा बटका भरती हो  
 सोगन खाकं तन्नं साची वात लिखूँ हूँ क  
 मन तो ये चौकं मे-चूल्है कं आगं  
 घमघूला सा मस्टडा सा उकडू वंठ्या  
 महाराज फूटी आरया भी नही सुहावं  
 फलको बेलं जरां चूडियां की खनखन की जगाँ-  
 भटडभट चकळो बाजं  
 कठे एकतूँ ? में जाणूँ हूँ फूल्योडं फलकं नै खीगपं सँ ठातां  
 फलकं मे में भाप निकळकं एक आगळी कं भिडज्याती  
 तो बीकं सागं ही यूँ सो सी की सी मिसकारी आती  
 अर ये वळना खीग ही नी  
 वळती लकडी नै हाथा सँ चूल्है मे आगं सरकादे  
 तोड्यो, बेल्यो, पटक्यो, सेक्यो और चोपड्यो  
 खट खट फट फट करता-करता  
 पाच मिट मे ये पद्रा आदमी जिमादे  
 अगर बीच मे दाळ-साग कोई मागं तो चमचो ठाता ऐंयां लागं  
 जाणं कोई चमचै, की सिर मे मारंगा ।  
 बाहाया सँ रोटी खाणं को धरम है ? पण जोर के करां ?

## नई बीमारियाँ

भाई लोगो !

ई जुग मे भी कितणी कितणी नई-नई  
अर घणी भयकर सी बीमारियाँ चाल पडी है  
जाँ बीमारियाँ वो इत तानी  
डाक्टराँ न भी वेरो कोनी पट्यो है !  
वा मे से कुट्ट का इलाज है, अर कुट्ट का इलाज ही कोनी  
नई किसम की ये बीमारियाँ में जाणूँ हैं  
त्यो थाने दो-चार गिणाऊँ—

एक भयकर रोग नयो निम्नळ्यो 'लवोरिया'  
ई के रोगी मे गाडी मे बस मे चाहे जठे सडक पे  
सुद-सावळ चालता-चालतां चाणचके ही लव होज्यावे  
और देखता ही कोई नै यो लवोरिया ले भाज्यावे  
पैल्या पल्या ई को रोगी सजधज रोज सिनेमा जावे  
तिरछी निजरा से देगे, हासें मुस्कावे  
रोग बढ़्या पाछे यो खुद ही बिलकुल धुधू सो हो ज्यावे  
और दूसरे को बोल्योडो भी ईनें दर नही सुहावे  
दम दस दिन से न्हावे डाडी बाळ बढ़ावे  
कमरे मे चुपचाप बठके लवलेटर लिखणे के सातर  
नया-नया मजमून बणावे, लिख लिख फाडे,

फाड़ फाड़कै ओज्यूँ लिख लिख ओज्यूँ फाड़ें !  
 ओज्यूँ लिखै और वाँच तिरपत हो ज्यावै  
 'इवनिंग इन पेरिस' सै मुलिफाफो चिपकाकै  
 तपत-जून की मज दोपारी मे खुद पोस्ट करणै जावै  
 ई कँ रोगी ने रोजीना अखबारा मे आता-जाता  
 क्रीम लिपस्टिक नई नई कीमती साडियाँ और चोलियाँ-  
 का विज्ञापन बिलकुल ही पढणा नी चाये  
 अर ये रोगी कोई चूडिया की दुकान कँ  
 स्हारै सँ होकर कँ भी बढणा नी चाये !  
 मा बापा को आको व्या' करणै को आस्वासन ही खाली  
 कुछ दिन तक रिलीफ दे सकै !

एक रोग कुछ बरमाँ पत्याँ ही चाल्यो है  
 जोको नाम मुण्यो होमी थे—“कुर्सीसिया”  
 क्या तो यो रोग घणो 'कोमन' कोनी है  
 पण सारै का मारा नेता  
 कुर्सीसिया' रोग सँ ही पीडित पावैगा  
 ई कँ रोगी ने तो खाणूँ पीणूँ सोणूँ हँसणूँ रोणूँ  
 क्यु भी चोखो नहि लागै है !  
 रात'र दिन बस कुर्मी की ही एक भरमना ल्यागी रै है  
 ई रोगी कँ आगँ चाहे वैच घानद्यो  
 टेबिल रखद्यो, माचो धरद्यो  
 पण, ना ना, ई ने नद तो खाली कुर्सी मिलै

प्रो- त- नियो जलमटो पुन पावं, रुद्र आण्द अण्व  
ई रं रागी न याळी में गाणूँ—

अर माचं प सोणूँ नही गुहावे

गारं तिन उं रं दिमाग में कुर्मी, कुर्मी, कुर्मी, कुर्मी  
जाने मिली नही रं रोगी—

कुर्मी गातर घणा तापडा पीटै अणगिण जाळ विद्याव ।

अर जाने मिलरी वं रोगी—

कुर्मी प उठया बँट्या ही मरणूँ चावं

ई वं रोगी न मच्चवाई नेर नियत ईमान धरम

वत्तव्य-परायणता मेवा अर देमभविन मे

दिलकुन त्रिलकुन वचणूँ चाये

दन तोळा तिवडम वा बीज,

भूठ के मत मे घोट पीम के

ग्यारा मामा भासण-भसम मिला ऊपर से

आठ वद भूठा प्रास्यासन की निचोड के

छै तोळा दम मासा मक्कारी की पिम्टी मिला हाथ स-

ठीव च्यारमौ बीस गोळिया बाध

एक खादी के वपडे मे लपेटके

हाथ जोड के बीस बार 'गाधी गाधी' जी करणूँ चाये

ई से वां गोळिया मे कुछ पावर आवैगो

पांच पांच मिट के फासले दो-दो गोळी

श्रीसर के दूध के साथ मे खातो रैणै से रोगी ने

जीवन-भर आराम मिलैगो ।

एक भयकर और रोग है  
 परण वो खानी वडै वडै स्टैरा मे ही है  
 गावा म यो रोग इवी फँल्यो भी कोनी  
 अर स्यायद फँनै भी कोनी  
 वड वड स्टैरा मे ही ई को उठाव है  
 नाम रोग को है 'रेसीटिस'  
 ई के रोगी नै रात'र दिन  
 घोडा घोडी ही आख्या के आगँ रेस लगाता दीखै  
 लास लाख रोगी वाडै मे भेळा होके  
 घोडा घोडी पै ही लडत नडाता दीखै  
 आँ रोग्या नै चाये खुद के-  
 सागी मा-बापा ताणी का नाम भला ही याद मना हो  
 परण घोडा घोडी की दादी-दादा, नानी-नाना  
 पडनानी, सडनानी, लक्कड नानी तक की  
 सागी पीठी उयल सकै है ।

'फेयर हैवन की बाप 'रोक आफ जिब्राल्टर है ।  
 अर बीभी माँ 'टोका'  
 इनमार्क के शपू के वेट की वेटी की वेटी है  
 यो रोगी साथी सगळियाँ तक का नाम भूल ज्यावै है  
 परण हाइड्रोप्लेन, अमरफी, ममाजमिक,  
 बक्पामर, मल्टीजैम, कदे ही कोनी भूल  
 आ रोग्या की दीतवार से शुक्रवार तक

जनरन कड़ीगा' ओज्यू भी ठीक रव्हे है  
 पण थावर आता ही आपे गज्जी को प्रतोप होज्यावे  
 वी दिन तो आने घरवाळी भी विलकुल पोडी मी लागे  
 छम छम उरती चाय प्यावती,  
 लागे जागे फस्ट प्रावती ।

छोटा छोटा टावरिया सं अळळ बदेरा लागे भागे  
 वी दिन तो आने घरहाळी भी विलकुल पोडी सी लागे  
 आ रोग्यां ने सत्र से पैल्या-  
 पांच-सात गद्दा-गद्दी वपराणां चाये  
 अर कुछ दिन वामे ही मन वहलाणा चाये  
 अर ये रोगी कोई निकासी या दुहाव मे  
 विलकुल ही जाणा नी चाये, ई मे रोग 'रिलैप्स' हो सके ।

पाछे भी आ सब रोगा का  
 पक्का पक्का नही सूज्या है उपाय, क्यू ?  
 लागी नाही छूटे रामा चाहे जिया जाय ।

## रामायण मे म्हाभारत

कागरेस के घाट पे, भइ भयन की भीर  
इद्राजी चदन घिसे, तिलक करे गिरिवीर  
निजलिगप्पा से करे, श्री रेड्डी अरदास  
में आया हरिभजन को, कयो दी मुक्के कपास  
राष्ट्रपती ना बन सका छूटा ससद-काम  
दुविधा मे दोन्यो गया, माया मिली न राम

निजलिगप्पा तेहि पुचकारा  
तू नहि हारी मैं ही हारा  
अब तुम वीरज धारहु भाई  
सँमरथ को नहि दोस गुँसाई  
अनुमासन तोरेहु जिन लोगा  
ताहि के वे अब भोगहुँ भोगा  
तेहिअवसर पाटिल तहँ आवा  
बळतो मे पूळा सरकावा--

दादा मोहे फकरूदीन खिजायो  
भौ सौँ कहत जाहु रेड्डी सँग कयो नहि वाहि जितायो  
दादा मोहे फकरू भौत खिजायो



निजलिगप्पा जी करो इनका काम तमाम  
दो-यूँ हाथ उलीचिये यही सयानो काम

यूँ कहि पाटिल अति भरकावा  
इधर इन्दिरा गुट हरखावा  
सत-साधुओ की ले टोली  
निर्भयता से ऐसे बोली—

मेरे तो जगजीवनराम दूसरा न कोई  
जाके सँग फकरुद्दीन रक्षक है सोई  
अजु न लख राजी हुई, पाटिल लख रोई  
कम्यूनिस्ट लिये सग लोक-लाज खोई  
अब तो बात फैल गई जानत सब कोई  
मेरे तो जगजीवनराम

जग जीवन कहे वाकहु तो फा  
अब, दास तू मानहुँ मोशो  
मात, मान मन मे मत सना  
जारहुँ सिडीनेटी लना  
तोरी विपदा जाय सही ना  
बयू भइ, फरह ठीर कही ना

फरफ ने निज नाम मुनि भुजा दियो तव माय  
में जैमो भी हूँ प्रभो, सदा तिहारै साथ

क्यूँ—

मैं निरगुनिया गुन नहीं जाना  
एक धनी के हाथ विकाना  
मैं निरगुनिया

तेहिअवसर चव्हाणचलि आये  
बोध-बीचाव उपाय बताये  
कुछतुम भुक, कुछउन्हे भुकावहु  
ताहिते सब मकट टलि जावहु

दोनो तजी उछालना आपम मे यह बीच  
मैं भी क्या बच पाऊंगा दो पाटन के बीच  
मिलकर करनी अपन को अपनी पार्टि अजेय  
बीती ताहि बिसार दे आगे को सुधि लेय

महा-ममिति प्रस्ताव सुनायो  
इन्द्रा दल मन मे हरखायो  
आगे मत करना कोई रोळा  
अवतक की सब घोळ मथोळा

पास हुयो प्रस्ताव यह हरसित इन्द्रा गुप  
पाटिल पियरे परि गये, निजलिंगप्पा चुप्प  
हुइ देसाई चल दिये, कामराज दिये रोय  
निजलिंगप्पा भूरते, होनी हो सो होय

विजतिगणा गरु पुताग  
कत हाग पुति साजहुं हाग

मेरो मव पुरमारथ सागो  
विपतिबेटावाया चट्टाग विा गरुं भरोमोकातो  
गुा देगाई, मोपर गागेहुं फरेहुं यदा विधाना  
महाममितिमेतज्योसाज में राम मुभम गो भाना  
श्री गुणाडिया जपुर जैह तुम जाहुं सपने घर को  
में अर्जुनकी मीन मात सव चांधहुं निज विस्तरको

गिरी भरोमे बैठते मचरा मुजरा नेय  
जातो भुगतो पालणू ता होही फलदेय

इतिश्री रामायणमे महाभारत पांड मपूणम् '

## होली को रग, मन की तरग

काव्य कला वरणन करू, ले होळी को रग  
प्रथम मनाऊ इन्दिरा, जगजीवन कै सग  
जगजीवन कै सग सग फकरू नै घ्याऊ  
श्री दिनेससिंह अर चव्हाण की अस्तुति गाऊ  
सुवरण औसर देख माखियाँ नै काढी ना  
पच देवताओ ! थारी कीरत बाढी ना ?

राष्ट्रपती की दौड मे जीत चुकी जो रेस  
गद्दी सै पटकयो पकड देसाई का केस  
देसाई का केस, टूक कर कागरेस का  
कई मतरी, उपमत्री पटकया सुदेस का  
नारो नारी बणी सिध दो होगा साथी  
देस सिधणो रूप भागगो डरकै 'हाथी'

तेरो पावर देखकै बदली सारी चान  
भुङ्गगो सुरत सुखाडिया, रुकगो बमोलाल  
रुवगो बमोलाल, सभा तू नई चणार्ई  
कटगा, गुप्ता, लिंगप्पा, पाटिल, देसाई

सोसलिज्म को भण्डो लेकर देती फेरी  
छोड अहमदावाद ववई जाती ठैरी

यू० पी० ने पीकै प्रथम चरण जमाया आय  
आगै पूंच बिहार मे धरया दरोगाराय  
धरया दरोगाराय, भूल कै बहाणा बाणा  
चेप काळजै के रारया जम्मू-हरियाणा  
तू विरोवियाँ सै निधडक हो लडती आई  
पण भगता की भीड सदा तू पडती आई

ग्यारा वरसा तक कर्यो थोडो भौन रिलैक्स  
एक भगत थो भूगो देणूँ इन-कम-टैक्स  
देणूँ इन-कम-टैक्स वात जद चौड आई  
हे इन्द्रा वाई, तू ही तो आडी आई  
'काम काज मे भूलया, के के ध्यान धरै ये  
जग को पेट भरै क टैक्स का फाम भरै ये ।'

निजलिगप्पा अर अतुल, देसाई मिर ताज  
कान्हो जी पाटिल सहित, कामराज म्हाराज  
कामराज म्हाराज, नाम प्रभु को जपरया है  
पचभूत होकर भी पचाग्नी तपर्या है  
दल बदजू सब जीव रदै आव अर जावै  
तारकेश्वरी सिनहा माया सी भरमावै

बाईं तेरें कारणों होळी उडी गुलाल,  
 लाल लाल रँग मे रँग्यो इब आखो बगाल  
 इब आखो बगाल रग की हाडी फूटी  
 काळा मूडा हुया और पिचकारी छूटी  
 गुडा है जमराज क निरदोसी नें फासी  
 बाईं, तू हांसरी समझ कें इब भी हांसी

लूटमार हत्या घणी आगजनी हडताळ  
 बंद और घेराव है वाह रे वाह बगाल  
 वाह रे वाह बगाल, गैस का गोळा छूटै  
 लाठी भाला बरछी चालै अर बम फूटै  
 रुवि भी आया है ओ सब आया डर-डरकै  
 इश्योरेंस का एक्सीडेंटल फार्म भरकै

हवन हुयो बगाल जद धवन दिखाया हाथ  
 राष्ट्रपती सासन कर्यो इक भटकै कें साथ  
 इक भटकै कें साथ नया ही रँग खिलर्या है  
 साग-पात की ज्यू घर घर मे बम मिलर्या है  
 इब तो लागी दीखै है कुछ घाला मेली  
 गुडा बरा कीडियां खायगा गुड की भेली

## मैं भी जा'र चाँद पै आयो—

मैं सोचै थो, जे ई आमस्ट्राग कै सागै  
बठे चाँद पै जाणै खातर  
कैयाँ जैयाँ मेरो भी चानस आ ज्यावै  
तो बस समभो घणूँ घणूँ आणद आज्याव  
सात पीढियाँ तक को दुख-दाळिद धुप ज्याव  
इया सोच कै एप्लीकेशन एक ठोकदी  
बस एप्लीकेशन जाणै की ही देरी थी  
ऐयाँ की पसनलिटी अमरीका मे भी बाने कठे मिलै थी ?  
एप्लीकेशन ग्राट हो'र भट पाछी आई  
अर डिटेल्स सब मागै ल्याई !  
पण सं सै पैल्या तो वाइफ टाग अडाई !  
थाने मेरी सोगन है जे—  
ऐयाँ की बातें मूड मे भी घाली तो  
अगर चाँद पै ही जावै तो जाओ कोई बैरी दुश्मन  
थे क्यूँ जावो ?  
छोटै सं चाँद पै इया कोई पाँच-च्यार थे  
सागै चड्ढू होर्या हो के ?  
थे कहर्या हो जाणै आणै मे सारा नौ दिन लागैगा  
तो रस्तें मे यू अघर लटकता थाने कुणसा होटल मिलसी

नौ दिन ताणी के तो खावँ अर के पीवँ, कैयाँ जीवँ ?

ऐयाँ ही थे घाल उलारो त्यार होयगा

आगँ पीछँ की थे क्यूँ तो मोची होती

अठे लैरने जीवा मे के बाकी रंवे ?”

में समझायो—

देख बावळी बाता नँ तो छोड, चाँद तो भौत बडो है

घरती सो है ।

तीन च्यार नी लाखा लाखा उतर सकँ है, हिम्मत चाये

रस्तँ मे खारणँ पीणँ को सोणँ और सास लेणँ को

भौत जोर को इन्तजाम अमरिका कर्यो है

स सँ बडो बान तो या है (क)

अमरीका कँ सागँ सागँ

में भी तो आपणँ देस को नाम करू गा ।

बठे पूँचता ही सोने का बोरा अर गोजिया भरू गा ।

फिकर मताकर सात पीढिया तक को दाळिद दूर करू गा !

बडी मुसकिला सँ यूँ वाइफ नँ समझाकँ

अमरीका की टिकट कटाकँ

राकेट मे बैठकँ ह्यूस्टन सँ उड भाज्यो

उडता ही वोत्यो—रँ भाईडो धीरँ ल्यो थे

कठे भिडाकँ मरवाद्योगा ।

में तो भाया जोस जोस मे थारँ सागँ आगो

समजो मेरो राम निवळगो ।



इब थे मन्नै पाछा ही धरती पै छोडो  
 धरती माता सै एँयाँ नातो मत तोडो  
 और नही तो मेरै पै ही दया-भाव प्रिगटावो थोडो  
 मन्न तो थे पाछा ही धरती पै छोडो  
 रै थे ई नै पाछो मोडो ।

रै सुणर्या हो क नही थे सँ ही बैरा होगा ?  
 रै मैं मेरी वाइफ को इक्लीतो पति हूँ  
 म्हारै भाया मर्याँ वाद मे बैया कोनी होवै  
 जया थारै होवै ।

चाहे कोई कितणी ही 'जेक्विलीन कॅनेडी' होवो  
 सब सीता-सावत्री होवै  
 म्हारै भाया बैया कोनी होवै जया थारै होवै

हे सतवती सीते देवी ।

तेरै राम नै तीन-तीन रावण हडकँ ऊपर लेज्या है  
 तेरै चौथ कँ बरता मे वळ हो तो तू पाछो बुलवाले  
 म कुछ जस कँ स्वर्ण-मिरग कँ पीछ पीछै  
 तनै एकली छोड ह्यूस्टन भाज्यो आयो  
 मन्नै के बेरो थो ये तीन्यू अन्याई  
 मेरै हडण सातर ही यो जाळ विद्यायो  
 मेरै सातर ही राकेट मारीच बणायो  
 हे सतवती सीते देवी,  
 बहया जया मनै छुटाये, मन बचाये ।

रं ये ई की मोरी खोलो  
 में मेरो चसमूँर घडी नीचै पटकू गा  
 टावरिया की वानर सेन्या नै यू पतो लगावण खातर  
 मेरा कुछ ता चिन्ह मिलैगा ।

बडी देर ताणी तो वै मव सुगता रह्या ध्यान से वाता  
 पाछै वोल्या-ए मैन, कीप साइलैम, चुप रहो  
 अदरवाइज हम तुमको नीचै पटक जायेगा  
 इतणी कल्डी धमकी सुणता ही बस में तो मुरछित होगो  
 और तीन दिन वेहोसी मे पड्यो विताया  
 पूँच चाद के कन्ने सी वै मन जगाया  
 धीरज थ्यावस घणू बँधायो  
 और टेकनीकल वाता मे—  
 मन्ने के करणू है ? वै बँठके बतायो ।  
 में वोल्यो-नहो यार  
 थ इतणू के कमजोर समज रारयो है मन्ने ?  
 पण आपणै राकेट का पुरजा सगळा ठीक काम करर्या है ना  
 कोइ गड बड तो कोनी होई ना ?  
 हाँ तो भाया टेकनीक थारी तो है ही  
 इव तो मेरो भी माथो कुछ काम करै है  
 सो आपा चाद पँ उतरा, जीके पैल्यां  
 मोरी मे से एक वास लटकाके पैल्या  
 देख लेवा क बल्डो है क गिजगिजो है वो

पण आपा वास तो वठे से ल्याया ही कोनी  
कोई भाठो ढीढो ही पटक कै देखल्यो ।

‘टुम अपना यह टेक्नोलोजी अपनी पाकिट मे ही रखो’  
‘जाण दे भाया, अगर गिजगिजो निकळ्यायो ना  
थे तो मरोहिगा, मन्न भी सागै मारोगा ।’

‘वया गिज गिज गिज गिज करता है  
अपना ‘ईगल’ अभी मून पर लंड करेगा’  
अभी चाद पै उतर रह्यो है  
मेरै सागै ग्रामस्ट्राग ही थो इक्काळ  
वैकी नाडी एक मिन्ट मे चाली सिरफ एक सौ छपत  
मेरी अगर नापता गिणता  
कम स कम मिलती तो तीन सौ वारा मिलती  
अर दोन्यु हाथा की गिणता  
तो छै सौ चोवीस पावती

उतर चाद पै पैल्या तो देखियो नजारो  
ग्रामस्ट्राग खोलके खिडकी  
माटी को बोरो भर ल्यायो ।  
मन्न बोल्यो उटरो, उटरो, तुम भी उटरो  
में बोल्यो-रै के उटरो उटरो करर्यो है  
मेरै तो भीतर बैठ्ये कै सगळो सार समझ में आणो  
में तो भाया तन्न साची वात वता धू-  
चादी-सोन कै चक्कर मे नाम लिखायो थो आणें में

## चुनाव—मुक्तक

ग भाडा कर दि दिया ना आखिर तिरिया हठ पै आकै  
पटकी कर ही दी ना बम आप्हाळा नै छिटकाके”  
गेको ही दोस देखर्या कुछ तो दोस बतावो वामे  
गेने वदनामी घाई, फोरेन मे, सगै—सोया मे”

राष्ट्रपती कै ई चुनाव मे कुण के बोल्यो—  
निर्जलिगप्पा बोल्यो—रैड्डी रैड्डी रैड्डी  
गिरि बोल्यो—क्यू गिरी गिरी के प्यागी वेटी  
इद्रा बोली—नही इबी उठरी हूँ डंडी

“क्यूजी सुणने मे आई थी ई चुनाव मे  
पद्रा सोळा खड्या हुया के सबी गुणी है”  
“भई गुणी और निगुणी अगुणी की बात नही है  
सब आपापकी आत्मा की आवाज सुणी है

जिया दादरा ठुमरी टप्पा  
मोहिन जोदडो और हडप्पा  
वेया ही मनै दिखर्या है  
देसाई, पाटिल, लिगप्पा

पण आपा वास तो बठे सँ ल्याया ही कोनी  
कोई भाठो ढीढो ही पटक कै देखल्यो ।

‘तुम अपना यह टेक्नोलोजी अपनी पाकिट मे ही रखो’  
‘जाण दे भाया, अगर गिजगिजो निक्ळ्यायो ना  
थे तो मरोहिगा, मन्न भी सागै मारोगा ।’

‘बया गिज गिज गिज गिज करता है  
अपना ‘ईगल’ अभी मून पर लैड करेगा’  
अभी चाद पँ उतर रह्यो है  
मेरँ सागै आमस्ट्राग ही थो इक्काळै  
वैकी नाडी एक मिन्ट मे चाली सिरफ एक सौ छपन  
मेरी अगर नापता गिणता  
कम स कम मिलती तो तीन सौ बारा मिलती  
अर दोन्यूँ हाथा की गिणता  
तो छै सौ चोबीस पावती

उतर चाद पँ पैल्या तो देखियो नजारो  
आमस्ट्राग खोलकै खिडकी  
माटी को बोरो भर ल्यायो ।  
मन्न बोल्यो उटरो, उटरो, तुम भी उटरो  
मैं बोल्यो-रँ के उटरो उटरो करर्यो है  
मेरँ तो भीतर बैठ्यै कै सगळो सार समझ मे आगी  
मैं तो भाया तन्न साची बात बता चू-  
चादी-सोनँ कै चक्कर मे नाम लिखायो थो आणँ मे

मने के बेरो थो ये ही धूळ काकरा माटी भाठा अठे मिलेगा  
 धूळ खाएन तो दुनिया ही भौत बडी है  
 इव तो भाया पाछा चालो—  
 पाछा चालो !

१४-६-७०



## भाप ग

भाईजी, मैं दस दिन से रोजेना थारा भापण मुणर्यो  
 पिछल नौ दिन ताणी तो ये  
 बिना घडी के एक एक घटा ताणी पूरा ही बोल्या  
 मगर आज थान पूंणी दो घटा लागी, के कारण है ।”  
 “कारण यार अजीब भौत है  
 मैं भापण देणें से पैट्या एरुइयां को गोळी मूँके मा ले लेतो  
 जीने पूरी चूसण मे यूँ साठ मिंट लागती मन्ने  
 जद मूँके मा गोळी बडे खतम होज्याती  
 मैं भी भापण सामट लेतो  
 बी गोळी की जगाँ भूल सं  
 आज मने वाइफ ब्लाउज की बट्टग देदो  
 जीने चूम चूस उखतागो या तो क्यूँ ही पिगळी कोनी  
 बोलो ऐया टाइम को के बेरो पट्टे ।”



## छोरो देखण गयो साथ मे—

मेरो कोई एक दोस्त है  
वो कोई आपकी लाडली छोरी खातर छोरो देखण  
समझदार समझके मने भी सागे लेगो  
वो रस्ते मे मने बतायो छोरो डाकदरी पढर्यो है !  
रूप रंग घर बार सभी बिलकुल चोखा है  
वात चीत भी बैया सब फाइनल होगी  
परण मैं सोचू हूँ क  
थारै सँ 'अप्रूव' कराके फाइनल सम्बन्ध करागा

वात दोस्त की मुणके मै—मेरै दिमाग मे प्रश्न बणाया—  
क समझदार होण के नातै आपा के के प्रश्न करागा  
'के भाई हो ? अर कोई भाणा तो कोनी  
घर मे कोई लूला-लँगडा काणा तो कोनी  
थारी माताजी के इव कोई और नया आणा तो कोनी ?  
डाकदरी मे कित्ती पढाई अब बाकी है ?  
आटो चक्की सँ पिसके आवै ? या घर मे ही चाकी है ?  
पूज्य पिताजी के करर्या है ?  
थारै घर मे इवके कुण चुनाव लडर्या है ?

धारी माताजी को कैया को सुभाव है ?  
स्यात प्रकृति है याकि ताव है ?

पढलिखकर नौकरी करोगा ? तो  
अस्पताळ मे जीने सिस्टर बोलोगा—  
बीने सिस्टर ही मानोगा ना ?

म्हारी बाई नै थे घर मे होम मिनिस्टर मानोगा ना ?  
व्या होयां पीछे थे सागे ही राखोगा ना छोरी नै  
या कोई पूंचके विलायत घर मे घानोगा गोरी नै ?  
डाकदरी मे चीराफाडी सीखो है क दवाई देगी ?  
थाने भी आज्यावैगी ना-अस्पताळ मे बैठ्या बैठ्या—  
कुण से रोगो से यूँ फोस किर्या के लेगी ?

ठीक होवतै रोगी नै थाने भी आज्यागोना म्हीनातक उळजाणू  
अर कुछ जाळी विल वणा'र-भूटो साचो ही भत्तो ठाणू ।  
अस्पताळ से ल्यार दवाई वेच सकोगा ना वजार मे ?  
डवल डोज कोरामिन की दे दोगा ना उत्तरी बुखार मे ?  
कोरो निमक वताद्योगा ना हाइव्लड प्रैसर के मरीज नै ?  
सरवत ही सरवत प्याद्योगा ना रोगी नै डाइविटीज मे ?  
वस ये ही सै प्रश्न पूछ के आपा फाइनल करद्यागा ।

गाडी सँ उतर्या सीधा ही न्हा घोकै कुछ खा पी करके  
छोरो देखण चाल पड्या म्हें  
एक होस्टल के कमरे मे छोरो एक किताब पढर्यो थो-  
आदो सूत्यो-आदो वैठ्यो



उठकर खड्यो हुयो अर बोत्यो-‘आवो आवो बैठो बैठो !’

म्हाने वठे बैठणे की पुरसत थोडी थी ?

में तो खड्यो खड्यो ही बोल्यो—

‘बैठण ने थोडी आया हा, बैठण ने तो ओज्यूँ आस्या’

म्हे थाने देखण आया हा

म्हाने तो म्हे पूछाँ मो-सो बात बताओ’

छोरो आप फाड के कुछ गुस्से से मेरे कानी देख्यो

वीको गुस्से देख्यो तो मेरो दिमाग भी चक्कर खागो

पूछ यो तो चावै थो-थे कितणा भाई हो

अर मूँडे मे से यूँ निकळी—

थारै घर मे थारै कितणा पूज्य पिताजी है इबताणी ?

छोरो मन मे सोचण लाग्यो—

आछ्यो बजर लठ आयो है देखण खातर

में भट बोल्यो-माफी चावूँ—

मूँडे मे से अकचुक सी बात निकळगी—

‘क्यूँजी आजकल तो मिनवाँ का भी—

दिल-दिमाग का अपरेशन होवण लाग है

थे भी ये अपरेशन करणा सीख्या है के ?

थाने भी भीतर से कोईका दिल-दिमाग कुछ दीभ्या है के ?

मुणो है क कोई अफ्रीका को एक डाक्टर

एक काळजो काट दूमरे के चेष्यायो

म्हाटो भौत सितम को ही यो काम कर्यो सा

मनने तो ये वाता वाहियात भी लागी  
 दोन्हीं कानी का काळजिया काह्योडा जद फद फद कूद  
 तो कुणसी कुणमी नाडी नै कैया कैया क्यासे डाटै ?

'क्यूजी दाता को तो सैनी ही वेडो खराब है  
 ये सरीर मे सै सै पीछै तो आवै अर पैल्या जावै  
 आको विलकुल गाडी हाळो सो हिसाब है ।'

दोस्त बीच मे ही टोक्यो आको तो मायो  
 में भट रोवयो—हा हा इब तो काम करै है ।  
 ठैर बीच मे मतना वोलै

मनने सारी बात पूछ लेवण दे पैल्यां  
 'क्यूजी थे ये जो किताब पढर्या हो  
 आमे इबकाळ अदला-बदली होगी दीखै है बोळी  
 इब तो कुछ सस्ती होगी ना कई दवाया हाळी गोळी  
 भाव दवाया का आमें तो वै ही होगा भौत पुराणा

'क्यूजी 'सारिडोन' हाळा को केस सलटगो दीखै  
 ले—देकै मामलो किहया भी पटगो दीखै ।  
 गोळ्या पै कागद तो देखो म्हाटो किसो चिलकतो आवै  
 पण म्हाटा गोळी भीतर नै त्रियां च्हुँचावै ।  
 सभी दवाया बण इ डिया मे ही है या  
 सै अमरीका सै ही आवै ?'

एक बात बस और बताओ  
 वैयां तो यो पेट सभी न ही दिन घालें  
 पीछे भी मन्ने तो ज्यादा ही म्यार है  
 सज्या रोटी खाता ही मेर ई पै आफरो हुयावें  
 अर ढकार पै ढनार आवें  
 कई वार तो सूत्योऊ टावरिया भी बँट्या हो ज्यावें ।  
 कोइ जळ जीरै का इ जेक्शन चाल्या है के थारी निगाह मे  
 टिगास्टक या लवण भास्वर का  
 कोई कं पसूल आया है के थारी निगाह मे  
 कोई नमूने का ही आयोडा हो तो थे मन्ने देखो  
 'क्यूँ जी गोडा कं दरद मे दवा के लेणी चाये  
 म्हारै तो घर से उठ्यो ही कोनी जावें ।"  
 ऐया मेरे इतरण इतरण  
 प्रश्ना कं उत्तर में छोरो उठकं बोल्यो—  
 'थे मन्ने देखण आया हो  
 थे तो मन्न देख्यो है या नी देख्यो है बेरो कोनी  
 पण में थाने देख चुक्यो हूँ  
 मेरै भी एक ऐया की ही गैली विधवा भूवाजी है  
 मे सोचू हूँ मैं बीन थामे परणावूँ  
 पाच मिट थे रतो अठे ही  
 मैं रिपियो-नाळेरे लेर पाछो आर्यो हूँ ।"

## अभिनदन-याहियाँ खाँ नै

हे याहिया जी ।

दुनिया मे अब्बल दर्जे का हे वेहयाजी ।

लाख लाख वेईमानाँ का वेईमान मक्कार र पाजी

ताज्जुब थारी तीरदाजी

थे जुवान चौबीस बरस के पाक बतन नै

बठा दियो पाणी के पीदे बस खाली चौदा दिन मे ही ।

कोई बात नही अजी बतन तो इयाँ ही डूबता-तिरता रँ है

पण याहिया जी

एक छीक के भटकै से ही ले डूब्या पनडुब्बी गाजी

और दूसरे ही भटकै मे, गळती से खुद के दाता मे

थारी ही आगळी दवा बैठी इन्द्राजी

और तीसरे ही भटकै मे कर्यो सरेण्डर

फट फट फट फरमान नियाजी

ताज्जुब थारी तीरदाजी, वाह वाहवाहजी, हे याहिया जी ।

अहो लपक भुन्नु ।

थारी पोलिसी नै कोई जाण सबयो नी

आप राजगद्दी रूपी थारी वेटी नै व्यावण खातर

पैल्या तो देखो चुनाव को फिडको ल्याया

पण जद देखी ओहो, ये तो दो-दो बीद त्यार हो आया  
इवके होसी ? सोच समझकें थे भी माथो खूब लडायो  
एक बीद नै पकड केंद कर थे रावळपिंडी ठाल्याया  
अर वरात ढाका छोडयाया ।

कतली आम खुवाएँ कें बदलें थे कतले-आम मचायो  
भारत कानी आदो पाकिस्तान भगाय।

थे भी स्याणा सोता होकें—

क्यूँ भाठा की दीवारा सै सिर टकरायो  
निधडक होकें मूँड फुडायो ।

हे कुकड़ू कूँ ।

एक रात थे जोर जोर सै बाग मार कें

तडकाऊ कें पैल्या ही थे जगा दिया दुनिया का मुर्गा

और बठी नै कान बोचकें बठा दिया सै

चीन और अमरीकी मुर्गा

चोखो मौको देख लपक कें

थे निक्शन का पग पकड्या

अर तुरत धरम को वाप बणायो

और चीन कें चाऊ माऊ नै ताऊ कहकर बतळायो

वाप और ताऊ मे थे ही मेळ करायो

वै दोन्यू भाई मिलकर कें थारी पोठ थपथपाई

अर दोन्यू बोल्या-‘तू चढज्या वेटा सूळी पै

अत्ला तेरी खैर करंगो ।”

हे धमचक्र धूँ !

चाणचक ही थे भारत पे हमलो बोल्यो—

श्रौर लडाई को पूरो दरवाजो खोल्यो

भारत क कानी थे सँबर च्यार उडाया

बामे खाली तीन तुडाया, एक बचा पाछोही लिआया

बाक नैटा सँ थे जद जद जट भिडाया

कोई भी पाछा नी आया

सगळ का सगळा थे जन्नत मे भिजवाया

बाका तो रणडका बाज्या, अर थारा रणडकी भाज्या

अजि, टैक टाक कितणा ही टूटो, आमें तो आपसूँ गयो के

बँ तो सगळा माग मागक आप पराया ही तुडवाया

घर का तो बस हाड हाड ही फुडवाया

थारी करतूता जल्लादी

घटा सकी है आज वतन की लाखा लाखा की आबादी

आबादी नही घटी, वतन की छँटगी बादी !

हार्या पण एनला नही माटी छितवाई

थारै ताऊ माऊ की भी मूँछ मुँडाई

निक्शन की भी नाक कटाई !

एक वार तो सड्यो करायो नयो वखेडो

चलवा दियो सातवूँ बेडो

पण बेडो ही तो थो बस मँभधार डूवगो

पार नही कर पायो खाडी

जी पैल्या ही फौज आपणी जगा जगा पे गई पछाडी

च्यारू कूँटाँ में शोर भयो, जैसोर गयो जैसोर गयो  
 वँ भाग पड्या वँ नही लड्या, वँ नही लड्या सो नही लड्या  
 पण जाता रोटी तो खाज्याता  
 साग'र फलका त्यार पड्या  
 एँया को जुध तो हुयो नयो  
 जो अपणूँ गढ समज्यो जातो बो विना लडे ही आज ढयो !  
 जँसोर गयो जँसोर गयो !”

रे बळ उठ्यो चिटगाँव गजब की आगी लागी रे  
 प्राण वँचावण फौजा कानी कानी भागी रे  
 “रे खुलना नै तो छोड बाळ तू  
 जाकेँ ढाका नै सँभाळ तू”  
 “रे च्यारू कानी भारत की इब फौज घड्ढकी  
 मेरेँ सँ नहिँ सँभळंगा ये ढाका डूकी !”  
 “नहिँ सँभळँ तो सुण,  
 सब हथियार आपणा वाँकेँ आगँ धरद्यो  
 लगे हाथ मानिकशा नै ही 'ओवलाइज' करद्यो  
 एँया का जद समचार आरया था तो वेडो के करतो  
 पाछो हि फिरगो सरमा मरतो

हे लपडक लू !

भारत हाळा तो विलकुल ही भूठा निवड्या  
 वँ तो कहर्या था ना साँची  
 बाळ दियो है सगळो बदरगाह कराँची

परा आपा तो जाणा ही हा क-वा तो आग  
 लगाई थी आपा-खुद ही आपण हाथ से  
 वा फौजी भायां नै च्यानणूँ दिखाण नै  
 जो अघारै मे भटकै था  
 एक बात और भी तो थी  
 लडर्या था ठडै प्हाडा मे जो-जो फौजी जोरा मरदी  
 मरर्या था विच्यापडा सर्दी  
 अगर आग वा नही लगाता तो बै क्यासे हाथ तपाता ?

अहो उडेरुचुल्लू ।

थारी हिम्मत की जितणी तारीफ करीजा उत्तणी थोडी ।  
 सोवयूँ चलयो गयो पण थे हिम्मत नही छोडी -  
 दो बोतल ठरों पीरुर कै  
 पकड रेडियो को माइक ओज्यूँ बुबकार्या  
 म्हे नहि हार्या म्हे नहि हार्या  
 एक बार तो म्हे भी सोची तो कुण हार्या ? खैर,  
 इव भुट्टो को भौपट खाकै-थे जार्या सोक्यूँ जार्यो है  
 म्हारो सारो वतन लैर थारै आर्यो है  
 बस खाली यूँ रोतो रोतो पूछ रह्यो है क  
 "कैद कर्यो जाँय याँ मार दियो जाय  
 बोल तेरै साथ के सलूक कर्यो जाय ।"



## या के होगी

क्यूँ भाईजी, ये भी कोई बात सुणी के ?

सुणी है क रेडियो बोलगो, और लडाई वद होयगी ।

हे मेरा पिरभूजी देखो, चाणचकै ही यो के होगो ?

वाहरे वाह ओ इन्द्रा वाई, तेरै या के मन मे आई ?

बारा छै म्हीना ताणी भी कोनी खीची गई लडाई

वाहरै वाह ओ इन्द्रा वाई । तेरै या के मन मे आई ?

जगजीवणजी कहर्या था क

इवकै जुद्ध पराई भोमी पर होवंगो

बो तो सा वैया को वैया ही होर्यो थो

दुश्मन दिन पर दिन खुदकै वळ नै खोर्यो थो

बीको माथो भणार्यो थो

हाथ पाव घूजै लागा, चक्कर खारयो थो

आगै होकै खुद माणोकशा ललकार्यो थो

पोछै इन्द्रावाई नै के जोर आर्यो थो ?

मैं तो सोचै थो कम सै कम बारा म्हीना जुद्ध चालसी

याहि सोचकै, जुद्ध सुरू होता ही मैं भी औरा की ज्यू

कुछ अटरम-पटरम चीजा लेकर दाबी थी

टाचै, बेटरी कै गट्टा की बीस पेटिया

में भीतरलै कमरे कै मा रखवादी थी  
 और मोमवत्ती कै छोटै बडै पुडाँ की  
 च्यार ढाग में बिणवादी थी ।

आखँ भारत मे जद ब्लैक आउट होर्यो थो  
 जद भी मेरो घर तो गट्टा कै करैट सँ परकासँ थो  
 दुनियाँ रोरी थी और मैं मन मे हासँ थो  
 'वाहरे वाह ओ घोर अँधेरा, आछूया भाग जगाया मेरा  
 ब्लैक आउट मे ब्लैक मारकेट—  
 ब्लैक मारकेट मे ब्लैक आउट  
 दोन्यू सागे भाई है ओडला-जोडला  
 ब्लैक आउट मे अगर चाद भी दिखज्यातो तो  
 वो बियोगणी नाईका की ज्यूँ तडफातो  
 मैं तो बीनै गाळ काडती, हटज्या पाजी चाद भागज्या  
 तेरी किरणा नै धरती पँ मत्त आवरण दे  
 अधकार न अधकार ही फँलावण दे  
 घोर अँधेरेँ मे घर घर मे तूँ चोराँ नै बडज्यावण दे  
 जदी लोग गट्टा'र मोमवत्ती लेवण भाज्या आवैगा  
 अर "कोनी कोनी भाया ।  
 सुराकँ भी वै दाम चौगणा देज्यावैगा ।

पण देखो के पासो पलट्यो

, लडती भिडती फौजा देखो क्या मे अडगी

बणती-बणती देखो कैया बात विगडगी  
चौदा दिन में ही देखो के पटकी पडगी

ऐंया में विलाप करर्यो थो, तो छोरो आकर के बोल्यो-  
“बापूजी-नास्तो करल्यो” में बोल्यो-बोली तो सीखो  
नास्तो नास्तो करता साळो मर्यानास तो करादियो थो  
इबो नास्तो बाकी है के ?

पिगळ पिगळ के मोमत्रतिया चपडी होगी  
चिपक चिपक नीचे में सगळा गट्टा पाणी छोड चुक्या है  
वेरो भी है थाने के घाटो लाग्यो है ?”

सुणता ही वाचर सो छोरो  
दिनगे को अखबार ल्यार छाती पं पटक्यो  
बापूजी-थे तो थारै गट्टा के घाटं नै रोर्या हो  
और बठीने वारा सो जुवान मरगा खाली भारत का  
चौदा दिन मे !”

में बोल्यो-रै मरगा होसी, बँ तो सा नौकरी करे था ।  
ब तो वारा सी ही के वारा हज्जार भी—  
मरज्याता तो के होज्यातो ?

पण में देखो बैठ्यो बैठ्यो कैया मरगो  
घरका नै तो देख बावळा  
देस-भगत को बच्चो बणर्यो है भूठ्याणी ।

में छोरै नै धमकार्यो थो  
इतरों मेही एक जणू मेरी दुकान के आगे सं होकर के निकळ्यो

मैं बतलायो- क्यू भाया गट्टा चाये के ?  
 में तो बीने प्रेम-भाव से बतलायो थो  
 परा वो तो सुणता ही सीधो सिर ने आयो  
 “कान् पूछगो थो जद क्या मे बळ्या पड्या था”

देखी ना थे, आज भले का भखत नही है  
 जी से मैं तो यू सोचू हूँ-  
 देस छोडके और कठे परदेसा जाल्यू  
 ई दुकान ने वेगो ठाल्यू  
 और जठे भी जा जा देसा मे दिन मे भी अधेरो है  
 बठे जार आ गट्टा की दूकान लगाल्यू ।

३०-४-७२



## कविता को मोल

वो की हर कविता गम की है  
 कीमत मे दो पोसा से भी कम की है  
 बेयाँ पाठका का आसू हर कविता पे पडे  
 और हर कविता पे बाँको ध्यान टिके  
 परा अस्ती अस्ती कवितावाँ का सग्रे  
 खाली डेड-डेड रुपिये मे विके !

१२-६-७१

## समझौतो

सुरों है क नी ?

बटे बटे देसा का राष्ट्रा का भी समझौता होर्या है

वै भी आज छोड आपस की हाथापाई

सदा-सदा खातर स्यातो पूवक रङ्ग की बात चलाई

अर तू है जो ई छोटे सँ घर के माँ भी

बिना बात की बात-बात मे अडती जारी

मूँडो सुजा अकडती जारी

मैं जितरू गम खार्यो उतणी नडती जारी

मेरँ सिर पे चडती जारी ।

ई मे भी अचरज तो यो है (क)

तू औरत होकर के भुट्टो की जैया हेकडी दिखावै

मैं होकर के मरद इ दिरा गाधी की ज्युं हँस हँस टाळूँ

मैं चाबूँ तो तने एक चुटकी मे ही ई धरती सँ सौकोस उछालूँ

पण मैं चाबूँ समझौतो होज्या

तो करो फंसलो, बँठ स्यामने

मैं मानूँ हूँ, माचो तो तू तेरँ पीहर सँ ल्याई थी

पण गिदरै मे रुई तो मैं भरवाई थी  
माचो तेरो, गिदरो म्हारो  
म्हे म्हारो वच पै विछाकै सोज्यावांगा

चाल दूसरै मुद्धै पै इव  
बैर्यां में घरकै खरचै मे हस्तक्षेप करू ही कोनी  
बो तेरो आतरिक मामलो है बिलकुल ही  
पण मैं इतणी तो चावूंगा क  
जद जद भी तू कोई बरत को मिस ले लेकै  
देसी घी को सीरो कर करकै खावंगी  
जणा तेन का गुलगुलिया में भी खावूंगा  
जद जद भी तू च्यार साडिया लेगी—जद जद  
में भी कम से कम बनियान नई ल्याऊ गा ।  
जद जद भी तेरी महेलिया कँ मागै तू  
सरकम याकि सिनमा देखण नै जावंगी  
टावरिया नै नही राखू गा  
में भी मेरो रामलीला देखण जाऊ गा ।”

“देखोजी एक आपत्ती है

घर कँ खरचँ मे तो होड होगी नी चाये  
अगर होड होवँ तो, ई मुद्धै की धारा दो में लिखल्यो—  
पाँन बीडियां मे यू थे भी खरच, फालतू नही करोला  
और नही तो दिनभर मे थे जितणी बीडी पीज्यावोगा  
में उतरणा ही पीज्यावूंगी—कोका कोला ।

रही बात टावरियाँ नै घर मे खिलाण की  
 ई पै मेरी सहेलियाँ स सला मिशविरा करकै कू गी  
 यो मुद्धो सज्या हाळी मीटिंग मे राखो  
 क्यूँ, टावर चाये मेरा ही हो पण दोन्या ही का वाजै है !  
 ऐयाँ यो मामलो जरा 'कप्लीकेटेड' है ।

और दूमरी मीटिंग मे तो सब बातें बलीयर होगी थी  
 कमरो दीकै अर बगमदो मेरै हिस्से मे आगो थो  
 मगर रात नै ही मे वरस्यो बादळ गरज्या,  
 बिजळो कडकी तो वा टरगो  
 कमरे का कीवाड खोलकै ओज्यू सीमोल्लघन करगी !

१५-८-७२



## चौवेजी

कुछ मूरस हेकड  
 अरुड अरुडकै आपहाळाँ सै ही लड्या  
 एक ही भटकै मे भूलगा चौकडी  
 निमाज छोडण जार्या था  
 रोजा और गळै पड्या ।

१६-१२-७१

## वेनजीर

वेनजीर मय सिनला जानी  
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी

वेनजीर सिमला मे इन्द्रा वेनजीर थी आगै  
वेनजीर को वाप लियायो वेनजीर नै सागै  
वेनजीर नेना भेळा होगा था दोयूँ कानी  
वेनजीर हि दुस्तानी, वेनजीर पाकिस्तानी  
वेनजीर खाणें मे होनी वेनजीर ही वाता  
वेनजीर ही दिन कट्याथा वेनजीर ही राताँ

वेनजीर घूमण को कोई भी प्रोग्राम वणाती  
वेनजीर ही भीड भाजकै रस्तें मे घिरज्याती  
वेनजीर ही प्रश्न पूछता वेनजीर ही उत्तर  
वेनजीर की फोटू लेगा, बूडा फोटोग्राफर  
वेनजीर को वाप पान भी वेनजीर ही खाया  
वेनजीर नै पाच सिनेमा वेनजीर दिखवाया

वेनजीर पौशाक पैर कें, वेनजीर थी डोली  
वेनजीर की इमरत नी थी वेनजीर थी बोली



वेनजीर की सोब्या सबनें वेनजीर जद दीखी  
भटभ्राइ एस जीहर फिल्ममे आगै सातर लीखी  
वा भी दियो जुगार, क तू पापा नै कोनी जाएँ  
वेनजीर वाने भी सगळी दुनिया आज बखारै

इयाँ पाँच दिन तक सिमलै की वेनजीर सडका पै  
के बूडा पै, के बाळक, अर के लडकी-लडका पै !  
रग एक ही वेनजीर को आरया पै छारयो थो  
सोब्युँ निजरा वेनजीर ही वेनजीर आरयो थो  
वेनजीर माथै मे बडकै माथो करगी थोथो  
जद सिमलै मे वेनजीर समभौतो ब्यु नी होतो !

२५-८-७२



## विरोध-पत्र

दुश्मन ओज्युँ आपणी सीमावाँ को  
उल्लघन कर्यो है, (बो इन्न भी नी डर्यो है)  
मौटै कागद पर लिरयोडो  
आपणुँ विरोध पत्र नहिँ मान्यो !  
अबकी बार और घणा कलडा दिखो  
एक और 'कलडो' विरोध-पत्र इबकै गतै पै लिखो !

३-६-७१

## चेतावणी

लिछमो चाची, कर मन चाई ।  
लाज छोड लपट पाडीसी, रोपी आज लडाई ।  
भूमभूम डालर कै मद मे घाल्यो चावै घाई ।  
ले तेरै वाहन का पट्टा, अणदक करी चढाई ।  
सब अपणोस भुला, भाया पै छळ सै छुरी चलाई ।  
जोरा-तोरा दिखा सूरडा सूती गाय सताई ।  
लाज गँवाई, कुवदकमाई, खुद की नाक कटाई ।  
गरब नसै मे भूम सकैगा कद ताणी अन्याई ।  
तू भी साथ सदा नी देगी, वानै दे समभाई ।  
इब भी समभादे वानै, जे चावै राड मिटाई ।  
और नही तो जन-मन-बळ ही मेटैगो अकडाई ।

दीपावळी १९७१

## लिछमी चाची--

कई दिना सै देखर्यो हूँ  
त मेरै घर मे आणूँ तो चावै  
पगा भाँक भाँक के छिपलो खावै  
तेरो वाहन मेरै घर को नाम सुणता ही  
चिमकै, उछळै, थोवडो सुजावै  
और पगा पगा आणै मे तने लाज आवै  
चाची तू भी के वाहन पकड़्यो  
जठे तू जाणूँ चाव, बठे नी ले ज्यावै  
आप को ही मन मरजी चलावै  
चाची, सवारी बदल ले  
मने हुकम होवै  
तो तेरो सारो वाडो  
हमा ही हमा सै भरछूँ  
उल्लुवा की 'मोनोपोली' खतम करछूँ ।

५-११-७२

## उल्लुवो, सावधान

एक थो उल्लू,  
उल्लू भी उडकचुल्लू  
आपके कुछ पट्टा ने सागे लेके  
आगे होके हमारे रोपली राड  
थोडा ही दिना मे खागे खुद पछाड ।  
दूमरो उल्लू बोल्यो—  
तू उल्लू नही उल्लू को पट्टो थो  
मे हूँ उल्लू को बाप,  
सब कुछ सलट ल्यू गा अपणे आप”  
आ उल्लुवा ने आज ताणी भी बेरो नी है क  
हमारे की सकती विद्या और बुद्धी है,  
चित्त की सुद्धी है ।  
या ही बुद्धी, सुद्धी उल्लुवा के छळ, कपट, पाप  
और अहकार ने धोनी जारी है  
जी मालकिन पे उल्लू गरब करे है वा मालकिन  
लक्ष्मी यानी इन्दिरा भी गरीब हसाँ की होती जारी है ।  
नादान उल्लुवो ! सावधान !

## जिन्दगी की किताब

जिन्दगी की किताब कोरी है  
च्यारू कानी हराम खोरी है  
मेरा सब रूप-रग बिगड गया  
बावळी क्यां पै मोदी होरी है  
आज मौसम भी कोई खास नही  
बाँह मेरी क्यां मरोरी है  
बापडो के तो ऐश - मौज करे  
व्यावणी तीन-तीन छोरी है  
ल्टोडियो छोरो दो वरम को ही हुयो  
देर चोखी है जो भी होरी है  
माजणा तो इवी कामण ही पड्या  
पूर पैल्या ही क्यां घोरी है  
एक कूणों में बैठ्या ईसरजी  
राज घर को चलारी गोरी है  
भोर होता ही देस मो सोगो  
जागरण गीत है कि लोरी है

## गरीब और गरीबी

छन्नू की चाची से बोली घन्नू की बीबी  
भन्नू के तो घरां आगी खुशानसीबी  
गरीब भन्नू मरगो  
बीकी तो आपसे आप ही मिटगी गरीबी  
छन्नू की चाची बोली—  
ना-ना भए, या बात नही है  
गरीब के मरण से गरीबी नही मरेगी  
वा तो आपके बेटा के सागे व्या करेगी ।

५-२-७२



## एक खिलाडी

ओलंपिक मे एक खिलाडी  
जूत मे मेडिल बांधके सबने दिखायो  
और साफ साफ इयां समझायो—  
म्हे खाली मेडिल ही नही ले ज्यावागा  
जूता भी खावागा ।

५-१०-७२

## अफसरी

एक अफसर ने चाचै की मौत को समचार मिल्यो  
वी को काळजो हाल्यो  
रोतो रोतो वो सममान घाट कानी चाल्यो  
पण पाद्यो आती बग्वत  
एक टैक्सी लियायो  
और टी ए और डी ए को विल  
आपकै चाचै कं वेटै नै दियायो ।  
५-१२-७२



## गरजन-तरजन

रै बादळ ! तेरो गाजणू चोखो लागे  
तेरै डील नै चीरती—  
सूरज की किरणा नै बरजणू चोखो लागे  
पण कान मे सुण, हिये मे गुण  
इतणी विजळी मना चिमका  
तेरै घर को अंधारो मना दिखा ।  
१०-१२-७१

## तडकाऊ की कविता

मैं तडकाऊ की कविता—

लिखणने गयो छात पर

स्यामने सडक पं चुप हूँठ बिजळी को खभो

वीकै कन्ने ही दुरयारो एरु बरुरी को बचियो

रात के मूटै मे उडकै आयोडो छान

तोन्यूँ उदास, निरास, हतास

कर दियो ना साळा

कविता को सत्यानास ।



## बोर-बोर

भौत देर ताणी कृपी-मन्त्रीजी को भासण मुणता मुणता

लोग रोळा करणा मुरु कर्या-“बोर-बोर”

मन्त्रीजी सभी नै तसत्ली देता हुया बोल्या-

इतणै कुवा के रातर एरु साथ कज नी दियो जा सकै

बागी बारी सै प्रार्थना-पत्र देवो

नबर नबर सै सब कुवां नै ‘बोर’ कराद्येगा ।



## मैगाई अर बेईमानी

साच्याणी वढी तो है मैगाई अर बेईमानी  
जद सँ वीकें दूसरी लुगाई आई है  
पैली का ल्होडिया टावरिया  
बाप कें सिर का धोळा वाळ पाडणें को रेट  
रिपियें संकडें में तीन रिपिया संकडा कर दियो  
ई पर भी तुरों यो क माईमा भिरणभिरण  
और एक भँपकी आता ही  
नालायक निवासी कें वाद सीदा सी गिरणें ।

२-६-७१

## हाकी सघ

हाकी को तो म्ह एक अलग सघ बणावागा  
कोई ईमे सामल होवें तो होवें  
नी होवें तो आपकी रादा नै याद करो  
म्हे ही “अनकटैस्टेड” फस्ट आवागा ।

६-१०-७२

## मैं नागपुर तो

मैं नागपुर तो न आ सकूँ गो प्रिये तू मिलिये इटारसी में  
मना टाळिये तू बात मेरी इया ही कोरी हँसी हँसी में

बिया तो तन्नै सदा सँ चोखी ही लागै सलवार और कुडती  
मगर आज तो तू मन्नै मिलिये गुलाबी साडी बनारसी में

तू थोड़ी ज्यादा सिंगरकँ आये बठे मनै कोई यूँ न कहदे  
यो भोदूँडो भी के बात देखी इयाँ की ई ऊत की घसी में

बठे मैं भूखो ही रह न ज्याबूँ बरणा कँ ल्याये पुडी'र सबजी  
मनै न हलवो पुलाव चाये मैं काम काइ गा लापसी में

पद्रा मिनट तक ठहरैगी गाडी इती देर ताणी तो हँसागा  
छुटै जो गाडी तू मन्नै रोये मैं तन्नै रोवूँ गा वापसी में

## परदेसा मै बालम आया

परदेसा सै बालम आया तो  
हरखी हरखी उमंगी उमंगी  
बलमी सौ सिणगार करै ।

भागी भागी वायरूम मे जावै  
पाटै पै बैठकै न्हाणू चावै  
पण नळ मे पाणी नी श्रावै  
मारुजी बैठ्या सुँवार करै ।

साडी बदली मूँडो धोयो  
तावळ करती भान विगोयो  
होठा की लाली आरया में घाली  
काजळ होठा पै भार करै ।

तन की ताप हियै मे लागी—  
भागी भागी मारुजी की सेजा पै आगी  
चाणचकै ही छोरी जागी  
प्यार करै कि दुलार करै ।

## इसाफ

एक जगूँ आत्म हत्या करणै की कोशिश करी  
कितगू थो नादान  
पुलिस वीनै परुड कै कर दियो चालान  
न्यायाधीश (हाकिम)  
सब वाता सुणी, गवाही ली  
फैसलो सुणाती दफा पैल्यां तो आई हांसी  
पीछै आई खांसी  
और आत्महत्या करणै कै अभियोग में  
अभियुक्त नै देदी फासी ।

१५-११-७२



## जाँच

खेला की प्रतिष्ठा पै आ न ज्यावै आंच  
ई खातर ही झूठ या सांच  
करवाणी तो चाये हार कै करणां की जांच ।



## सी आइ ए

आज चाणचक मेरे दैगो गोडे मे भटको सो आयो ।  
के कारण है ?'

वाइफ बोली-और आज ही टावरियो आधी छुट्टी मे  
इस्कूल से घरां भाग्यायो ।

दोन्यू बाता आज चाणचक हुई साथ है  
मन्ने लागे दोन्यू घटनावांके पीछे  
बस C I A को हाथ है ।

१६-११-७२

★

## साहित्यकार

भिर पै साहित्य को लबादो  
गगा तळ कार  
वाह यार  
तन्ने कुण कहर्यो है बेकार  
तू साकार, सकार  
साहित्य+कार ।

८-२-७२

## रै मन्नै लाठी पकडावो

रै मन्नै लाठी पकडावो ।

देख हाथ में लाठी वंदी के बोलेंगो ?  
 के तो मैं खप्पर खोलूँ, के वो खोलेंगो  
 सूने हाथा मना भिडावो  
 रै मन्नै लाठी पकडावो

अगर स्यामलो बोलै नी, तो जाड काडल्यू  
 पाछो हाथ उठावै नी, तो मूछ पाडल्यू  
 रै बीनै बांधकै लियावो  
 अर मन्नै लाठी पकडावो

खून वरसरयो आस्या से कुछ नही सूजरयो  
 डरतै कोनी, ई किरोध से डील घूजरयो  
 यो किरोध कुछ और दिखावो  
 रै मन्नै लाठी पकडावो

## इबकाल तो वो मरगो रे

इब काळै तो वो मरगो रे  
मरतो मरतो भी दस-वारा बिधवा करगो रे ।

घर हाळी मररी सो मररी  
अस्पताळ की नरस सुबकरी  
इ जैवसन कै बिल पै जाळी दसकत करगो रे ।

बैयां तो सागै के लेगो  
सोम्युँ आइ टी ओ नै देगो  
लाखा को बलैस बैक को भी 'निल' करगो रे ।

घरती तो रोवै सो रोवै  
सागर रोवै, अवर रोवै  
हुआ कई गाया नै वो वैतगणी तरगो रे ।

## पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

ओ पियाजी मन्नै थारी याद सतावै ।

वारा घटा मै वेसी अब मन्नै नीद न आवै ।

पियाजो मन्नै थारी याद सतावै

होटल में जिन के गिलास में बो आँणद नही आवै

आमलेट कटलेट प्लेट मे सिगरेट मा सुलगावै

पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

न तो बिरज मे मन लागै ना रम्मी मने लुभावै

सिरफ तीन पत्ती हाळो ही थारो खेल रमावै

पियाजी मन्नै थारी याद सतावै

क्रीम लिपस्टिक फोडर लोसन ज्यादा नही सुहावै

घूमण नै निकळू तो ड्राइवर मुड मुड आस मिलावै

पियाजी मन्नै थारी याद सतावै



## इबतो आज्या परदेसी

इबतो आज्या परदेसी पावणा

घर मे थारै विन पियाजी, च्यारू कानी सून  
 कुण गिरवावै वाजरो जी, कुण पिसवावै चून—  
 पड्यो चाकी पै पीपो—  
 इबतो आज्या परदेसी

जिवा जूँण से जी पिया मेरो आकर पिंड छुटाय  
 दिन में खावै जूँ मनै कोई रात्यूँ खटमल खाय  
 खाट कुँण देवै तावडै—  
 इबतो आज्या परदेसी

एक नपूतो पड गयो जी कोई, आज पियाजी गैल  
 पण वो पाछो ही मुड्यो जी देख डील पै मैल  
 बाँस से नाक चढाई  
 इब तो आज्या परदेसी

## हितोपदेश

रै नर विग्या जलम गँवायो

पळ पळ छिण छिण उमर बीतरी कदै न पाप कमायो  
कदै न चोरी-डाकै कै मा तन्ने पुलिस सतायो  
हत्या लूट-खसोट गिरहकट तू सोक्यूँ विसरायो  
कदै नही हाजरी देणने तू थाणें मे घायो  
तिक्डम भूँठ फरेव छोड तू सत नै गळें लगायो  
रै घरमो, करमी ! के करबा तू ई जग मे आयो

रै नर तूँ पच-पच मरज्यासी

एक नेक ब्लँक' की न्याव है बाही आडी आसी  
रिस्वत की पतवार बांधले भव-सागर तिरज्यासी  
सगळा अफसर खेवटिया है तन्ने पार फुँचासी  
और नही तो जाण वूभकै तू दुरगती करासी  
बिना धूँस कै कोई साथी-सगी काम न आसी  
सारा घघा छोड धूँस नै तू कद गळें लगासी

झूठ झूठ की लूट है, लूट सके तो लूट  
 और नही तो सांच से करम जायगा फूट  
 करो कमाई टनैरु को ब्लैक बडो बलवान  
 दम को लोट दिसानता जम खुद पकड़ै दान  
 दगावाज, मक्कार अर तू वण तिवडम वाज  
 नी तो जम-दरवार मे किर्या राखमी लाज  
 चोरी मे गुण भीत है—या टाकै की भाण  
 माल परायो भापकै तू सो सूटी ताण



## रोजगारी या रेजगारी

दफ्तर के वारण भीत सारी भीड देखके  
 एक मत्रालय को प्रवक्ता बोल्यो—  
 ये सब अठे ही क्यूँ रोर्या हो ?  
 सब एक ही एक जगा क्यूँ भेळा होर्या हो ?  
 जो रोजगारो चावै वै अठे रह्यै  
 अर जो रेजगारी चावै वै आगलें दफ्तर मे जावै  
 'तो के भीड आदी आदी वेंटगी ?'  
 'नही बठे सै सारी हो भीड छेंटगी !'

## चुनाव—मुक्तक

“फाडा झाडा कर हि दिया ना आखिर तिरिया हठ पै आकै  
ठावा-पटकी कर ही दी ना बस आप्हाळा नै छिटकाकै”  
“थे बीको ही दोस देखर्या कुछ तो दोस बतावो वामे  
जो वीने वदनामी छाई, फोरेन मे, सगै-सोया मे”

राष्ट्रपती कै ई चुनाव मे कुण के बोल्यो—  
निर्जलिगप्पा बोल्यो—रँड्ही रँड्ही रँड्ही  
गिरि बोल्यो—क्यू गिरी गिरी के प्यारी बेटी  
इन्द्रा बोली—नही इवी उठरी हूँ डँडो

“क्यूजी सुणने मे आई थी ई चुनाव मे  
पन्द्रा सोळा खड्या हुया के सबो गुणी है”  
“भई गुणी और निगुणी अगुणी की बात नही है  
सब आपापकी आत्मा की आवाज सुणी है

जिया दादरा ठुमरी टप्पा  
मोहिन जोदडो और हडप्पा  
बैया ही मन्नै दिखर्या है  
देसाई, पाटिल, लिगप्पा

## दो खबरदार कवितावाँ

(१)

ई काळं कानून को जावँ सत्यानास  
मना कर दियो खेलखूँ इब दफतर मे तास  
इब दफतर मे तास टेम कैयां काटंगा  
भूठमूठ हो अफसर अक्सर मिर चाटंगा  
कोई बात नही है म्हे भी रुचि बदलागा  
तास मना है तो इबसँ चौपड खेलागा

(२)

एक रुपयै मे विक रह्या छप्या लिफाफा पाँच  
और अव छप्यै की हुई कीमत रुपिया पाँच  
कीमत रिपिया पाँच, अरै पन्चीस गुणी है  
टेकसाँ से जनता पैल्या ही जळी-भुणी है  
क्यूँ न केन्द्र-सरकार मुनाफो धखूँ कमावँ  
छप्या लिफाफा छोड, अध छप्या क्यूँ न छपावँ

